अंजुरी में उजास

महामारी का दौर, जनजातिय क्षेत्र और शिक्षकों द्वारा किये गए नवाचारों का संकलन : एक प्रयास

VAAGDHARA

शिक्षक आत्मसात करे बालक के व्यक्तित्व की स्वतंत्र अभिव्यक्ति को, आत्मगौरव प्राप्त करे बालक के गौरव की सुरक्षा और उसके विकास में, अपने स्वातंत्र्य की अनुभूति करे उसकी स्वाधीनता अथवा उसके स्वावलम्बन की प्रवृत्ति को सजाने–संवारने में और स्वयं का नियमन करे उसको सहज रुप से स्वयमेव नियमित करने में।

''बालकों के गाँधी''
गिजुभाई बधेका
भारतीय बाल शिक्षाप्रज्ञ

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
01	शिक्षक होने के नाते सामाजिक परिकल्पना का आभास	02
	1.1 सीखने के लिए जरूरी विविध आयाम	03
02	महामारी का दौर और शिक्षक की प्रेरणादायी चिट्ठी बच्चों के नाम	15
03	शिक्षकों के अनुभवों से	17
	3.1 एक–दूसरे के साथ मिलकर सीखने का आनंद	17
	3.2 सीखने का आनंद	21
	3.3 भयमुक्त माहौल में बच्चे	23
	3.4 मुश्किल दौर के खास अहसास के साथ	25
	3.5 बाल अधिकारों का बयाँ कुछ इस तरह	28
	3.6 हमारा विद्यालय परिवार रूपारेल	31
	3.7 सीखने के स्तर को बनाये रखना	33
	3.8 रचनात्मकता के अद्भुतअनुभव	35
	3.9 हमने कठिन समय देखा है	38
	3.10 बच्चों ने अंतर करना सीखा	45
	3.11 हम होंगे कामयाब	48
	3.12 योजना बनाकर कार्य करने के सकारात्मक परिणाम	51
	3.13 कुछ नहीं होने की बजाय थोडा होना अच्छा होता है	54
	3.14 बुनियादी जरूरतें और शैक्षिक स्तर का पोषण	57
	3.15 संख्या ज्ञान भी एक कला है	60
	3.16 अवसर देती चुनौतियाँ	62
	3.17 एकाकीपन को विराम	65
	3.18 सूत्रधार की भूमिका निभाता शिक्षक	68
	3.19 समुदाय का सहयोग	71
	3.20 मेरा विद्यालय मेरा परिवार	73
	3.21 गणित की कक्षा में मेरा सीखना सिखाना	75
	3.22 समुदाय और विद्यालय के प्रगाढ़ सम्बन्ध और बच्चों का सीखना	78
	3.23 महामारी के रूप में कोविड–19 और शिक्षण के अनुभव	80
	3.24 सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को मिली गति	85
04	बच्चों द्वारा दिए गये कथ्य/कथन	88
05	निष्कर्ष एवं अनुशंषायें	91

आमुख

वाग्धारा ''सचिव'' की कलम से ....

वर्ष 2020 मार्च में अचानक ही COVID-19 विकट महामारी के रूप में ऐसा दौर आया कि दुनिया में सभी लोगों की दुनिया अपने घर की चारदीवारी में सिमट कर रह गयी। बच्चों के जीवन पर भी बुरा असर देखने को मिला उनका बचपन घरों में कैद था। लॉकडाउन के चलते जब सभी बच्चे अपने घरों में बंद थे तो बच्चों के सर्वांगीण विकास की बात तो दूर जीवन बचा पाना काफी मुश्किल हो गया था। ऐसी विकट परिस्थितियों में बच्चों के लिए शिक्षा को लेकर अलग–अलग तरह के प्रयासों का बोलबाला चहुओर सुनाई पड़ रहा था। जिसमे ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से बच्चों का सीखना सिखाने की चर्चा जोरशोर से सुनाई दे रही थी और बहुत सारे साझे प्रयास इस ओर किये भी जाने लगे ।

पिछले 2 दशकों से भी अधिक समय से आदिवासी इलाकों के साथ अपना जुडाव और सरोकार रखते हुए संस्था के सदस्यों का हमेशा से ही मानना है कि समाधान के लिए हम केवल अलख जगा सकते है समुदाय की पहल पर अंतिम निर्णय समुदाय को ही लेना होता है, तभी दूरगामी परिणामों के बारे में विचार किया जा सकता है । टीम को पूरा भरोसा था कि बच्चों की बेहतरी के लिए समुदाय के साथ मिलकर जो एक शुरुआत कर पायेंगे वह अवश्य ही बच्चों के जीवन में एक विशेष योगदान देने वाला होगा । संकटकालीन घड़ियों में विकल्प निकालने, बच्चों के लिए समाधान जुटाने के प्रयासों में पूरी टीम और संगठन के सदस्य एकजुट होकर गहन चिंतन, मनन, विचार–विमर्श के द्वारा मंथन करने की प्रक्रिया में जुटे। परिणामस्वरूप निकलकर आया कि बाहरी निर्भरता को छोड़ अपने आसपास उपलब्ध संसाधनों को काम में लेना है। समुदाय से बच्चों के माता–पिता, पढ़े लिखे युवा, सामुदायिक संगठनो के सदस्य जैसे ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के सदस्य, पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समिति के सदस्य व ग्राम पंचायत के सदस्य आगे आये। और बच्चों के लिए एक ऐसा मंच तैयार किया जा सका जो बच्चों के लिए उपयोगी साबित हुआ और यह बच्चों के लिए एक रोचक तरीके से सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बन सका।

यह एक ऐसा विकट दौर था जब सरकारी शिक्षकों के लिए सभी ओर नकरात्मकता को देखा जा रहा था और उसका बोलबाला भी था लेकिन बांसवाडा के आदिवासी क्षेत्र में सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा इस कठिन समय के दौरान किये गए प्रयासों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। महामारी के दौरान इन गंभीर अभूतपूर्व चुनौतियों के बावजूद, यह समर्पित और प्रेरित शिक्षकों का सफल प्रयास था जिसने आशा की किरणें प्रदान कीं। अग्रिम पंक्ति के पेशेवरों के रूप में, जो अपने विद्यालयों में आने वाले बच्चों के सामने आने वाली चुनौतियों को समझने, सहानुभूति रखने और नवीन और सुसंगत दृष्टिकोण तैयार करने के लिए सबसे अच्छी स्थिति में हैं, कई शिक्षकों ने दिखाया कि महामारी में दुर्गम प्रतीत होने वाली समस्याओं को भी रचनात्मकता के साथ संबोधित किया जा सकता है।

शिक्षकों द्वारा किये गए इन रचनात्मक प्रयासों को एक सार–संग्रह के रूप में एकजाही करने का निर्णय लिया गया कि इनके प्रयासों को दुनिया के सामने लाया जा सके ताकि महामारी या किसी भी प्रकार के संकटकालीन दौर में बच्चों का सीखना–सिखाना बाधित ना हो ।

शिक्षकों के समूह के साथ मिलकर वाग्धारा द्वारा तैयार किया प्रस्तुत संकलन "अंजुरी में उजास" यह गवाही देता है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य और लगन के साथ नवाचारी कार्य किये जा सकते हैं ।

धन्यवाद !!

प्रस्तावना

किसी भी देश की शिक्षा की स्थिति के बारे में जानकारी हासिल करते हुए वहाँ के विकास के स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसा माना जा सकता है कि शिक्षा देश और सामाजिक बदलावों की नींव में कार्य करती है। जितनी मजबूत नींव होगी बदलाव भी उतने ही ठोस, मजबूत और सकारात्मक होने की गुंजाईश रहेगी। अगर शिक्षा व्यवस्था के केंद्र से मुख्य घटकों को देखा जाए तो विद्यार्थी और शिक्षक हैं। विद्यार्थी सीखने की प्रबल इच्छा शक्ति के साथ विद्यालय में आता है और शिक्षक इस प्रकार के कार्यों में संलग्न रहते हैं जिससे कि विद्यार्थियों का सीखना तय किया जा सके ताकि बच्चों के निर्णय लेने की क्षमता प्रभावी हो सके और वे अपने जीवन को एक बेहतर दिशा दे सकें। वर्तमान में समाज में सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की छवि को लेकर नकारात्मकता को सहज ही देखा जा सकता है परिणामस्वरूप इन विद्यालयों से भरोसा खत्म होता जा रहा है। देश में सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध हो सके यह जिम्मेदारी सरकार की है और सरकार को अपनी ये जिम्मेदारी बखूबी निभानी चाहिए।

आदिवासी बाहुल्यता और भौगोलिक परिप्रेक्ष्य से इस क्षेत्र में शिक्षक के लिए अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन बड़ी चुनौती है। इस पर महामारी के कारण शिक्षकों का खुद घरों से बाहर आना, समुदाय और बच्चों के साथ व्यस्त करने का भय और जो सीखने सिखाने की प्रक्रियाएं शिक्षकों ने हमेशा से ही कक्षा–कक्ष में की हैं उनको समुदाय में बच्चों तक पहुँचाना बड़ी विडम्बना थी।

परिस्थितियाँ जितनी विषम एक पुरुष शिक्षक के लिए रही थीं उतनी ही शिक्षिकाओं के लिए भी थीं। इस दृष्टि से भी देखा जाए तो इस संकलन में पुरुष और महिला शिक्षकों के अनुपात को बराबरी से देखा जा सकता है। समुदाय के अनुभव भी इस दौरान शिक्षकों द्वारा किये गए सफल नवाचारों से सरकारी विद्यालय के शिक्षकों की कर्म और कर्तव्यनिष्ठा की सकारात्मकता को बयां करते बन सके हैं। परिणामस्वरूप समुदाय की प्रबल इच्छा के चलते इन नवाचारों का दस्तावेज के रूप में संकलन करने के प्रयास का बीड़ा वाग्धारा/संस्था ने उठाना तय किया है।

प्रस्तुत संकलन, अंजुरी में उजास महामारी के दौरान शिक्षकों द्वारा चुनौतियों की पुष्टि करते अनुभवों के रूप में है जो कि तमाम स्थितियों की जटिलताओं के साथ नवाचारों की परत दर परत शिक्षकों की जिजीविषा का आभास करवाते हैं। शिक्षकों के द्वारा, शिक्षकों के लिए रचित अनुभव आधारित संकलन में शिक्षकों के सायास प्रयास देखे जा सकते हैं, ऐसे प्रयास जिनके माध्यम से जनजातिय क्षेत्र के बच्चे स्वत्व के साथ एक आत्म विश्वासी, सक्रिय समझ बनाने की ओर अग्रसर हो सकेंगे। शिक्षकों और बच्चों की सक्रिय भागीदारी के साथ किये गए प्रयासों के बाद जब ये बच्चे बाहरी दुनिया द्वारा उनके साथ किये गए बर्ताव के साथ मुलाकात करेंगे तो निश्चित ही उस नकारात्मकता को आत्मसात करने की बजाय सुलभ संसाधनों और अवसरों की उपलब्धता के समर्थन के साथ अपनी योग्यताओं को बढ़ाते हुए अपनी पहचान का निर्माण, सामाजिक जीवन के मुद्दों और संघर्षों से परे एक आत्म विश्वास से परिपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में कर सकेंगे।

इस संकलन को एक ऐसे संसाधन के रूप में देखा जा रहा है कि शिक्षा के क्षेत्र से सरोकार रखने वाले संस्थानों या व्यक्तियों साथ ही बाल अधिकारों से सरोकार रखने वाले प्रतिनिधियों और कहीं सुदूर में बैठे शिक्षक साथी के लिए भविष्य में आने वाले किसी भी चुनौतिपूर्ण दौर या बिना किसी चुनौति के भी बच्चों के सीखने के अलग–अलग आयाम से देखकर बच्चों के सीखने–सिखाने को लेकर किये गए प्रयासों को समझ सकते हैं। इन तमाम नवाचारी प्रक्रियाओं को बालकों के शिक्षा के अधिकार और राष्ट्रीय पाठयचर्या की रुपरेखा के साथ भी जोड़कर देखा जा सकता है।

ये कहानियाँ सिर्फ कहानियाँ नहीं हैं इनके साथ तमाम तरह की मुश्किलें और उन मुश्किलों को सुलझाते हुए नए–नए समाधान जुड़े हुए हैं। हम आभारी हैं उन सभी साथियों के प्रति जिन्होंने इस पुस्तिका के लिए कहानियों के संकलन, चयन, लेखन में सहयोग दिया है जिनमें विशेष रूप से शिक्षा विभाग से जुड़ाव रखने वाले पदाधिकारी, शिक्षक, बच्चे, पालक, समुदाय के लोग और संस्था से जुड़े अन्य कार्मिक शामिल हैं। वे सभी शिक्षक जिन्होंने अपनी व्यस्तता में से अमूल्य समय निकालकर संकलन को बेहतर बनाए जाने की इस प्रक्रिया में शामिल होना तय किया, सभी बधाई के पात्र हैं।

01 शिक्षक होने के नाते सामाजिक परिकल्पना का आभास

एक शिक्षक होने के नाते यह जरूरी हो जाता है कि वह सबसे पहले यह तय कर सके कि बच्चों को क्या सिखाना है ,क्यों सिखाना है और जब ये दोनों चीजें स्पष्ट रूप से तय हो जाए तो कैसे सिखाना है इस ओर सुनियोजित तरीकों से आगे बढ़ सके क्योंकि तब यह बच्चों के लिए सीख पाना शायद थोड़ा आसान हो जाता है। बच्चों का पढना–लिखना सीखना तब तक कोई महत्व नहीं रखता जब तक कि उसके पीछे की सोच को नहीं देखा गया है अर्थात ये देखा जाना जरूरी है कि ये सब सीखने का क्या फायदा होने वाला है एक बच्चा यह सब सीखे ही क्यों ? और तब तो यह सोचना और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है जब शिक्षक सीखने–सिखाने की संवेदनशील प्रक्रियाओं के बारे में बिना विचारे, बिना सोचे–समझे पीड़ादायी प्रक्रियाओं के दौर पर बच्चों को धकेल दे। शिक्षक होने के नाते यह समझ विकसित हो सके यह बहुत महत्वपूर्ण है।

बच्चों को सिखाना तय करने से पूर्व शिक्षक के पास कोई सामाजिक लक्ष्य का होना बेहद जरूरी है जैसेकि एक शिक्षक समाज को किस दिशा की तरफ बढ़ते हुए देखना चाहते हैं या कैसा समाज चाहते हैं और फिर जिस तरह के समाज की कल्पना

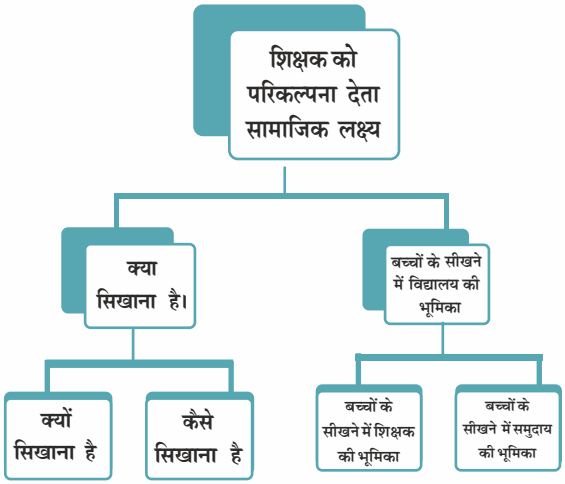

एक शिक्षक के सामने परिलक्षित होती है उसमे विद्यालय की क्या भूमिका है या समाज में एक विद्यालय का स्थान किस प्रकार से अपेक्षित है। शिक्षक होने के नाते जिन बच्चों के साथ वे सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं के साझीदार बनते हैं उन बच्चों की पृष्ठभूमि क्या है, बच्चे कहाँ से आ रहे हैं, वे स्वभावतः कैसे हैं और सीखते कैसे हैं और इन बच्चों के जीवन में रंग भरने के लिए विद्यालय के क्या–क्या दायित्व बनते हैं ? एक साफ सुथरी तस्वीर शिक्षक के मन में होनी जरूरी है जो शिक्षक के अनुभवों के साथ साथ विस्तृत होती चली जाए कि विद्यालय में आने वाले प्रत्येक बच्चे के लिए एक बेहतर जीवन यापन करने के लिए जीवन जीने का तरीका क्या हो सकता है और इसी क्रम में बच्चों की आवश्यकताएं क्या हैं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक शिक्षक के पास ऐसे क्या कार्यक्रम हैं या रचे जा सकते हैं ताकि बच्चों के जीवन को वांछनीय दिशा में विकसित होने के अवसर मिल सकें या सोचे समझे तरीकों से ये अवसर उपलब्ध करवाए जा सकें। बच्चों का सीखना सही मायने में तभी कहा जा सकता है जब सीखा हुआ बच्चों के जीवन का हिस्सा बन सके और संवेदनशीलता को विस्तार मिल सके यानि शिक्षक की सोच, विचार, शब्द और कर्म सबको एक जैसा होना पड़ेगा। बच्चों के लिए सीखने का माहौल बनाए जाने में शामिल है–

एक छोटा बच्चा बहुत थोड़े समय के लिए एकाग्रचित हो पाता है और खेलना बच्चों का काम है जो बच्चों में खुशियों के रूप में प्राण और शक्तियों का संचार करते हैं, जो कि कम समय की एकाग्रता में बच्चों के अनुभव कोष को समृद्ध करने में सहयोग कर सकते हैं। प्रेम के साथ, प्रत्येक बच्चे के स्वभाव को जानकर और समझकर व्यक्तिगत विकास को केन्द्रित कर पाना और भयमुक्त वातावरण ऐसे तरीके हैं जिनके माध्यम से बच्चों को खुलकर बिना किसी दबाव के सृजनात्मकता और कल्पनाशीलता को बढ़ावा मिल सके। बच्चे स्वभाव से ही बेहद जिज्ञासु होते हैं और सवाल करने और चीजों को अपने आप समझने की क्षमता भी इनमे भरपूर होती है जरूरत भर यह होती है कि जिस समय बच्चा विद्यालय में आने लगे शिक्षक उसे इस तरह का मंच या अभिव्यक्ति के मौके उपलब्ध करवा सके जहाँ उसे अपने सवालों को रखने के लिए सोचना और भयभीत ना

होना पड़े, बच्चों को अपने सवालों को पंख लगाने के भरपूर मौके मिल सके, ऐसे मौके जहाँ बच्चा अपना सवाल पूछने या रखने से पहले क्षण भर के लिए भी झिझक महसूस ना करे यानि बच्चे को औपचारिक नहीं वरन एक अनौपचारिक परिवेश उपलब्ध हो सके उन्हें मनचाहा कार्य करने की आजादी/छूट मिलनी जरूरी है ताकि उस माहौल को काम में लेकर बच्चा खुद ब खुद अपने आपको चुनौती दे सके और इस चुनौती से परे चिंतन के साथ उसके अनुभवों को विस्तार मिल सके।

इन सबको साथ लेकर यदि एक शिक्षक बच्चों के साथ योजनाबद्ध तरीके और पूर्ण मनोयोग से जुड़कर कार्य करता है तो परिणामस्वरूप संविधान की अपेक्षानुरूप नागरिक बन सकने में एक पड़ाव की संभावना बन सकती है।

1.1 सीखने के लिए जरूरी विविध आयाम

क) भाषा का विकास –

भाषा पर अधिकार होने से निश्चित रूप से समाज के लिए चिंतन और सामाजिक तौर तरीकों में शामिल होना भी होता है। यदि भाषा का उपयोग हम दूसरों को समझने में और अपनी बात दूसरों को समझाने में करना चाहते हैं तो आवश्यक है कि भाषा का समुदाय द्वारा स्वीकृत रूप अपनाएँ।

अपने अनुभवों को व्यवस्थित करने में भाषा का उपयोग सीमित नहीं है बल्कि भाषा की मदद चिन्तन करना, विचार करना, तर्क करना और निर्णय लेने में भी करते हैं ।ऐसा नहीं है कि विचार करना, निर्णय लेना आदि सब केवल मात्र भाषा से ही संभव हो जाता है, बल्कि ऐसा कह सकते हैं कि ये सब कर पाने के लिए भाषा की समझ एक आवश्यक आयाम के रूप में कार्य करती है। लेकिन भाषा के साथ कुछ अन्य क्षमताएं और दक्षताएं भी लाजिमी तौर पर आवश्यक है जैसे कि–स्मृति और इसका समुचित उपयोग, कल्पना और तर्क प्रमुख हैं। ये सब क्षमताएं किसी भी प्रकार की भाषा विकास की प्रक्रिया में आवश्यक रूप से शामिल होती हैं या ऐसा भी कहा जा सकता है कि इनके बिना भाषा विकास असंभव है।

भाषा का दूसरा उपयोग अन्य लोगों को समझने में है अर्थात अन्य लोगों के विचारों, भावनाओं, अनुभवों, कल्पनाओं आदि को समझना। दूसरों को समझने में हम भाषा के मौखिक और लिखित दोनों ही रूपों को काम में लेते हैं। भाषा के बिना मानवीय ज्ञान के निर्माण को एक स्तर के बाद संभव नहीं बनाया जा सकता। अतः भाषा ज्ञान निर्माण के लिए बहुत जरूरी है।

भाषा का विचार के साथ अटूट रिश्ता होता है। भाषा के बिना विचार या बिना किसी विचार के भाषा नहीं हो सकती। इस प्रकार से भाषा का बच्चे की अस्मिता के साथ गहरा रिश्ता होता है और अपने आस–पास के संसार को अपने आप से जोड़ पाता है। यदि भाषा को सिर्फ अभिव्यक्ति का माध्यम कहा जाता है तो उसके महत्त्व को बहुत कम करके देखा जा रहा होता है।

यह बात ठीक है मगर इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है अभिव्यक्ति के लिए समझ, ज्ञान, विचार, कल्पना, चिन्तन का भाषा पर निर्भर होना और इनका विकास करना भाषा शिक्षण का उद्धेश्य भी हो जाता है।

भाषा प्रत्येक विषय के आधार में होती है – भाषा के उपरोक्त वर्णित सभी उपयोगों को समझ लेने के उपरांत आगे बढे तों भाषा की एक और महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को भी समझा जाना जरूरी है कि भाषा अन्य विषयों को समझने के माध्यम के रूप में भी कार्य करती है। जब तक बच्चे भाषा को ठीक से पढना, लिखना और समझना नहीं सीख लेगा तब तक अन्य विषयों पर कार्य किया जाना संभव नहीं होगा क्योंकि गणित, सामान्य विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण अध्ययन आदि सभी विषय के जो माध्यम होते हैं वो भाषा पर ही निर्भर करते हैं। ये विषय जिस माध्यम में बच्चा पढ़ रहा होता है बच्चे की उस भाषा पर पकड़ बहुत मजबूत होने की जरूरत होती है।

ख) कला से रूबरू होते बच्चे –

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कला के प्रति समाज में जो धारणा है या यों कहें कि बदलती जा रही है वह अपने असली स्वरूप से विपरीत है। युवा वर्ग पर अभद्रता की सीमा ना छूने वाले गाने, अश्लील दृश्य, गाने और उत्तेजित करने वाले विडियो और खुली हिंसा और विद्वेष लगातार हावी होते जा रहे हैं। इससे पहले कि हम दुखद अनुभूतियों तक पहुंचें सभी संभव शक्ति और संसाधनों के साथ देश के विद्यार्थियों को देश की धर्म निरपेक्ष, सांस्कृतिक विविधता और कलात्मक जागरूकता का निर्माण किये जाने की ओर ध्यान केन्द्रित किये जाने की जरूरत है ताकि संविधान के अनुरूप उदार, रचनात्मक चिन्तन और कलात्मक परम्पराओं की समृद्धि और विविधता को बढ़ावा देने वाली सभ्यता जो कि हमारे युवा वर्ग और बच्चों को जीवनपर्यंत समृद्ध कर सकेंगी।

वस्तु स्थिति के अनुसार देखा जाए तो वर्तमान में विद्यालयों में कला शिक्षा पर बल दिए जाने की जरूरत है बच्चों की विशेष रूचि कला के कार्यों में होती है विशेष रूप से बच्चा अपने जीवन के शुरुआती 6 वर्ष सृजनात्मक कार्यों में अधिक रूचि लेता है परन्तु अनेक कारणों के चलते कक्षा 6 तक आते–आते बच्चे की यह रूचि कम हो जाती है। इसे बनाये रखने के लिए शिक्षकों और विद्यालयों को आगेआने की जरूरत है।

कला शिक्षा को आवश्यक रूप से एक उपकरण और विषय के रूप में शिक्षा का हिस्सा बनाये जाने की जरूरत लगती है। भाषा, कला के रूपों की खोज, स्व की गहरी समझ और स्व से परे अन्य लोगों, चीजों आदि को समझना कला के माध्यम से आसानी से हो सकता है। कला का स्वभाव होता है कि सभी बच्चे बिना किसी भेदभाव के उसमें शामिल हो सकते हैं। विद्यालयों में शामिल की जाने वाली गतिविधियों के दौरान जोर इस चीज पर ना हो कि बच्चे वयस्कों की कला को सीखें या बच्चों में पूर्ण कला का विकास हो बल्कि जोर इस बात पर होने की जरूरत है कि कला–शिक्षा के माध्यम से बच्चे को अपने आप विकसित होने के अवसर उपलब्ध हो सकें। कुछ सालों में शिक्षक की सहायता से स्वतंत्र रूप से सभी छात्र के सभी कार्यों में कला का रंग शामिल हो सकेगा बच्चों की संवेदनशीलता और कल्पनाशीलता उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा हो सकेंगे।

ग) रचनात्मकता के साथ विषयाधारित शिक्षण –

रचनात्मक तरीकों को जब सीखने–सिखाने का हिस्सा बना लेते हैं तो सभी विषयों से बच्चों का जुड़ाव सुनिश्चित किया जा सकता है। क्योंकि किसी भी विषय के शिक्षण के द्वारा विषयवार ज्ञान और समझ का निर्माण करना मात्र नहीं होता है बल्कि रचनात्मकता के साथ किस तरह से अवधारणा को स्थापित किया जा सकता है मूलतः यह जरूरी है। उदाहरण के लिए अगर देखें तो ऐसे बच्चे जिन्हें कहानी पढ़ने में रूचि है इन बच्चों की विषयवार समझ का विकास करने के लिए विभिन्न तरह की कहानियों को चुना और उपयोग में लिया जा सकता है।

इसी तरह से पर्यावरण अध्ययन और विज्ञान की अवधारणा की समझ सिर्फ पुस्तक में से पढ़कर नहीं बल्कि तब बेहतर बन सकेगी जब सम्बन्धित अवधारणा को लेकर बच्चा अपनी 5 ज्ञानेन्द्रियों (आँख,नाक,कान,जीभ और त्वचा) की मदद से स्वयं अनुभवों से गुजर रहा है और पहले के बने अनुभवों के साथ जोड़कर नए अनुभव लेने के माहौल से गुजर रहा है। जिसमें चीजों को छूना और छूकर ठंडा, गरम, नरम, खुरदरा आदि का पता लगाना, स्वाद को चखना और चखकर खट्टा, मीठा, कड़वा और नमकीन को अपने अनुभवों में शामिल करना, अलग–अलग तरह की ध्वनियों को सुनना और सुनकर पहचानना और समझ बना पाना जिसमें अलग–अलग पक्षी, जानवर, संगीतध्वाध्य यंत्र आदि कई चीजों को शामिल किया जा सकता है। सिर्फ इतना ही नहीं शिक्षक कई रचनात्मक तरीकों से इन अवधारणाओं पर बच्चों के कार्य योजना बनाकर कार्य कर सकता है।

विज्ञान की अवधारणा के विकास के लिए भी बच्चों को अलग–अलग तरह से प्रयोगों को खुद करके निष्कर्ष निकालने के मौके मिल सकें इसकी जरूरत होती है विद्यालयों में उपलब्ध प्रायोगिक लैब के साथ–साथ बच्चे विद्यालय और कक्षा–कक्ष की चारदीवारी से बाहर प्रकृति के साथ में रहकर विषय की समझ को विकसित करने के मौके मिलने बहुत जरूरी है।

घ) संगीत और लय की तारतम्यता के साथ गणित विषय –

यदि हम गणित विषय के अध्यापन के द्वारा गणित का ज्ञान देना मात्र ही उद्धेश्य समझें तो इस विषय को बहुत ही सीमित दायरे में आँक रहे होंगे। गणित विषय इससे परे एक असीमित दायरे में बच्चों ही नहीं वरन इन्सान की सोच और समझ को विस्तार देने में मददगार साबित होता है।

यह सही है कि विद्यालय स्तर पर हम गणित विषय के शिक्षण के द्वारा बच्चे की गणितीय क्षमताओं का विकास करने को केंद्र में लेकर चलते हैं जैसे कि–संख्या ज्ञान, संख्या–संख्या संक्रिया, माप, दशमलव व प्रतिशत इत्यादि जो कि स्कूली शिक्षण द्वारा तय लक्ष्यों के अनुरूप बिलकुल सही माना जा सकता है लेकिन यह एक सीमित लक्ष्य कहा जाएगा। इस विषय के अध्यापन के उच्च लक्ष्य अर्थात बच्चे के साधनों को विकसित करना ताकि वह गणितीय ढंग से सोच सके, तर्क कर सके, मान्यताओं से तार्किक परिणाम निकाल सके और अमूर्त में चिन्तन करना भी सीख सके। गणित विषय के द्वारा बच्चे को समस्याओं को सूत्रबद्ध करना और उनका हल ढूँढ सके ऐसी क्षमता का विकास करना आता है।

एक महत्वाकांक्षी और सुसंगत पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम को सीमित लक्ष्यों की बजाय ऊपर लिखित उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयास किये जाने चाहिए। सुसंगतता को इस प्रकार से देखे जाने की जरूरत है कि विभिन्न अंशों में उपलब्ध (अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित में) एक ऐसी क्षमता में ढल सकें जो हाई स्कूल में आने वाले विज्ञान और सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र की समस्याओं को संबोधित कर सकें गणित विषय इस अर्थ में महत्वपूर्ण होना जरूरी है कि छात्र/छात्रा ऐसे

सवालों को हल करने की आवश्यकता को महसूस कर सकें और शिक्षक और छात्र दोनों ही ऐसे सवालों को हल करने में अपने समय और ऊर्जा का सहर्ष सदुपयोग करें। गणित विषय शिक्षण के द्वारा इस तरह से बालकों के विकास को देखा जाना जरूरी है कि बच्चे को अपने जीवन से जुडी समस्याओं को हल करने के लिए विश्लेषण करने की कुशलता हासिल हो सके और जीवन में आने वाली किसी भी तरह समस्याओं का बेहतर रूप से सामना कर सकेंगे।

ङ) गणित के दर्शन के अनुरूप गणित विषय शिक्षण के द्वारा –

- बच्चे गणित से भयभीत होने की बजाय उसका आनंद उठाते हैं।
- गणितीय सूत्रों और यांत्रिक प्रक्रियाओं से परे भी बहुत कुछ है।
- बच्चे गणित को ऐसा विषय मानते हैं जिस पर वे बातचीत कर सकते हैं और साथ–साथ मिलकर कार्य कर सकते हैं।
- बच्चे सार्थक प्रश्न करते हैं और उन्हें हल करने करते हैं।
- बच्चे अमूर्त का प्रयोग अपने दैनिक जीवन से जुडी चीजों में जैसे कि सम्बन्धों को समझने, कथनों की सत्यता या असत्यता को जाँचने में तार्किक विश्लेषण और चीजों की सरंचनाओं को देख पाना और विवेचन करना में सीख सकेंगे।

इन सबके आधार में शिक्षक कक्षा में प्रत्येक बच्चे के साथ इस विश्वास के आधार पर और विविध तरीकों से कार्य करता है कि प्रत्येक बच्चा गणित सीख सकता है।

च) बच्चों के आपसी रिश्ते और शिक्षकों के साथ बच्चों के रिश्ते –

सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं में सहज आपसी रिश्तों का होना बेहद जरूरी होता है। जब तक बच्चों का आत्मीय और सहज रिश्ता शिक्षक के साथ नहीं होगा, बच्चे शिक्षक से डरे हुए रहेंगे ऐसे में बच्चे शिक्षक को अपनी बात, स्थिति, समस्या के बारे में पूरी तरह से खुल कर शिक्षक के साथ बात नहीं कर सकेंगे और शिक्षक को समझा नहीं पाएंगे, जब तक पूरी तरह से सम्प्रेषण नहीं हो सकेगा और जब शिक्षक को पूरी तरह से बच्चे की स्थितियों के बारे में पता नहीं चलेगा शिक्षक सीखने में बच्चे की मदद नहीं कर सकेगा। बच्चे के सीखने के लिए शिक्षक द्वारा किये गए सार्थक प्रयास तभी सही मायने में कारगर साबित हो सकेंगे जब बच्चा ठीक से और पूरी तरह से अवधारणात्मक समझ बना पा रहा है। इसलिए यह बेहद जरूरी है कि शिक्षक के अपने प्रत्येक बच्चे के साथ रिश्ते सहज, आत्मीय और दोस्ताना हों। शिक्षक और बच्चे आपस में खुलकर एक दोस्त की तरह बातचीत करें। बच्चा किस समय किस तरह की सामाजिक, पारिवारिक और मानसिक स्थितियों से गुजर रहा है इसके बारे में शिक्षक को पूरी तरह से पता होना जरूरी है और साथ ही यह भी बहुत जरूरी है कि शिक्षक और बच्चे खुलकर बातचीत करें। शिक्षक बच्चे की हर बात को ध्यान से सुने, शिक्षक और बच्चे की बातचीत के दौरान बच्चा अपने आपको उपेक्षित महसूस ना करें।

जिस तरह से शिक्षक और बच्चे के आपसी रिश्ते सहज और दोस्ताना होने की जरूरत है कक्षा में बच्चे–बच्चे के आपसी रिश्ते भी उतने ही महत्वपूर्ण होने जरूरी हैं। किसी भी कक्षा में अगर बच्चों के आपसी रिश्ते सहज नहीं हैं बच्चों के सीखने में इसका विपरीत असर जरूर देखने को मिलेगा। बच्चे खुश नहीं रहेंगे, एकाग्रता के साथ सीखने की प्रक्रियाओं से नहीं जुड़

सकेंगे और अपनी हमउम्र साथियों के साथ मिलकर खेलने, बातें करने, अपने सुख और दुःख का साझीदार बनाने और एक दूसरे के साथ मिलकर सीखने के अवसर बच्चों को नहीं मिल सकेंगे।

सही मायने में बच्चे अपने हमउम्र साथियों के साथ मिलकर जल्दी और बेहतर सीख और समझ पाता है। किसी भी कक्षा में जब जब कोई बच्चा किसी एक अवधारणा में महारत हासिल कर चुका होता है और किसी अन्य बच्चे को इस अवधारणा को सीखने से सम्बन्धित कार्य करने होते हैं तो बच्चे आपस में एक दूसरे को बहुत अच्छे से समझा सकते हैं।

बच्चों के आपसी सम्बन्धों को मजबूत बनाये जाने के लिए शिक्षक की अहम् भूमिका होती है। शिक्षक को सभी बच्चों को समानता वाले भाव से बच्चों के साथ व्यवहार किया जाना जरूरी है। इस तरह का व्यवहार किये जाने से बचें जिससे बच्चों में आपसी भेदभाव, नफरत और प्रतिस्पर्धा वाली भावना का विकास हो। इसके लिए जरूरी है कि शिक्षक बच्चों के साथ आपसी बातचीत (अलग–अलग और सामूहिक) रूप से सतत और लगातार करते रहें। बच्चों की समस्याओं को दबाने, नकारने की बजाय उन्हें सुने और सुनकर समाधान निकालने के प्रयास करें। चूँकि सभी बच्चों की प्रकृति अलग–अलग होती है, बच्चे अलग–अलग माहौल से विद्यालयों में आते हैं सबकी परिवेशीय स्थितियाँ एक जैसी नहीं होती हैं। इन सबका असर बच्चों के सीखने की गति पर पड़ता है जो कि सबकी समान नहीं वरण अलग–अलग होती है अतः शिक्षक को इन सभी चीजों को ध्यान में रखते हुए बच्चों में तुलना करने की बजाय सबको उनकी जरूरत, प्रकृति के अनुसार सीखने–सिखाने की कार्य योजना बनाकर कार्य किये जाने की आवश्यकता है।

अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि शिक्षक और बच्चों के आपसी सम्बन्ध मजबूत होने की आवश्यकता है।

छ) बच्चे अपनी गति से और स्वयं करके सीखते हैं –

अनुभव ही इंसान/बच्चों को सिखाते हैं, उनके जीवन में नई–नई सीख को शामिल कर पाते हैं और अनुभवों के साथ सीखना बच्चे के साथ जीवनपर्यंत रहता है। इस सोच के साथ चला जाये तो विद्यालयों में सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को अनुभव आधारित बनाये जाने की जरूरत है। बच्चे जब सभी कार्यों की प्रक्रियाओं से गुजर रहे होंगे तभी बेहतर तरीके से सीख भी रहे होंगे। एक शिक्षक के रूप में यह सोचे जाने की जरूरत है कि बच्चों के लिए सीखने–सिखाने के माहौल को बनाया जाए और सीखने के लिए जरूरी हर संसाधन को जुटा सकें जो कि प्रक्रिया में शामिल होने के लिए अपेक्षित है।

उप समूह में स्वयं करके सीखते स्वप्रेरित बच्चे

शिक्षक से यह अपेक्षा है कि सीखने–सिखाने की पूरी प्रक्रिया के दौरान बच्चों के सीखने की गति पर भी ध्यान दें क्योंकि अलग–अलग सामाजिक स्तर से आये हुए सभी बच्चे एक तरह की प्रक्रिया के तहत सीख जाए यह जरूरी नहीं है और साथ ही प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति समान नहीं होती है। बच्चों को अवसर की उपलब्धता मिलने के साथ–साथ सीखने की गति की स्वतन्त्रता भी मिल सके भय, दबाव और तनावरहित माहौल इन सबमें आधारशिला के रूप में कार्य करेंगे।

ज) सीखने का माहौल मिलने से सीखने के प्रति बच्चों की रूचि बनती/जागरूक होती है।

मूल रूप से इस बात को समझे जाने की जरूरत है कि बच्चों का सीखना सुनिश्चित करने के लिए बच्चों की रूचि का खास ख्याल रखा जाए अर्थात अगर हम पहले से ही यह समझ लें कि बच्चों को क्या पसंद आता है, क्या नहीं आता, बच्चे की सबसे ज्यादा रूचि किसमें होती है और बच्चे की प्रकृति कैसी है अर्थात अगर बच्चे को संगीत में रूचि है और संगीत सुनकर उसे खुशी मिलती है, अपने आपको हो रही प्रक्रियाओं से जोड़ पाता है तो सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को संगीत के साथ जोड़कर और उस अनुरूप माहौल बच्चों के लिए सुनिश्चित करना शिक्षक का पहला कार्य हो जाता है। उदाहरण के लिए अगर बच्चे को गीत–कवितायँ सुनने में अच्छे लगती हैं तो गणित की किसी अवधारणा को सिखाने में अवधारणा से सम्बन्धित गीत–कविताओं का चुनाव किया जा सकता है और सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं का हिस्सा भी बनाया जाना चाहिए।

शिक्षक जब भी किसी नई अवधारणा की समझ विकसित करने के लिए कार्य करें यह बहुत जरूरी है कि आस–पास का चित्रित, ध्वनि और श्रव्य (Audio/Visual) साधन सम्बन्धित अवधारणा को पुष्ट करने वाला हो। शैक्षणिक सामग्री जैसे कार्ड, कार्यपत्रक, कहानियाँ, कविताओं, गीतों और नाट्य कला के रूप में साधन हो सकते हैं। हर बार नई अवधारणा के लिए कार्य करते हुए अलग–अलग साधन और संसाधनों को मददगार के रूप में काम में लिया जाना बेहतर और कारगार विकल्प हो सकेगा।

विषयवार शिक्षण करवाने में शिक्षक पाठयपुस्तकों से बंध जाते हैं शिक्षकों की आज भी पहली पसंद होती है बच्चों को पाठय पुस्तक से पाठ दर पाठ पढना और प्रश्नोतर करवाना। जिसमें बच्चों को ना खुद कुछ अनुभव करने के मौके मिल पाते हैं और ना ही आनंद आता हैं बच्चे सम्बन्धित वाचन और पठन–पाठन से जुड़ नहीं पाते, एकाग्र नहीं हो पाते और इस पूरी प्रक्रिया के तहत बच्चा कुछ भी नया नहीं सीख पाता। धीरे–धीरे बच्चे ऊबने लगते हैं और बच्चों की रूचि समाप्त हो जाती है, उन्हें कक्षा में कुछ भी समझ में नहीं आ रहा होता है और वे पढने और विद्यालय आने से जी चुराने लगते हैं। इस सबके विपरीत चूँकि बच्चों को खेलना पसंद होता है इसे ध्यान में रखते हुए बच्चों को अलग–अलग विषय से जुडी गतिविधियाँ और खेल से जोड़कर सीखना सुनिश्चित किया जा सकता है।

- बच्चे सीखने में आनन्द और रूचि के साथ जुड़ सकेंगे और आगे भी रूचि बनी रहेगी।
- बच्चों की एकाग्रता बढ़ेगी।
- बच्चों की जिज्ञासा और सीखने के प्रति जुड़ाव बढ़ेगा।

झ) समुदाय इन सबमें केंद्र की धुरी –

विद्यालय में आने वाले बच्चे समुदाय से ही आते हैं और कुछ घंटे का समय यहाँ पर व्यतीत करने के बाद वापस समुदाय में ही जाते हैं इस प्रकार से समुदाय को विद्यालय से अल़ नहीं किया जा सकता वरन विद्यालय समुदाय का एक अभिन्न हिस्से के रूप में उभरकर बच्चों के लिए कार्य करे। विद्यालय के साथ समुदाय के रिश्ते बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं बच्चों के सीखने–सिखाने से सीधा–सीधा सम्बन्ध रखते हैं। बच्चे की जरूरत, बच्चे की प्रकृति सीखने में बच्चे के बड़े मद्दार साबित हो सकते हैं। समय–समय पर शिक्षक समुदाय के लोगों से मिलते–जुलते रहें और इनके साथ एक बेहतर रिश्ता बनायें। बच्चे सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं में कैसा प्रदर्शित कर रहे हैं और बेहतर सीखने के लिए समुदाय से किस तरह के सहयोग की अपेक्षा है इत्यादि कई ऐसे मसले हो सकते हैं जिनको लेकर विद्यालय और समुदाय को एक साथ मिलकर कार्य किये जाने की जरूरत है।

यह इस प्रकार से मद्दार साबित होगा कि शिक्षक और समुदाय/माता–पिता मिलकर एक आपसी सामंजस्य स्थापित कर सक़ें बच्चे जिन अवधारणाओं को लेकर विद्यालय में बच्चों के साथ कार्य कर रहे हैं घर पर माता–पिता/अभिभावकों द्वारा इस अवधारणा को पक्का करने के क्रम में सहायक कार्य करवाए जा सकेगा।

विद्यालय में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया, बेहतर तरीके से सतत चल सके, विद्यालय भवन निर्माण और भवन के रख रखाव से सम्बन्धित, विद्यालयों में राष्ट्रीय उत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए समुदाय और विद्यालयों को मिलकर कार्य किये जाने की जरूरत है चूँकि बच्चे, विद्यालय और समुदाय, समुदाय इन सबमें केंद्र की धुरी की तरह कार्य करता है।

ञ) विद्यालय स्तर पर पुस्तकालय की भूमिका –

हम इस बात को पहले ही स्वीकार कर चुके हैं कि बच्चे स्वयं करके सीखते हैं जरूरत है तो बस इतनी कि बच्चों को सीखने का माहौल मिल सके इसी क्रम में यदि देखा जाए तो पुस्तकालय बच्चों के सीखने के लिए अवसर और माहौल दोनों उपलब्ध करवाता है।

शिक्षक और बच्चों दोनों के लिए ही ज्ञान के स्रोत के रूप में पुस्तकालय कार्य करता है। विद्यालयों में पुस्तकालय की कल्पना एक ऐसे बौद्धिक स्थल के रूप में की जा सकती है जहाँ शिक्षक, विद्यार्थी और आस–पास के समुदाय से लोग ज्ञान के गहरे अर्थों और कल्पनाशीलता की तलाश में आयें। बच्चे आत्मनिर्भर पुस्तकालय उपयोगकर्ता बन सकें।विभिन्न तरह की और अलग–अलग भाषाओँ में पुस्तकें, पत्रिकायें होने के साथ–साथ सूचना तकनीक के नए आयामों की सुविधाएँ भी होना अति आवश्यक है। विद्यालय स्तर के इस पुस्तकालय का बड़ा स्वरुप ब्लाक स्तर या संकुल स्तर पर संकल्पित किया जा सकता है।

ट) और प्रिंटरिचनेस भी जरूरी है–

इस प्रकार के संसाधन जिनके द्वारा अवधारणा को विकसित करने के क्रम में कार्य सहजता से किये जा सकें। कक्षा कक्ष का ऐसा माहौल बना देना दीवारों पर सन्दर्भ से जुडी सामग्री और तस्वीरों को चिपका देना, कुछ लिखित सामग्री और सम्बन्धित पुस्तकें भी हो सकती हैं।

इस तरह की सामग्री की मदद से बच्चे सरलता और सहज ही अवधारणा से एक अच्छा रिश्ता बना लेते हैं। शिक्षक के द्वारा पाठ दर पाठ पढ़कर बच्चों की एक बेहतर समझ को विकसित नहीं किया जा सकता। जैसा कि हम जानते हैं कि बच्चे अनेक तरीकों से पढना–लिखना सीखते हैं। लिखना और पढना दोनों ही जटिल प्रक्रियाएं हैं जिनको सीखने के लिए बच्चों को सतत और सक्रिय रूप से प्रयत्न करते रहने होते हैं। शिक्षक बच्चों को छपी और समृद्ध सामग्री देकर बच्चों के लिए पढना–लिखना सीखना आसान बना सकता है। मूलतः भाषा मौखिक ही होती है और इसे सीखना भी आस–पास के माहौल से मिले विविध और सार्थक अनुभवों से संभव हो सकता है। लिखित रूप में अगर प्रयास करें तो कई तरीके खोजे जा सकते हैं।

सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं के हिस्से के रूप में सन्दर्भ पद्धति का उपयोग भाषा सिखाने तक ही सीमित नहीं है वरन पर्यावरण अध्ययन, विज्ञान, गणित जैसेअन्य विषयों की सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं के दौरान भी इसे आसानी से काम में लिया जा सकता है।

ठ) शब्द और वाक्यों की पट्टिकाएं बनाकर दीवारों या संदर्भ पर चिपकाना/लगाना –

बच्चों के साथ संवाद के दौरान जैसेकि प्रार्थना सभा के दौरान की गयी चर्चा और कोई बात, कोई नया निर्देश, बातचीत के दौरान निकलकर आये कोई नए नाम या कोई वाक्य इनको कागज पर लिखकर दीवार पर लगा दें। हर दिन एक नई बात और बातों के साथ तैयार कई–कई नयी पर्चियों को चिपका देना, बच्चों को बार–बार पढ़कर सुनाना और अपने आप पढने के लिए प्रेरित करना। इसे हमेशा किये जाने की जरूरत है पुरानी पर्चियों पर लिखे हुए का दोहरान और नए से परिचय के रूप में बच्चे को लिपि के साथ–साथ भाषा की सरंचना, सन्दर्भ के साथ माहौल भी मिल रहा है। बच्चों को इस माहौल को आत्मसात करने के भरपूर अवसर मिलने की जरूरत है।

ड) अखबार/पत्रिका निकालना –

बच्चों के साथ उनके आस–पास घटित होने वाली घटनाओं को लेकर कार्य किया जाए। सबसे पहले बच्चों से उनके आस–पास होने वाली घटनाओं को सामूहिक रूप से सुना जाए, साथ ही संवेदनशीलता को बनाये जाने के लिए सम्बन्धित घटनाक्रम को लेकर चर्चा की जाए। इसके बाद इसे खबर के रूप में लिखकर एकत्रित करना शुर करें। जब विभिन्न प्रकार की अनेक घटनाएँ एकत्रित हो जाएँ इन खबरों को एक बड़े चार्ट पर लिखकर, सम्बन्धित तस्वीरें बनाकर अखबार के रूप में बनाया जाये और इस अखबार को कक्षा–कक्ष की दीवार पर लगा दिया जाए। अब इस अखबार को पढने का भरपूर समय बच्चों को मिल सके ऐसे प्रबंध शिक्षक द्वारा किये जाने जरूरी हैं। यह अखबार 8–15 दिनों में बदलकर नया बनाया जा सकता है और पुराने को चाहें तो हटा दें या नया भी उसके साथ लगाया जा सकता है।

बदलते हुए रूप में इसे पत्रिका का रूप भी दिया जा सकता है।

ढ) कविताओं के पोस्टर बनाकर दीवारों पर लगाना–

बच्चों की अपनी छोटी छोटी कवितायेँ, तुकबन्दियाँ या ऐसी कुछ पंक्तियाँ जो बच्चों को गुनगुनाते हुए सुनी जा सकती हैं। जैसे–

हाथी राजा बहुत भले ,सूंड हिलाते कहाँ चले

दो चूहे थे मोटे–मोटे थे

ऐसी ही कुछ और भी हो सकती हैं जो बच्चों की जुबान पर जल्दी से चढ़ जाती हैं इनको मोटे और साफ अक्षरों में लिखकर लगा दें। शुरू में बच्चों के साथ मिलकर 2–3 बार गा लें, इसके अर्थ पर बात कर लें, कविता में क्या हो रहा है, कौन–कौन हैं आदि। इस बातचीत के बाद बच्चों को पोस्टर दिखाएँ छूकर देखने दें और फिर इस पोस्टर को किसी ऐसे स्थान पर लगा दें जहाँ से बच्चों को देखने में किसी प्रकार की दिक्कत ना हो और वे आसानी से इसे देखकर बार–बार दोहरान कर सकें।

ण) कहानियों के चार्ट बनाकर दीवारों पर लगाना –

शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर बैठे और 8–10 वाक्यों की कोई कहानी बच्चों को सुनाएँ जब बच्चे इस कहानी को ध्यान से सुन लें तब इसके सन्दर्भ में बच्चों के साथ बात कर लें जैसे–कहानी में कौन–कौन थे? कहानी में आपको क्या पसंद आया? क्या अच्छा नहीं लगा आदि–आदि। इसके बाद एक चार्ट पर मार्कर की मदद से इस कहानी को बड़े–बड़े अक्षरों में लिख दें और सम्बन्धित चित्र भी बना दें। इस चार्ट को बच्चों के कक्षा–कक्ष की दीवारों पर या ऐसे स्थान पर चिपका दें जहाँ से बच्चे देखकर और पढ सकें असल में इस पूरी प्रक्रिया में यह हो रहा है कि कहानी के रूप में एक सार्थक विषयवस्तु का चुनाव हुआ है। चूँकि कहानी के रूप में सुनकर बच्चे इसे क्रमबद्ध तरीके से याद भी रख लेते हैं, पूरी कहानी को क्रमबद्ध तरीके से लिपिबद्ध करने से छपी होने का अहसास होता है। सुनी हुई कहानी के आधार पर बच्चे अंदाजा लगायेंगे जो कि बच्चों को पढना सीखने में मददगार साबित होगा और इस तरह के पठन से बच्चों के सार्थक पठन को प्रोत्साहन और आत्मबल मिलता है।

त) नामों की पर्चियां बनाकर दीवारों, सम्बन्धित वस्तु या बोर्ड पर लगाना –

बच्चों के जीवन से जुडी हुई कुछ ऐसी चीजों के नाम या अन्य किसी भी रूप में नामों के साथ बच्चों के परिचय को आगे बढाने के क्रम में ऐसा कार्य किया जा सकता है। ये नाम निम्न प्रकार से हो सकते हैं–

बच्चों के परिवार के किन्ही सदस्यों जैसे दादा, दादी, नाना, नानी, भाई, बहिन या रिश्तेदारों में से कुछ नाम।

बच्चों के पास पडौस, दोस्तों या सहपाठियों में से कुछ नाम।

शिक्षक–शिक्षिकाओं के नाम।

खुद के काम में आने वाली चीजों के नाम जैसे पेंसिल, बस्ता आदि।

पालतू पशु, पक्षी आदि

इसी प्रकार से शिक्षक कुछ अन्य भी नाम क्षेत्रीयता को ध्यान में रखते हुए लिखवाना तय कर सकते हैं।विद्यालय की चीजें और कॉमन चीजों के नाम की पर्चियां बच्चों के साथ मिलकर बना लें और इन पर्चियों को उन चीजों पर चिपका दें जैसे–विद्यालय या कक्षा–कक्ष के पंखे पर ''पंखा'' की पर्ची बनाकर चिपकाएँ इसी प्रकार अलमारी, खिड़की, दरवाजा आदि

चीजों पर मोटे–मोटे अक्षरों में लिखकर बनी पर्ची को चिपका देवें। कुछ ऐसी वस्तुएँ जिन पर लिखकर पर्ची चिपकाना संभव ना हो उनके नामों की पर्चियों को लेकर बच्चों के साथ बातचीत कर लें और दीवार पर चिपका देवें।इसके अलावा व्यक्तिगत नामपर बच्चों के साथ बात करते हुए ब्लैक बोर्ड पर लिखें और इसके बाद बच्चों से अपनी कॉपी में लिखने को कहें।सन्दर्भ के साथ जब भी बच्चे इन नामों को लिखा हुआ देखेंगे तो पहचान कर सकेंगे। लेकिन इस कार्य को धीरे–धीरे और सब बच्चों के जुड़ाव के साथ किया जाए तो बेहतर होगा।

थ) शिक्षक की भूमिका –

इन सभी तरह के प्रयासों में शिक्षक की भूमिका को अगर देखा जाए तो एक महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई देती है | शिक्षक को अपने कार्यों को योजनाबद्ध तरीके से अंजाम दिया जाना होता है। उसे अपने द्वारा तय की गयी योजना, योजनाबद्ध तरीके से किये जाने वाले कार्यों पर सतत चिन्तन और मनन किये जाने की जरूरत होती है। ताकि बच्चों की जरूरत के अनुरूप मददकी जा सके इसे इस तरह से देखा जा सकता है–

शिक्षक को प्रत्येक बच्चे के स्तर की जानकारी हो यह पहली जरूरत है क्योंकि बिना इस जानकारी के शिक्षक बच्चों की कोई मदद नहीं कर सकेगा इसके साथ ही शिक्षक को अगर प्रत्येक बच्चे की रूचि का पता हो तो उसे सीखने में रुचिपूर्ण माहौल मिल सकेगा जो कि बच्चे के लिए अवधारणा को और भी आसान बना देगा इसके अलावा प्रत्येक बच्चे की सामाजिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी हो। साथ ही बच्चों के सीखने के स्तर के अनुरूप विषयवार मासिक, साप्ताहिक और दैनिक कार्ययोजना तैयार होती है और दैनिक कार्ययोजना के अनुरूप तैयारी, कार्य योजना और तैयारी के अनुरूप कक्षा–कक्ष का माहौल बने जहाँ पर बच्चों को सीखने की प्रक्रिया से गुजरना है।

अब जिस वक्त बच्चा सीखने की प्रक्रिया से गुजर रहा होता है और (कई बार प्रक्रिया से गुजर जाने के उपरान्त भी) सीखने और सिखाने के अंतर का अवलोकन कर सके और अवलोकनध्अवलोकित बिन्दुओं के साथ चिन्तन और मनन करते हुए नयी कार्ययोजना को तैयार करे।

इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक को बच्चों का सतत मूल्यांकन करते रहने की जरूरत होगी |

इस पूरी प्रक्रिया को अगर जनजातीय क्षेत्र के शिक्षकों के प्रयासों के सन्दर्भ में देखा जाए तो सभी शिक्षक अलग–अलग विद्यालयों में सेवारत हैं लेकिन फिर भी इन सभी शिक्षकों का आपसी सामंजस्य, तालमेल, अपने–अपने विद्यालयों में किये जाने वाले नवाचारों के तहत काफी प्रभावी रहा। शिक्षकों ने प्रभावी योजना तैयार करने, योजनानुरूप तैयारी के सन्दर्भ में, विचार विमर्श करने हेतु सतत ऑनलाइन बैठकों के आयोजन किये और फोन के जरिये बातचीत करते हुए विचार–विमर्श किये गए।

द) शिक्षकों की एकजुटता की ताकत उनकी प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है –

विद्यालय बंद हो जाने और बच्चों का शैक्षणिक माहौल से दूर हो जाने के कारण नया सीखना बाधित हुआ और पहले से सीखा हुआ भी वे भूलने लगे इसको आधार बनाते हुए सभी शिक्षक साथियों ने बुनियादी साक्षरता पर काम करने के लिए हाथ मिलाया। चूँकि यह पूरी तरह से स्पष्ट था कि जनजातीय क्षेत्र में बच्चों का सीखना तय हो सके इसके लिए बच्चों से मिलना, आपसी सहभागिता और सीखने सिखाने के अवसर उपलब्ध करवाना जरूरी ही नहीं सख्त जरूरत लग रही थी। ऐसे में शिक्षकों की व्यक्तिगत और सामूहिक प्रतिबद्धता, उनका योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने की रणनीति ने इसको मजबूती प्रदान करने में इसकी जड़ों के रूप में कार्य किया।

हर कक्षा में, और सभी विषयों को एकीकृत करते हुए सीखने के लक्ष्य तय किये जाते थे और संबंधित विषयों के लिए नियमित पाठ योजना में सीखने के परिणाम शामिल करते हुए योजना बनती थी चूँकि 'पाठयक्रम में भाषा' का दृष्टिकोण एक विस्तृता के साथ है उदाहरण के लिए–गणित के इबारती सवालों को समझने के लिए भाषा की समझ होना और पढ़कर समझना आना जरूरी है जहाँ पर बच्चे प्रक्रिया से गुजरते हुए गणित करना तो सीख रहे हैं लेकिन चूँकि शब्दों को पढना समझना निष्कर्ष निकालना आदि कार्य भी कर रहा है जोकि भाषा भाषा सीखने के लक्ष्यों के तहत भी कार्य करता है।

सभी बच्चों के सीखने का स्तर अलग–अलग होता है तो उनके स्तर के अनुसार अलग–अलग योजना बनाए जाने की बजाय किसी एक कॉमन थीम के साथ कार्य की शुरुआत की जा सके इस तरह का ध्यान योजना बनते समय रखा गया जैसे–कहानी सुनाना, विषय आधारित चर्चा करना, आस–पास घूमकर अवलोकन करना या पुस्तकालय की पुस्तकों से कोई एक टॉपिक चुनकर उस पर कार्य करना आदि और सहपाठियों के साथ मिलकर सीखने को बढ़ावा देना हमेशा ही मुख्य केंद्र में रहा।

योजना निर्माण के समय पाठ्यक्रम की पुस्तकों से इतर कहानियों और पुस्तकालय की पुस्तकों के साथ साथ सन्दर्भ के द्वारा बच्चों का भाषा सीखना एक माध्यम के रूप में चुना जाता। यहाँ पर बच्चे स्वतंत्र रूप से अपनी पसंद की पुस्तक चुन कर पढना तय कर सकते थे, मात्राओं को सीखने और अभ्यास के लिए भी बच्चों के पास अवसर और माहौल होने के कारण भाषा विकास और भाषा की समझ को लेकर व्यापक स्तर पर कार्य हो सका। पढने के साथ–साथ लिखने के अभ्यास के रूप में कार्य करने की वैविध्यता बच्चों के पास थी अर्थात–अपने शब्दों में लिखना, सुनकर लिखना, शब्दों के आधार पर लिखना आदि सभी कार्य योजनाबद्ध तरीके से व बच्चों के स्तर के आधार पर तय किये जाते थे। साथ ही इस विचार को भी स्थान दिया जाता था। कि कार्य–प्रक्रियाओं में स्थानीयता का अभाव ना रहे। बच्चों के साथ–साथ शिक्षकों के लिए भी यह एक नया अनुभव था जो कि हर दिन के कार्यों के दौरान नई–नई सीख दे रहा था।

इन सबका आधार था योजना बनाकर कार्य करना, किये गए कार्य की समीक्षा करना और यह देखना कि बच्चे ने कितना और क्या–क्या सीख लिया है और साथ ही आगे बच्चे को क्या सिखाया जाना है इसे तय करना यह प्रक्रिया ये सभी शिक्षक साथी मिलकर और व्यक्तिगत स्तर पर सतत और नियमित रूप से करते थे।

इस आधार पर कार्य करने से शिक्षक समूह के साथियों को आत्मबल मिल सका, कार्य करने की इच्छाशक्ति बढ़ी और बच्चों के लिए कुछ नए कार्य करने से बच्चों के लिए भी आनंददायी शिक्षण तय किया जा सका।

इस आधार पर कार्य करने से शिक्षक समूह के साथियों को आत्मबल मिल सका, कार्य करने की इच्छाशक्ति बढ़ी और बच्चों के लिए कुछ नए कार्य करने से बच्चों के लिए भी आनंददायी शिक्षण तय किया जा सका।

इन सबके साथ योजना को ठीक से लागू किये जाने और परिणाम तक सहज ही पहुँचा जा सके इसके लिए बड़े स्तर पर तैयारी की जरूरत महसूस की गयी। योजना के अनुरूप ही कहानियों की पुस्तकों का चयन, कार्ड बनाना, वर्कशीट निर्माण, चार्ट बनाना, अलग–अलग तरह की शैक्षणिक सामग्री जुटाना और नई–नई सामग्रियों का निर्माण करना, अलग–अलग तरह की क्षमताओं को बढ़ाने और बनाने के सन्दर्भ में शिक्षकों का आपस में मिलना, बातचीत करना और एक दूसरे की समस्या में सहयोग करना आदि लम्बी–लम्बी प्रक्रियाएं भी कार्य की योजनाओं के हिस्से के रूप में थे।

इन सबके परे बच्चों के समूहों के साथ कार्य किया जा सके इसके लिए समुदाय के साथ मिलकर ऐसी जगह तय कर पाना जहाँ पर रोशनी और छायाँ की व्यवस्था मिल सके, टॉयलेट और पीने के पानी की उपलब्धता आसानी से हो सके, आस–पास के व्यवधान से बचते हुए सीखने–सिखाने की गतिविधियों को किया जा सके।

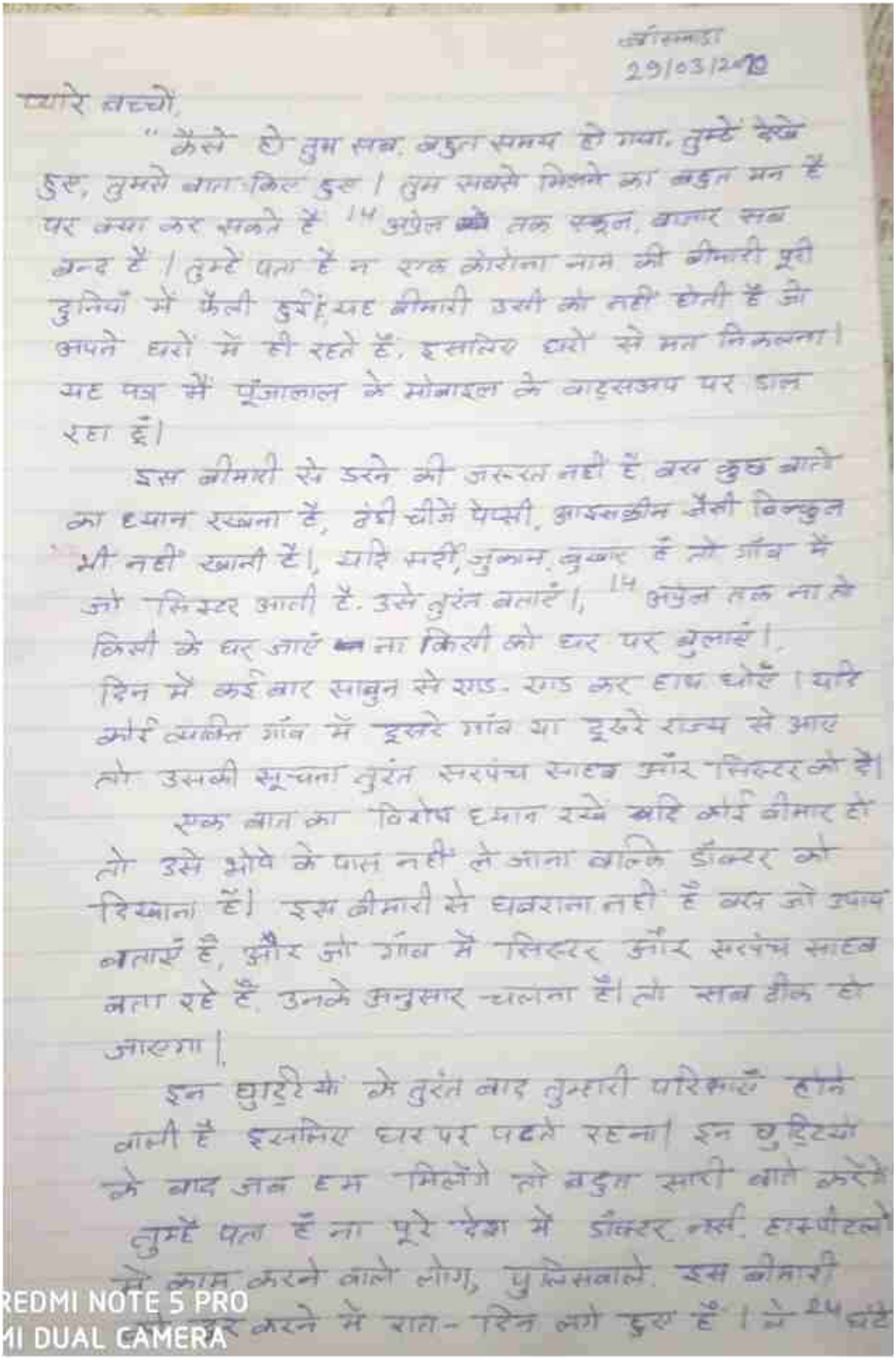

बांसवाड़ा
29/03/2020

प्यारे बच्चों,

"कैसे हो तुम सब, बहुत समय हो गया, तुम्हें देखे हुए, तुमसे बात किए हुए। तुम सबसे मिलने का बहुत मन है पर क्या कर सकते हैं 14 अप्रेल तक स्कूल, बाजार सब बन्द हैं। तुम्हें पता है न एक कोरोना नाम की बीमारी पूरी दुनियाँ में फैली हुई है, यह बीमारी उसी को नहीं होती है जो अपने घरों में ही रहते हैं, इसलिए घरों से मत निकलना। यह पत्र मैं पूंजालाल के मोबाइल के वाट्सअप पर डाल रहा हूं।

इस बीमारी से डरने की जरूरत नहीं है बस कुछ बातों का ध्यान रखना है, ठंडी चीजें पेप्सी, आइसक्रीम जैसी बिल्कुल भी नहीं खानी है।, यदि सर्दी, जुकाम, बुखार है तो गाँव में जो सिस्टर आती है. उसे तुरंत बताएं।, 14 अप्रेल तक ना तो किसी के घर जाएं ना किसी को घर पर बुलाएं। दिन में कई बार साबुन से रगड़-रगड़ कर हाथ धोएँ। यदि कोई व्यक्ति गाँव में दूसरे गाँव या दूसरे राज्य से आए तो उसकी सूचना तुरंत सरपंच साहब और सिस्टर को दें।

एक बात का विशेष ध्यान रखें यदि कोई बीमार हो तो उसे भोपे के पास नहीं ले जाना बल्कि डॉक्टर को दिखाना है। इस बीमारी से घबराना नहीं है बस जो उपाय बताएं है, और जो गाँव में सिस्टर और सरपंच साहब बता रहे हैं. उनके अनुसार चलना है। तो सब ठीक हो जाएगा।

इन छुट्टियों के तुरंत बाद तुम्हारी परीक्षाएँ होने वाली है इसलिए घर पर पढ़ते रहना। इन छुट्टियों के बाद जब हम मिलेंगे तो बहुत सारी बातें करेंगे। तुम्हें पता है ना पूरे देश में डॉक्टर, नर्स, हास्पीटलों में काम करने वाले लोग, पुलिसवाले, इस बीमारी [illegible] करने में रात-दिन लगे हुए हैं। वे 24 घंटे

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

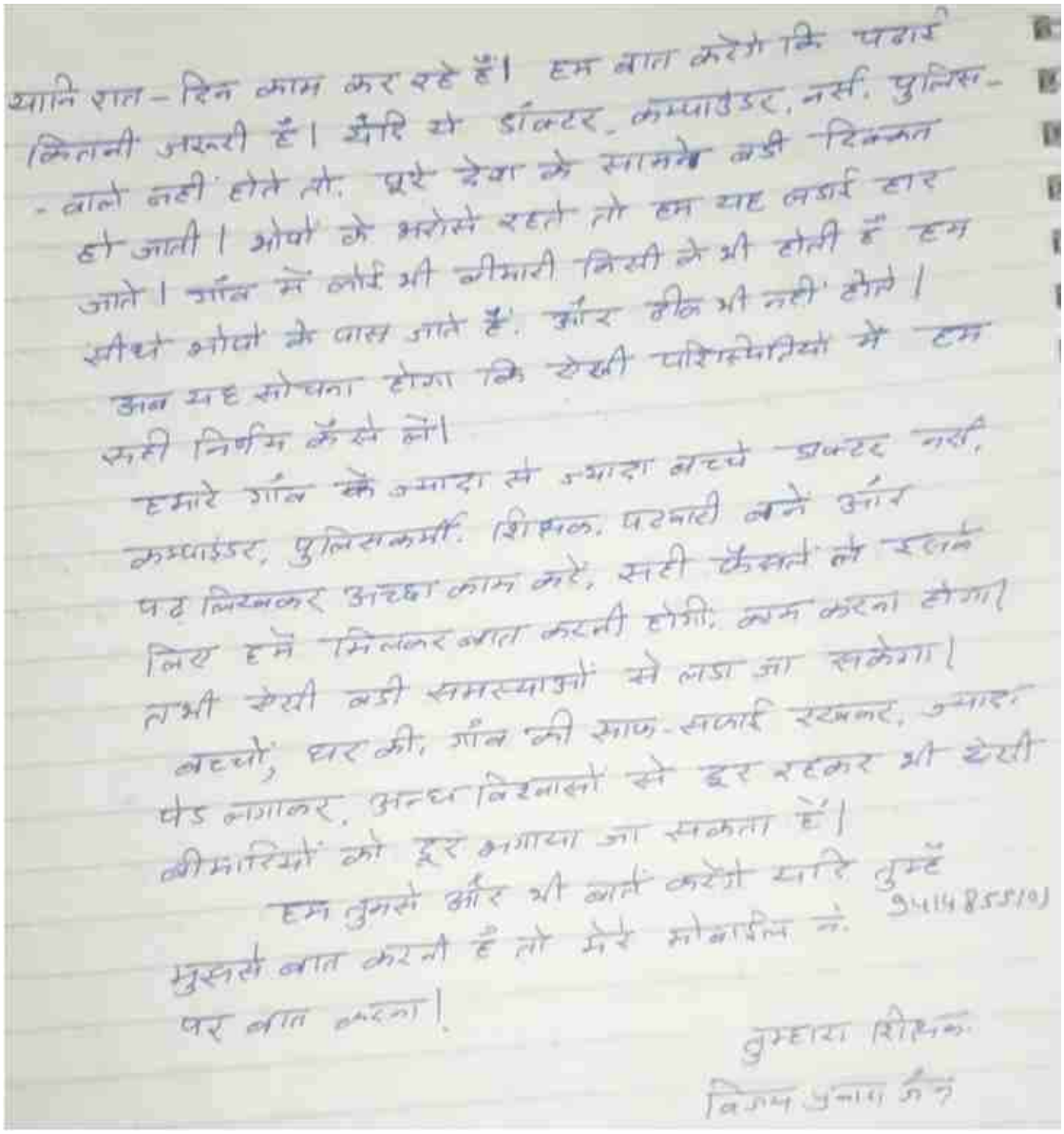

यानि रात-दिन काम कर रहे हैं। हम बात करेंगे कि पढाई
कितनी जरूरी है। यदि ये डॉक्टर, कम्पाउडर, नर्स, पुलिस-
-वाले नहीं होते तो, पूरे देश के सामने बड़ी दिक्कत
हो जाती। भोपों के भरोसे रहते तो हम यह लड़ाई हार
जाते। गाँव में कोई भी बीमारी किसी को भी होती है हम
सीधे भोपों के पास जाते हैं, और ठीक भी नहीं होते।
अब यह सोचना होगा कि ऐसी परिस्थितियों में हम
सही निर्णय कैसे लें।
हमारे गाँव के ज्यादा से ज्यादा बच्चे डॉक्टर, नर्स,
कम्पाउडर, पुलिसकर्मी, शिक्षक, पटवारी बने और
पढ लिखकर अच्छा काम करें, सही फैसले लें इसके
लिए हमें मिलकर बात करनी होगी, काम करना होगा।
तभी ऐसी बड़ी समस्याओं से लड़ा जा सकेगा।
बच्चों, घर की, गाँव की साफ-सफाई रखकर, ज्यादा
पेड़ लगाकर, अन्धविश्वासों से दूर रहकर भी ऐसी
बीमारियों को दूर भगाया जा सकता है।
हम तुमसे और भी बातें करेंगे यदि तुम्हें
मुझसे बात करनी है तो मेरे मोबाईल नं. 9414855101
पर बात करना।

तुम्हारा शिक्षक
विजय कुमार जैन

03 शिक्षकों के अनुभवों के अनुसार

बच्चों के लिए नियमित रूप से व्यक्तिगत बातचीत/अभिव्यक्ति के अवसर पूरी तरह से समाप्त हो चुके थे जो कि सीखने की प्रक्रिया के एक अहम् हिस्से के रूप में आवश्यक हैं। स्कूल बंदी/तालाबंदी के दौरान विभिन्न तरीकों से छात्रों/विद्यार्थियों के साथ संपर्क स्थापित करते हुए बातचीत की गयी, उन्हें लगता है कि शैक्षणिक वर्ष 2020–21 के पाठयक्रम के अनुसार बच्चे सीखने से काफी पिछड़ गए हैं और मूलभूत क्षमताओं सहित पिछली कक्षाओं में सीखे हुए को भूल गए इस रूप में भी शिक्षा का नुकसान हुआ है। यह नुकसान शैक्षणिक ही नहीं वरन सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी हुआ है।

3.1 एक दूसरे के साथ मिलकर सीखने का आनंद

उषा वैष्णव
राजकीय प्राथमिक विद्यालय दिवालीपाड़ा, खेरडाबरा

गतिविधियाँ जब सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं का हिस्सा बनती हैं तो बच्चों को स्वतः सीखने की ओर प्रेरित करती हैं, बच्चों को विद्यालय से जुड़ाव बढ़ाने में मदद करती हैं और बच्चों को सीखने में आनंद का अहसास होने लगता है।

स्वाध्याय सीखने का चरण

दिवालीवाडा, खेरडाबरा गांव का एक वार्ड है जहाँ पर प्राथमिक विद्यालय में शिक्षिका के रूप में जुड़कर मैं अपनी सेवाएँ दे रही हूँ। कोविड 19 के समय मैंने मेरे शिक्षक साथियों के साथ मिलकर, समुदाय में जाकर बच्चों और समुदाय के साथ कार्य करने की योजना बनाई। हम समुदाय में जाकर बच्चों से मिले और समुदाय के लोगों के साथ भी मेलजोल किया। समुदाय में जाना हमेशा सार्थक ही होता है क्योंकि बच्चे के जीवन में क्या चल रहा है इसकी पूरी की पूरी झलक यहाँ पर मिलती है और सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं का नियोजन करने में शिक्षक को मदद मिलती है। शिक्षक को समझ में आता है कि अभी बच्चे के साथ किस तरह से जुड़ाव करते हुए कक्षा–कक्ष में सीखने की प्रक्रियाओं का माहौल बनाये जाने की जरूरत है।

यहाँ मुझे तय करना था कि बच्चों के साथ क्या किये जाने की जरूरत है और काफी सोच समझकर मैंने यह तय किया कि बच्चों के साथ भाषा सम्बन्धित गतिविधियाँ की जानी जरूरी है। क्योंकि वर्तमान परिदृश्य में कोई भी यह नहीं बता सकता था

कि बच्चे विद्यालयों में कब से आना शुरू कर सकेंगे और पहले की तरह विद्यालयों में सीखने सिखाने की गतिविधियाँ शुरू हो सकेंगी। लेकिन यह तो तय था कि लर्निंग गैप तो बढ़ जायेंगे। समुदाय में आकर बच्चों के साथ काम किये जाने को मैंने एक अवसर की तरह से देखा और इस विचार के साथ बच्चों के साथ काम किये जाने की योजना बनाई कि अगर बच्चों की भाषा का ठीक से विकास हो जाता है तो बच्चे अन्य विषयों में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं क्योंकि भाषा हर विषय को सीखने और समझने का आधारध्माध्यम होती है। इसी विचारधारा के साथ मैंने बच्चों के लिए कार्य योजना बनाकर कार्य करना शुरू किया। मैंने बारी–बारी से प्रत्येक बच्चे के बारे में सोचा, इस अवसर को मैं विकास की नई संभावनाओं की तरह देखने लगी। चूँकि बच्चों के साथ भाषा सीखने–सिखाने को लेकर सिरे से कार्य किये जाने की जरूरत लग रही थी अतः मैंने यह तय किया कि बच्चों को रटंत विद्या से दूर और कुछ सार्थकता के साथ सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं से जोड़कर काम किया जाए और मैंने वर्ण सिखाने की शुरुआत चित्रों और शब्दों के साथ किया जाना तय किया। शुरू में बस इतना ही तय कर पाई क्योंकि सफर चाहे कितना भी मुश्किल लगे अगर हम इतना कुछ कर लें जितना साफ–साफ नजर आ रहा है तो अगले चरण में अधिक मदद जरूर मिलती है।

बच्चों के सबसे करीब होता है उनका अपना परिवेश और परिवेशीय चीजों को अगर सीखने के आधार के रूप में काम में लिया जाए तो सहजता और जुड़ाव दोनों ही सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक को मदद जरूर करते है और बच्चों की आँखों की चमक और आत्म विश्वास के साथ ज्ञान के निर्माण के सुख को दोहरा कर देते हैं। शिक्षक और बच्चों का सामूहिक फायदा जो होता है वह है एक बेहतर आपसी रिश्ता, आपसी भरोसा जो कि सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं का हामिल है। इसी क्रम में आम, पतंग, अंगूर, खिड़की घर आदि इस प्रकार के शब्द तय किये जिनके चित्र भी बनाये जा सकें। साथ ही एक और बात का मैंने खास ख्याल रखा कि कुछ मात्राओं वाले शब्द भी हों क्योंकि मात्रा सिखाने वाले काम को भी आसान बनाकर चलना चाहती थी। इनके शब्द–चित्र कार्ड बनाकर बच्चों के साथ काम किया गया। चित्र बोर्ड पर बनाना और उनके नीचे उसका नाम लिख देना आदि। पहली बार एक और चीज जो मैंने देखी कि बच्चे अपना नाम लिखना जानते हैं हालाँकि वर्णमाला या अक्षर पहचान उनको नहीं है इसे भी मैंने सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाया। मैंने सभी बच्चों के नाम को मात्रा सिखाने के काम में लिया। बच्चों के नाम बोर्ड पर लिख दिए और उन शब्दों में से मात्रा को अलग किया जैसे दृकिरण नाम में से इ की मात्रा की पहचान करना, उस मात्रा से बनने वाले अन्य शब्द बच्चों के साथ मिलकर लिखना और उस मात्रा के बोलने का अभ्यास करना। ये सभी गतिविधियाँ इस प्रकार से तैयाए की गयी थीं कि बच्चों को पूरी प्रक्रिया से जोडती थी, बच्चों में जिज्ञासा बनती थी और परिवेशीय होने के कारण अपनेपन को बढ़ावा देती थी। इसी तरह रंगों की पहचान करवाने के लिए मैंने कुछ रंगीन चित्रों को चुना और उन चित्रों के नीचे सम्बन्धित वस्तु के साथ उसके रंग का नाम लिख दिया और साथ ही कुछ हिस्से इस तरह से बना दिए कि बच्चे रंग की पहचान करने के साथ ही साथ इनके नाम अपने आप भी लिख सकें। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चे रंग की पहचान तो कर ही रहे थे साथ ही लिखना भी सीख रहे थे।

लाल रंग	काला रंग	हरा रंग	नीला रंग	पीला रंग	हरा रंग
.....	.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....	.....

कला के कार्य को रूचिपूर्वक करते हुए

मैं यह जान सकी कि इस तरह के अभ्यासों से भाषा सिखाने में पहली, दूसरी कक्षा के बच्चे पहले की तुलना में जल्दी सीख रहे थे। ये मेरे सफल प्रयोग थे जो भाषा सीखने में बच्चों को पहले से अधिक मदद कर रहे थे। इस तरह की गतिविधियाँ जब सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं का हिस्सा बनती हैं तो बच्चों को अपने आप सीखने की ओर भी प्रेरित करती है और बच्चों के अपने आप कार्य करने से शिक्षक को यह तय करने में मदद मिलती है कि किस समय किस बच्चे को सीखने में शिक्षक की जरूरत है और उस जरूरत के अनुसार शिक्षक उस बच्चे को मदद कर पाता है।इसमें बच्चे अपने आप, एक दूसरे साथी की मदद से और अपने–अपने स्तर से सीख रहे होते हैं।

कक्षा तीन से पाँच के बच्चों के साथ पुस्तकालय की पुस्तकों की मदद के साथ कार्य किया जाना तय किया। शुरुआत में इन बच्चों के लिए मैंने बड़े–बड़े शब्दों और छोटे–छोटे सरल वाक्यों वाली, चित्रों से भरपूर और रंगीन पुस्तकों का चयन किया।

पुस्तकालय की पुस्तकों में दुनिया को देखने की दृष्टि विकसित होती है।

बच्चों के हाथ में जैसे ही पुस्तकें गईं उनको छूने के अहसास को उनकी आँखों की चमक बयाँ कर रही थीं। जिज्ञासु बच्चों ने जल्दी–जल्दी अपनी पुस्तक को पढा और चित्रों को देखने के बाद अगली पुस्तक की मांग मुझसे करने लगे। मैंने आपस में एक दूसरे से बदलकर पढने की सलाह दी वो भी इन बच्चों को पसंद आई और यह कार्य भी बच्चों ने आसानी से पूरा कर लिया। इस पूरी प्रक्रिया में गौर करने वाली बात यह थी कि बच्चे मिलकर कार्य करना सीख रहे थे।

इस प्रकार काम करते–करते धीरे–धीरे मैंने बच्चों को थोड़ी बड़ी किताबें (पहले से एक स्तर ऊपर या जटिल) देनी शुरू कीं लेकिन अब तक बच्चों की किताब पढने की आदत बन चुकी थी और स्वतः ही वे इन बड़ी किताबों के साथ भी जुड़ने लगे।

रूचि और तन्मयता के साथ, रंगीन चित्र देखकर आनन्द के साथ पुस्तकालय की पुस्तकें पढ़ने लगे। इन पुस्तकों ने कुछ काम बड़ी आसानी से पूरे कर दिए एक तो बच्चों की अपने आप पढने की रूचि/आदत का विकास, आत्मनिर्भर तरीके से अपने आप कार्य करने की भावना का विकास और तीसरा बच्चों की भाषा का विकास। मैं शिक्षक होने के नाते उन बच्चों के लिए योजना बनाती जिनके साथ जुड़कर काम किये जाने की जरूरत होती। इन प्रक्रियाओं में एक साथ सभी बच्चों का अपने स्तर के अनुरूप सीखना सुनिश्चित हो रहा था जिसकी संतुष्टि मेरे लिए सर्वोपरि थी।

कुछ समय बाद मैंने भाषा के साथ–साथ गणित विषय पर भी बच्चों के साथ कार्य किया जाना तय किया।इसके लिए मैंने कक्षा 1, 2 के बच्चों के लिए अंक पहचान की योजना बनाई। अब यहाँ पर मैंने कंकड़ के माध्यम से गिनना और फिर अंक लिखना बताया जैसे– अंक 2 के लिए पहले 2 कंकड़ गिनकर फर्श पर रखे इसके बाद 2 लिखकर बताया कि 2 ऐसे लिखते हैं। इस गतिविधि से बच्चों में गणित के प्रति रूचि बनी रही और बच्चों की अवधारणात्मक समझ भी बन सकी। यह काम इसलिए किया कि गणित विषय बच्चे को अमूर्त में चिंतन करना सिखाता है लेकिन मूर्त से अमूर्त में ले जाने की सरल प्रक्रियाओं को लेकर चलने की जिम्मेदारी शिक्षक की होती है। इसलिए ही मैं बच्चों के साथ किये जाने वाले कामों में बच्चों का अधिकाधिक जुड़ाव और शुरुआत उनके अपने परिवेशीय चीजों के साथ से करती हूँ क्योंकि इस तरह से बच्चों को भी स्वीकार करने में आसानी रहती है और शिक्षक के लिए बच्चों के जुड़ाव को सुनिश्चित कर पाना आसान हो जाता है। धीरे–धीरे बच्चों में सीखने की ललक बढ़ी, रूचि बनी व गतिविधियों के साथ समझकर और सीखकर बच्चों ने लिखना भी शुरू किया।

3.2 सीखने का आनन्द

कविता शाह
पी.एस. आदिवासी बस्ती, वार्ड 2, निचला घण्टाला

बच्चों के छोटे–छोटे समूह में सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं का होना समूह के साथियों को एक दूसरे के साथ जुड़ने में सहयोग करता है और बच्चों को आपस में मिलकर एक दूसरे के साथ सीखने के अवसर मिल पाते हैं। और यह सही भी है कि अपने हमउम्र साथियों के साथ सीखना बेहतर भी होता है।

मैं राजकीय प्राथमिक विद्यालय आदिवासी बस्ती, वार्ड 2, निचला घण्टाला में पदस्थ हूँ। कोविड के दौरान हमारे विद्यालय में 57 छात्र छात्रा सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं के साझेदार बन सके हैं इन बच्चों के साथ मैं अकेले नहीं वरन हम तीन शिक्षकों ने अलग–अलग नवाचार किये हैं।

मुझे शुरू से ही लगता था कि बच्चों को भाषा सिखाने के लिए परम्परावादी और बोरियत भरा तरीका कभी सफलता नहीं दे सकता और सीखने की प्रक्रिया को बच्चों के लिए मजेदार भी होना चाहिए, बच्चों की रूचि बनाने वाली प्रक्रियाओं में बच्चे जुड़कर अगर आत्मसात करते हैं वही सही मायने में सीखना कहलाता है। इसी समझ के साथ मैंने हिन्दी भाषा के लिए बच्चों के साथ काम करते हुए सबसे पहले बच्चों के स्तर को जांचा और पता लगाया कि किन बच्चों को वर्ण की समझ नहीं है इन बच्चों का एक छोटा समूह बनाया अब इन बच्चों को वर्ण सिखाना मेरा लक्ष्य था। भाषा सीखने सिखाने के दौरान मेरा यह मानना है कि निरर्थकता भरे प्रयासों की बजाय सार्थक प्रयास ही कारगर होते हैं। अर्थात सीधे वर्णों को सिखाने की जद्दोजहद बोरियत भरी और उदासीनता को बढ़ावा देने वाली होती है और बच्चे सार्थकता के साथ कुछ भी नहीं सीख रहे होते हैं। अतः मैंने यह तय किया कि बच्चों की कक्षा रोचकता से भरपूर, परस्पर संवाद को बढ़ाने वाली और बच्चों के लिए मैंने वर्ण वार कुछ शब्दों का चयन किया जैसे कि क वर्ण की पहचान करवाने के लिए ककड़ी, कटोरी, कड़ाही कमल आदि ऐसे शब्द चुने जिनके प्रथम अक्षर बिना मात्रा के हों, शब्द सार्थक हों ताकि बच्चे बिना किसी उलझन के वर्ण पहचान कर सकें। (एक शब्द के लिए एक कार्ड) कुछ शब्द–चित्र कार्ड बनाये इस कार्ड के एक तरफ चित्र बनाया और दूसरी तरफ चित्र/चित्र में बनी वस्तु का नाम लिख दिया। इस तरह से पहले से ही तैयारी कर ली। इस प्रकार से बच्चों के साथ योजनाबद्ध तरीकों के साथ कार्य किया गया। बच्चों ने अपने आप ही पहले चित्र देखा उसे पहचाना, उसका नाम हिन्दी भाषा में जाना। इसके बाद बच्चों ने कार्ड की दूसरी तरफ लिखे उसके नाम की पहचान की। नाम की पहचान के बाद बच्चे ने इसकी पहली ध्वनि को अलग करना सीखा और इस ध्वनि से शुरू होने वाले नए और सार्थक शब्द पता लगाये।

भाषा का विकास एक प्रक्रिया

अंत में मैंने बच्चों को लिखकर यह बताया कि यह क है। पूरी प्रक्रिया एक ही दिन में नहीं हो सकेगी इसका मुझे आभास था और इसलिए ही इसके लिए पूरे एक सप्ताह की योजना मैंने बनाई थी जिसमे प्रक्रिया के अंत में बच्चों ने वर्ण सीख लिया इसी तरह से अन्य वर्णों को सिखाने के लिए भी कार्य किया गया।

इसके साथ ही मैंने बच्चों का एक और समूह बनाया जिनका स्तर उपरोक्त समूह के बच्चों से अलग था। इस समूह में ऐसे बच्चे थे जिन्हें लिखने के अभ्यासों से जोड़े जाने की जरूरत थी। मुझे ऐसा लगता था कि एक जैसा काम हमेशा माहौल को नीरस बना देता है और सीखने का काम करने में मन नहीं लग पाता। इसी सोच के चलते इन बच्चों के लिए योजना थोड़ी अलग तरह से बनाई। इन बच्चों को मात्रा का ज्ञान व शब्दों की पहचान हो सके इसलिए पुरानी किताबें उपलब्ध करवाई और इन किताबों में मात्रा के शब्दों और मात्राओं पर पेन्सिल फिराने का कार्य करवाया। इस समूह के बच्चों के साथ गीत कवितायें और हाव भाव और लय के साथ गाने का अभ्यास भी करवाया। इन सबका एक बड़ा परिणाम यह आया कि शुरू में बच्चे कम जुड़े हुए थे लेकिन धीरे–धीरे बच्चों की संख्या बढ़ने लगी। जो बच्चे नहीं आ रहे थे वे भी गतिविधियां देखकर सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं से जुड़ने लगे और इन बच्चों ने भी सीखने की इच्छा प्रकट की।

मैंने पाया कि काम के दौरान बच्चे तल्लीनता के साथ जुड़कर प्रक्रिया के अंत तक ध्यान पूर्वक कार्य कर पाते हैं और साथ ही लक्ष्य के अनुरूप सीख भी रहे हैं और इससे भी बड़ी बात कि बच्चे अपने लिए काम माँगने लगे हैं और बच्चे कार्य के प्रति एकाग्र होने लगे हैं। इसी क्रम में मैंने अब बच्चों को छोटे–छोटे शब्दों को बोलकर एक कागज पर लिखने का काम करवाया। बच्चे जब बोले हुए को वैसा ही लिख रहे थे जैसा मैं बोल रही थी तो उनको यह देखकर बड़ी खुशी हो रही थी कि वाह हम तो यह सब सीख और जान गए हैं। बच्चों की खुशी को देखकर मैंने अब बच्चों को अपनी योजनानुसार अगला कार्य सौंप दिया और बच्चों ने सहर्ष ही इस कार्य को स्वीकार भी कर लिया जिसमे सभी बच्चों को पांच–पांच लाइन रोज पढ़नी होती थी और आपस में चर्चा के माध्यम से समझ बनानी होती थी।

इसी प्रक्रिया में मैंने बच्चों को एक गतिविधि यह भी करवाई कि जिसमें सभी बच्चे अपने–अपने घरों से दो–दो चीजें लायें। सभी चीजों को एक साथ एकत्र किया गया। अब बच्चों से इन चीजों के नाम लिखने को कहा मेरी सोच के अनुसार बच्चों ने अधिकाँश नाम सही लिखे थे। इस तरह से भाषा की विभिन्न गतिविधियों के दौरान बच्चों ने आसानी से पढना और लिखना सीख लिया। पूरी प्रक्रिया कीअगर मैं समीक्षा करूँ तो परिणाम यह रहा कि बच्चों ने पूरी प्रक्रिया में अपना जुड़ाव बनाये रखा, बच्चों को काम करने में मजा आया, बच्चों की जिज्ञासा बनी रही और हर दिन विद्यालय आने के लिए बच्चों को स्वतः प्रेरणा मिलती रही साथ ही मुझे बच्चों के आत्म विश्वास का बढ़ता हुआ स्तर दिखाई दे रहा था। इतने फायदों के साथ मुझे नुकसान कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

3.3 भयमुक्त माहौल में बच्चे

गिरीशचन्द्र पण्ड्या
राजकीय प्राथमिक विद्यालय गणावापाड़ा

''भय'' बालमन के विकास में सबसे बड़ा बाधक है। बच्चे की जिज्ञासाओं, कल्पनाशीलता के विकास के मार्ग को अवरुद्ध करता है और साथ ही बच्चों को हीन भावना से भर देता है। इन सबसे परे शिक्षा को ऐसा होने की जरूरत है कि बच्चों को विचार तथा क्रिया की आजादी मिले और भावनात्मक विकास को बल मिल सके और एक स्वस्थ मानसिकता वाले समाज के निर्माण में संवेदनशील नागरिक का विकास संभव हो सके।

सत्र 2002 से गणावापाड़ा में शिक्षक के रूप में कार्यरत हूं। मैने प्रारम्भ में 4 वर्ष भवन विहीन विद्यालय का संचालन किया सरकारी जमीन का अभाव था। गांव में समुदाय के लोगों के साथ मिलना, बातचीत और बैठकों का आयोजन करके अभिभावकों को प्रेरित कर विद्यालय परिसर बन सके इसके लिए जमीनदान करवाई। अतः सत्र 2005–06 में विद्यालय भवन बनवाने के बाद से विद्यालय के छात्रों के लिए पढ़ाई की सुविधाएं बढ़ सकीं। तब से अब तक सत्र 2019 तक विद्यार्थियों की पढ़ाई निरन्तर निर्बाध रूप से हो रही थी मैं शुरू से ही इस बात में भरोसा करता था कि सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं के दौरान अगर भयमुक्त वातावरण होता है तो बच्चों में हीन भावना का विकास नहीं होता, बच्चा खुलकर सवाल करता है और बच्चे का सीखना बेहतर हो पाता है। परम्परावादी शिक्षण इन विचारों को कहीं भी जगह नहीं देता।

महामारी से बचाव भी आवश्यक था

मैंने विद्यालय में ही छात्रों के लिए स्टेशनरी बैंक स्थापित किया। जिससे छात्रों को घर से स्कूल बैग या किसी तरह की कोई शैक्षणिक सामग्री अपने साथ लाये जाने की जरूरत नहीं होती थी बच्चे खाली हाथ विद्यालय आते सारी सुविधाएं विद्यालय में ही उपलब्ध करवा रखी हैं और उपलब्ध सुविधाओं की मदद से सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं से जुड़ते थे।

लेकिन मार्च 2020 में अचानक वैश्विक महामारी ने सभी परिस्थितियों को बिगाड़ कर रख दिया। पूरे देश में लॉकडाउन लग गया। 24 मार्च 2020 से सभी विद्यालय भी बन्द कर दिए गए और इससे छात्रों की पढ़ाई बन्द हो गई। विद्यालय बंदी के सरकारी आदेश के चलते हमारे नियंत्रण में कुछ नहीं था। लेकिन इस महामारी के कठिन दौर में छात्रों से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखा और जैसे ही विभागीय आदेश आया घर–घर जाना और अभिभावकों से सम्पर्क बनाना चालू किया।

संपर्क के दौरान मैंने पाया कि समुदाय में इस महामारी को लेकर लोगों के मन में डर था अतः सबसे पहले इसी को लेकर कार्य योजना बनाई गयी। अब मैं समुदाय में जहाँ–जहाँ जाता महामारी से बचाव व सावधानी को लेकर बातचीत करता और स्वयं भी सावधानियों के साथ समुदाय संपर्क चालू रखता तथा धीरे–धीरे समुदाय में लोग आश्वस्त होने लगे। लेकिन यह बेहद जरूरी था कि लोग इसके अनुसार ही अपने जीवन में बदलाव सुनिश्चित करें इसके लिए मैंने मास्क बनाये जाने को लेकर योजना बनाई। कोविड से बचाव के लिए स्वयं ने घर पर ही मास्क बनाना प्रारम्भ किया। विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की सुरक्षा के लिए और इससे उनका डर भी निकले इसलिए प्रत्येक छात्र को मास्क वितरित किये। सार्वजनिक स्थान पर विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के अभिभावकों की बैठक बुलाई और सभी से बच्चों के साथ शैक्षणिक गतिविधियाँ किये जाने की सहमति ली गई। तत्पश्चात् घर–घर जाकर पढ़ाई प्रारम्भ करवाई गई। छात्रों कोरोना का डर निकाल कर पढ़ाई शुरू की गई।

शुरू से ही मैं अपने साथ लैपटॉप लेकर बच्चों के पास जाया करता था और इसे मैंने एक टूल की तरह काम में लिया। बच्चों को विडियो दिखाना उन पर चर्चा करने के काम करता था। इसके साथ ही बच्चों के स्तर को ध्यान में रखकर कुछ वर्कशीट पहले से ही तैयार करता और उन पर बच्चों से कार्य करवाता था मैंने अपने विद्यालय में जो कहानी और कविताओं की पुस्तकें थीं उनको भी बच्चों के लिए समुदाय में ले जाना शुरू किया और विभिन्न खेल और गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को जोड़कर शैक्षणिक कार्य करवाया। इन सब गतिविधियों का परिणाम यह हुआ कि बच्चे अपने आप आकर शैक्षणिक गतिविधियों से जुड़ने लगे नियत समय और स्थान पर स्वतः ही बच्चे एकत्रित हो जाते थे उन्हें बुलाने जाने की जरूरत नहीं होती थी।

बच्चों को गणित की गतिविधियाँ करवाने के लिए कुछ कंकड़ जुटाए। इन सभी कंकडों पर आयल पेंट किया और बच्चों के गिनने के लिए काम में लेना शुरू किया। कंकड़ गिनकर धीरे–धीरे इनको अंक पहचान की ओर ले जाया गया। शुरुआत में महामारी को लेकर समझ बनाये जाने का कार्य इतना बेहतरीन तरीके से हो गया कि आज भी विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के मन में से कोरोना महामारी का भय नहीं है। निरन्तर निर्बाध रूप से पढाई चल रही है।

विद्यालय में बच्चों को सीखने का आनंद मिल सके, बच्चे प्रकृति के नजदीक रहकर प्रफ्फुलित महसूस कर सके इस हेतु मैंने मेरे विद्यालय में 35 विभिन्न प्रकार की प्रजातियों के पेड़ पौधे लगाये हुए है। विद्यालय में लगातार किये गए प्रयासों का परिणाम है कि अध्ययनरत छात्र भयमुक्त माहौल को जी पाते हैं बच्चों के साथ अपनेपन का व्यवहार बना रखा है। ताकि उनके मन में किसी भी प्रकार की हीन भावना न रहे और इसका फायदा यह हुआ कि बच्चों के साथ मेरे रिश्ते दोस्त की तरह हैं। बच्चे अपनी हर तरह की समस्या को लेकर और खुलकर बातचीत कर पाते हैं और किसी भी तरह की समस्या का हम मिलकर और सोच समझकर समाधान निकालने का प्रयास करते हैं।

3.4 मुश्किल दौर के खास अहसास के साथ

जेमा वसुनिया
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लिमथान

जब शिक्षा का अर्थ बच्चों के जीवन में नए–नए अनुभव देना, पुराने अनुभवों में नए अनुभवों को जोड़कर समझ का विकास कर सके ऐसा माहौल और अवसर देना और साथ ही बच्चों की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करना होगा तभी सही मायने में बच्चों का बौद्धिक विकास भी हो सकेगा। एक जिम्मेदार शिक्षक ऐसा कर सकता है शिक्षक रचनात्मक प्रक्रियाओं को सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं का हिस्सा बनायेंगे तभी बच्चों में भी...

अपने अपने कला के कार्य का प्रदर्शन करने की खुशी

वर्तमान युग की जरूरत है कि वैचारिक रूप से लोगों में जो नकारात्मक रूप के क्रांतिकारी बदलाव आ रहे हैं उन्हें दिशा मिल सके, वे परम्पराओं के साथ जुड़ाव महसूस कर सकें और सकारात्मक दृष्टि से आनंद के साथ जीवन जी सके इन सबमें शिक्षक होने के नाते मेरी भूमिका को मैं खोज ही लेती हूँ। हर बार मेरा प्रयास होता है कि बच्चों के जीवन में मेरे विचारों और अनुभवों की तुलिका की मदद से ऐसे रंग भर दूं कि सड़ते–गलते शहरों और परित्यक्त गाँवों में ऐसे समुदाय बने और बचे रह सकें जो अपने ही जैसे कुनबे इस सोच और भावना के साथ बना सके कि ''मैं'' यहाँ का हूँ, ये मेरी जगह है और यहाँ के लोगों के साथ मिलकर इस जगह को एक बेहतर जगह बनाना है। इन्हीं विचारों के साथ उतार–चढाव देखते हुए मैं शिक्षक होने का अपना धर्म निभाए जा रही हूँ इस वक्त का सबसे मुश्किल दौर कोरोना के रूप में हम सबने जीया, जिसने एक बार को पूरी मानव जाति के जीवन को बदलकर रख दिया और जिसने मेरी विचार शैली पर भी प्रहार करने की कोशिश की।

कोरोना काल के समय विद्यालय पूरे–पूरे बन्द हो गए लेकिन बच्चों और शाला से जुड़े विचारों को अपने आप से अलग ना कर सकी। मुझे हर पल बच्चों की चिन्ता सताने लगी और घर में रहकर बिताये पलों में मैंने पल पल अपने बच्चों और शाला के बारे में सोचा और इंतजार किया मैंने ये समझा कि बच्चों के साथ होने पर तमाम तरह के मेरे अनुभव बच्चों की क्षमताओं का विकास करने में मेरी मदद करते हैं लेकिन क्या ऐसा भी समय आ जायेगा जब मैं इन बच्चों से इतना दूर हो जाऊँगी कि चाहते हुए भी कुछ कर ना सकूंगी यह सोचते हुए मैं अपने आप को असहाय सा महसूस करने लगती।

वक्त गुजरा और सभी शिक्षकों के लिए शालाओं में आने के अवसर आये लेकिन इन विचारों के साथ शाला पहुँची कि ऐसी शाला में आकर क्या फायदा जहाँ बच्चे ही नहीं है। एक ओर शाला आने की खुशी थी तो दूसरी ओर इस बात का दुःख कि जिस वजह से मुझे शाला में होना चाहिए वो वजह ही पूरी नहीं हो रही तो मुझे क्या करना चाहिए ?? शाला में आने के बाद लम्बे–लम्बे दिन बैठकर और यूँ ही गुजारकर घर चले जाना नहीं जमा। मैंने और साथी शिक्षक ने मिलकर इस समस्या को सुलझाने का फैसला किया। यह सही भी है कि सदिच्छा, जिज्ञासा, रूचि के साथ अकादमिक ज्ञान हमेशा सिरे से काम करता है।

सिखने का अभ्यास भाषा सीखने के चरण के रूप में

हमारा भी विवेक जागा और योजनाबद्ध तरीके से काम करने की शुरुआत की। सबसे पहले घर–घर जाकर अभिभावकों से सम्पर्क करना शुरू किया और लम्बा समय समुदाय में लोगों के साथ उन्हें यह अहसास दिलाते हुए बिताया कि मुश्किल समय जरूर है लेकिन अपनों के साथ होने से आसानी से गुजर जाता है और हम सब साथ हैं शाला में नहीं तो ना सही आपके साथ आकर भी तो बच्चों के लिए कुछ खास किया जा सकता है।

जिसका परिणाम कुछ ना सही यह जरूर मिल सका कि हमने बच्चों के दो समूह बनाकर और मौहल्लों में दो स्थानों पर अलग–अलग जाकर बच्चों के साथ वक्त बिताना तय कर लिया। बांसवाड़ा जिले के लिमथान ग्राम पंचायत में स्थित मेरा विद्यालय यहां पर सभी बच्चे अनुसूचित जनजाति के है तथा यहां पर बस्तियां बिखरी हुई हैं और बच्चों को एक साथ जोड़ पाने के लिए बीच का रास्ता निकालना ही एक उपाय हो सकता था। भले ही शाला में होना अच्छा होता है लेकिन आस–पास की दुनिया को देखने के लिए स्कूली व्यवस्थाओं से दूर जीवंत और सहज तरीकों से प्रकृति के साथ जुड़कर प्राकृतिक संसाधनों के साथ भी सीखने की प्रक्रियाएं की जा सकती हैं इस दौरान इस सीख ने जरूर बल पकड़ लिया था और फिर आगे की प्रक्रियाएं भी उसी ढर्रे पर चल निकली थी। बच्चों को सबसे पहले कोरोना के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी देना प्रारम्भ कर दिया। और सावधानियों के साथ कैसे जिया जा सकता है इसे जीवन का हिस्सा बनाना शुरू किया। और धीरे–धीरे इन सबसे अलग स्थानीय वातावरण की यानि स्थानीय परिवेश को साथ लेते हुए इसे ज्ञान के मोतियों में पिरोना शुरू किया। बच्चों के पूर्व ज्ञान, समझ और अनुभवों को इसका आधार बनाया।

शुरुआत में घर में पाले जाने वाले जानवरों के बारे में चर्चा करना और उनके नाम लिखना, परिवार के सदस्यों के बारे में बातचीत करना और उनके बारे में लिखना तथा खेतीबाड़ी (फसलों) की जानकारियों के बारे में खुलकर बातें की गईं बच्चे इतना खुलकर बातें करने लगे कि कोरोनाकाल में लॉकडाउन को लेकर जो अनुभव रहे वे भी खुलकर बिना किसी झिझक के बताने लगे बच्चों ने अपनी भावनाएं इस प्रकार अभिव्यक्त की कि मुझे ऐसा लगा कि समुदाय में आकर बच्चों के साथ वक्त बिताने का मेरा फैसला बिलकुल सही रहा जिसने मेरी कर्तव्यनिष्ठा को और अधिक बलशाली बना दिया। अब बच्चों के बारे में सोच सोच कर रचनात्मकता अपने आप अंगड़ाईयाँ लेने लगीं। मैंने अपने साथी शिक्षकों के साथ मिलकर बच्चों के लिए छोटी–छोटी कविता और कहानी के पोस्टर बनाये और चार्ट वर्णमाला के फ्लेश कार्ड के माध्यम से बच्चों के साथ सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को शुरू किया। जो कि अपने आप में पर्याप्त नहीं लग रहा था। मेरे लिए बच्चों का सीखना महत्वपूर्ण था जब मैं इस विचार के साथ होती तो एक साथ कई चीजें दिमाग में चल रही होतीं। विचारों के करवट बदलते ही तमाम चीजों को गायब और अपने आप से जुदा पाती। इसी क्रम में मैंने अपने सूक्ष्म विचारों को पकड़–पकड़ कर और लिखकर रखना शुरू किया। इन विचारों की तह में बच्चों का पूर्व ज्ञान, रूचि और आगे के लिए क्या प्रक्रियायें होंगी वे सब होती इसी तरह कदम दर कदम आगे बढ़ने लगे जहाँ मेरे आत्म विश्वास को आत्मनिर्भरता मिली और परिणाम स्वरूप बच्चे इन प्रक्रियाओं में धीरे–धीरे रूचि लेने लगे।

✦ हमने कार्य को विस्तार दिया था –

अक्सर यह होता था कि बच्चे सवाल पूछते थे और इन सवालों के आधार पर ही आगे की योजनायें बनती थीं, खोजबीन होती थी और सीखने का काम चलता था। बच्चों के साथ प्रकृति के साथ सिरे से अनुभवों को जोड़ते हुए आनंद के साथ गतिविधियों को करते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे मजेदार बात यह भी थी कि सभी कार्य समुदाय के बीच में होते थे इसलिए समुदाय का जुड़ाव अपने आप तय हो रहा था और इस जुड़ाव में समुदाय को भी यह समझ में आ रहा था कि वास्तव में महामारी के कारण स्कूल ना जाने से जिस गैप को बच्चों ने जिया है वह बच्चों के लिए सही नहीं था। बच्चों के साथ इस दौरान कई गतिविधियाँ की गईं जैसे–

1) बीजों और पत्तियों का संग्रह करवाया।
2) हिन्दी भाषा में मात्राओं की समझ का विकास करने के लिए के फ्लैश कार्ड के द्वारा मात्रा सिखाने का कार्य किया ।
3) जो बच्चे अक्षरों को मिलाकर नहीं पढ़ पा रहे थे ऐसे बच्चों को अक्षरों को जोड़कर/मिलाकर (जैसे अ+ब = अब) मिलाकर पहले मौखिक अभ्यास करवाया और भरपूर मौखिक अभ्यास के साथ शब्द को लिखकर अभिव्यक्त करने का अभ्यास भी करवाया इस दौरान इस बात का खास ख्याल रखा गया कि पहले बिना मात्रा के शब्दों के साथ कार्य किया जाए और इसके बाद में धीरे–धीरे इसी प्रक्रिया में मात्राओं के साथ आगे बढ़ सके। जिसमे तुकबन्दी करते हुए बच्चे अब, कब, जब, तब, आदि जैसे शब्द अपने आप बनाने लगे और बाद में ऐसे ही मात्राओं से बनने वाले तुकबंदी शब्द बनवाए।
4) बच्चों के लिए इस प्रकार के आम, नाम, काम, दाम, काका, नाना, माना, दिल, बिल, किल आदि के फ्लैश कार्ड भी बनाये।

सभी इंसान चिंतन अमूर्त में करते हैं। लेकिन बच्चे के लिए अमूर्त में चिंतन कर पाना मुश्किल होता है। शाला में गणित एक मात्र ऐसा विषय होता है जो कि बच्चों को अमूर्त में चिंतन करना सीखने में मदद करता है लेकिन इसके लिए शर्त है कि शुरू में बच्चों के साथ इसको मूर्त रूप में जोड़ा जाए ताकि बच्चे उसमें रूचि ले सकें, बच्चे डरें नहीं और बेझिझक स्वतः ही आगे आकर मजे के साथ गणित विषय के साथ वक्त बिताये। इन सबमे शिक्षक की समझ ही काम कर सकती है। इन सभी विचारों के साथ मैंने गणित में गिनती माला के साथ बच्चों को गिनती सम्बन्धित काम करवाना शुरू किया तथा कंकड़ और अन्य ठोस सामग्री को भी इस प्रक्रिया का हिस्सा बनाया। जिसे बच्चों ने आनंद के साथ आत्मसात किया।अंग्रेजी भाषा की समझ का विकास करते हुए मैंने बच्चों के लिए अंग्रेजी में कुछ फ्लैश कार्ड बनाये और इनके माध्यम से अंग्रेजी भाषा के साथ बच्चों को सहज किया।

इसी तरह से मेरे अनुभव में यह भी था कि पुस्तकालय की पुस्तकों से अगर मदद ली जाए तो ये बच्चों की भाषा को विकसित करने में बहुत मदद करते हैं। पुस्तकें इंसान की दुनिया में बदलाव लाने का एक जरिया हो सकती है जिसे विद्यालयों में तो जरूर ही जगह मिलनी चाहिए। लेकिन वर्तमान परिद्रश्य में इस विचार के साथ मंथन करते हुए काफी समय गुजारा अंततः मैंने यह तय किया कि पुस्तकालय की पुस्तकों को तो मैं बच्चों के जीवन में शामिल करूंगी ही सही। इस विचार के साथ ही मैंने और साथी शिक्षकों ने अपने–अपने साथ विद्यालय से पुस्तकें लाना शुरू किया और बच्चों को इन पुस्तकों के साथ वक्त बिताने के लिए प्रेरित किया। कई बार मैं किसी पुस्तक से पढ़कर कहानी सुनाती, कई बार बच्चे यह बीड़ा उठा लेते थे लेकिन एक समय बाद मैंने बच्चों को इन पुस्तकों के साथ संवेदनशील होते हुए देखा। इन पुस्तकों को बच्चे सहेज कर रखना और अदल बदल कर इनके साथ वक्त गुजारना पसंद करने लगे। साथ ही पुस्तकों की मदद से बच्चों में मानसिक विकास और कल्पना शक्ति का विकास भी हुआ और इससे भी जरूरी चीज जो हो सकी कि बच्चों में पढ़ने की रूचि उत्पन्न हुई।

3.5 बाल अधिकारों का बयाँ कुछ इस तरह

दमयंती देवड़ा
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, श्रीराम कॉलोनी, पल्ली मीणा, बांसवाड़ा

बच्चे ऐसे माहौल में अधिक सीखते हैं जहाँ उनको ये लगे कि वे महत्वपूर्ण समझे जाते हैं। यह अति महत्वपूर्ण बात है कि बच्चे अपने विद्यालयों में यह महसूस करें कि प्रत्येक बच्चे का घर, समुदाय, भाषा, संस्कृति को महत्व मिल रहा है बच्चों की अलग–अलग क्षमताओं को स्वीकार किया जाना और इसे भी स्वीकार किया जाना बेहद जरूरी है कि ज्ञान का निर्माण करना, अपने हुनर का विकास करना और अपनी आधारभूत जरूरतों को पूरा करना बच्चों के अधिकारों में से एक है।

महामारी के दौर ने मानवीय जीवन के हर पहलू पर नकारात्मक असर छोड़ा है। सबसे प्रतिकूल असर झेला हमारे बच्चों ने। कोविड–19 के कारण सभी विद्यालय बंद हो गए, शारीरिक दूरियों के कारण रिश्तेदारों से मिलना–जुलना, दोस्तों और सहपाठियों से मेल–जोल और बातचीत भी बंद हो चुकी थी। बच्चों की दुनिया अपने अपने घरों तक सिमट कर रह गयी थी और सिर्फ अपने परिवार के सीमित सदस्यों के साथ समय व्यतीत करते बच्चे परिणामतः बच्चे ना तो कुछ नया सीख पाये ना ही पहले से सीखे हुए या देखे हुए पर बातचीत कर पाए। चूँकि बच्चों की प्रकृति ही बोलते रहने की होती है और बोलने के अवसर तलाशते बच्चों का मुख्य चाव रहता है, कब बोलूं? यानि खूब खूब बातें करते बच्चे। ऐसा मैं इस आधार पर कह रही हूँ क्योंकि महामारी के दौरान जब सभी विद्यालय बंद थे और शिक्षकों ने मिलकर समुदाय स्तर पर बच्चों के साथ सीखने सिखाने की गतिविधियों का आयोजन करने की योजना बनाई। पहली बार बच्चों से मिलकर ऐसा लग रहा था कि सहमे–सहमे और चुपचाप बच्चों का आत्म विश्वास कहीं खो गया है। हम यह कह सकते हैं कि महामारी के इस दौर में मुख्य रूप से सहभागिताअभिव्यक्ति के अधिकार का हनन हुआ है। लॉकडाउन की परिस्थितियों को देखते हुए और बच्चों की स्थिति का अनुमान लगाते हुए हमसोच सकते हैं कि जब बच्चा नियमित रूप से विद्यालय आकर भी सीखी हुई कुछ ही चीजों को याद रख पाता है और कुछ भूल जाता है तो फिर जब वह विद्यालय से दूर अपने साथियों, खेलों, गतिविधियों और सीखने–सिखाने के माहौल से भी दूर किस मनोस्थिति में रहा होगा, कल्पना से परे है। कोविड 19 के कारण बच्चों का विद्यालय से दूर होना, बच्चों का विद्यालय न आना बच्चों तथा शिक्षकों दोनों के लिए हानिप्रद रहा। बच्चों के सीखने में और पहले के स्तर में तुलनात्मक रूप से बहुत अन्तर आ गया बहुत जरूरी था इस अन्तर को पाटना तथा वापस विद्यालय में आने में उनकी रूचि जागृत करने तथा उस रूचि को बनाए रखने के प्रयास करना, बच्चे जो एक दूसरे से भी दूर हो चुके थे उन्हें आपसी बातचीत करने, सीखने, खेलने, अभिव्यक्ति के अवसर देना समुदाय स्तर पर जो प्रयास किये गये उनका मुख्य उद्देश्य रहा।

तल्लीनता के साथ कहानी सुनते हुए बच्चे

रंगों का सुनियोजित संयोजन

इस प्रक्रिया में बच्चों के बीच चित्र, कार्ड्स, कहानी कार्ड्स, पजल्स आदि ढेर सारी सामग्री की मदद से और उनके साथ बातचीत करते हुए, अपने अनुभव सुनाना और उनके अनुभव सुनते हुए, साथ ही कहानी सुनना और सुनाना, हाव भाव के साथ मिलकर कविता गायन करना, बड़े ही सुखद अहसास से भर देते थे। कुछ वर्ण कार्ड्स, रंग–बिरंगी चित्रों से भरपूर कहानियों और गीत – कविताओं की पुस्तके, चित्र, कार्ड्स, कहानी कार्ड्स, पजल्स आदि पारीख चरिटेबल ट्रस्ट से प्राप्त हुए जिनका भरपूर इस्तेमाल बच्चों को मुखर होने और सीखने के काम में किया गया।

एक शिक्षिका के रूप में अलग–अलग तरह के सवाल दिमाग में थे जैसे कि जब बच्चे विद्यालय आने लगेंगे तब अपने साथियों, शैक्षिक, सहशैक्षिक गतिविधियों से पुनः जुड़ाव किस प्रकार किस माध्यम से स्थापित कर पाएंगे और इस सवाल के समाधान के रूप में मुझे पुस्तकालय की पुस्तकों का उपयोग करने का विचार सूझा मैंने बच्चों को समुदाय स्तर पर ही पुस्तकालय की पुस्तकों के साथ एक सहज और आत्मीय रिश्ता बनाने में मदद की और जब वे विद्यालय आए और अपने साथी मित्रों से मिले तब उनका मन प्रफुल्लित हुआ और शुरू हुआ न रुकने वाली बातों का सिलसिला और इसी सिलसिले को बनाये रखने के लिए सीखने की प्रक्रिया से जोड़ना शुरू किया पुस्तकों, चित्रों, कहानियों, कविताओं ने जो बच्चे विद्यालय में प्रथम आ रहे थे और जो पुराने बच्चे सभी का उत्साह काबिले तारीफ रहा। उनका चित्रों पर बातचीत, कहानी को पढ़ना ना जानते हुए भी कहानी के चित्रों को देखकर नई कहानी गढ़ना मन को एक असीम आनन्द से भर गया। लिखित अभिव्यक्ति के लिए सफल प्रयास जारी हैं परन्तु अभी जो खुलकर मौखिक अभिव्यक्ति बच्चे देने लगे हैं वो एक सुंदर और अलौकिक अनुभव प्रदान करता है।

मनपसंद कहानी को मिलकर पढ़ने का स्व निर्णय

बच्चे मौखिक अभिव्यक्ति के साथ ही लिखकर अपने विचार अभिव्यक्त करने लगें इस लक्ष्य को बनाये रखा और बच्चों ने विद्यालय में आना शुरू कर दिया बच्चों के साथ पुस्तकों के चित्रों पर बातचीत की जाती, परन्तु जो बोला जा रहा है उनकी समझ बनाते हुए उन्हें लिखा जाना भी सीखने की प्रक्रिया हेतु आवश्यक है और इस हेतु बच्चों को लिखने के लिए प्रेरित करना, उनको दीवारों, फर्श, श्यामपट्ट पर लेखन विकास के अवसर के सायास प्रयासों में शामिल था महामारी ने वापस अपनी ताकत दिखाई और पुनः विद्यालय में बच्चों का आना बंद कर दिया गया पर लक्ष्य अभी भी अपनी जगह पर स्थिर और अटल था बच्चों की अभिव्यक्ति का विकास मौखिक रूप से और लिखित रूप से, स्थितियाँ कैसी भी हों नई कार्ययोजना बनेगी और प्रयास इस हेतु को पूरा करने के ही होंगे क्योंकि मुझे लगता है कि बच्चों को अवसर और माहौल मिलना ये 2 विकल्प ऐसे हैं जो उनकी मौलिकता का विकास कर सकते हैं और इसी क्रम में रूचिपूर्ण विडिया बनाकर बच्चों के साथ साझा करना, अखबार को सीखने का माध्यम बनाना, अन्य संदर्भ पुस्तकें, चित्र, कार्ड्स की मदद लेते हुए बच्चों की रूचि बनाने और उनके अनुभव, विचार, व्यक्तिगत राय को प्रमुखता सुनिश्चित करने के सीमित प्रयासों के साथ मैं एक बार फिर से बच्चों के साथ खड़ी थी।

समुदाय के लोगों ने इस पूरी प्रक्रिया में मिला–जुला सहयोग दिया उन्होंने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने में और समुदाय स्तर पर सीखने के प्रयासों में अधिकाधिक बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित किये जाने में मदद की। साथ ही उनकी बातचीत के अवसरों को उन्होंने विद्यालय में आकर कभी–कभी साझा भी किया। बच्चों के सीखने, बोलने की लगन पर अभिभावक प्रसन्न भी दिखाई देते थे।

बच्चों की कहूं तो उनको तो पुस्तकों में एक नया संसार मिल गया। चित्रों को जोड़ना, उनके बारे में बातें करना, अपने अनुभव सुनाना तथा दूसरे के विचारों, अनुभवों पर अपनी बात कहना एक खुशनुमा माहौल बना जाता है। जो बच्चे नियमित आते वे अपने साथियों को भी अपने अनुभव सुनाकर अपने साथ लाने का निरन्तर प्रयास करते इस प्रकार विद्यालय में नामांकित सभी बच्चे अपने–अपने प्रयास करते हैं तथा मौखिक अभिव्यक्ति के साथ–साथ लिखित अभिव्यक्ति पर भी जोर देते हैं।

कोविड–19 के दौरान विद्यालय में रंग रोगन का कार्य भी किया गया जो भी बच्चों तथा अभिभावकों को रूचिकर लगा। हमने बच्चों के लिए दीवारें जो श्यामपट्ट के रूप में रंगवाई है इन पर बच्चे लिखना, चित्र बनाने का कार्य करते हैं और ये कार्य करना बच्चों को रूचिकर लग रहा है। बच्चे जब विद्यालय आते हैं अपना–अपना स्थान निर्धारित कर बैठ जाते हैं और इन श्यामपट्ट रूपी दीवारों पर लिखने का प्रयास भी करते हैं।

एक शिक्षिका के नाते स्वयं के प्रयास, बच्चों की रूचि तथा विद्यालय का सुरम्य तथा सुरक्षित माहौल बच्चों को सीखने तथा शिक्षकों का उन बच्चों से सीखने सिखाने का अद्भुत वातावरण बनाता है। प्रयास करने से सफलता मिलती है तो बच्चों के साथ शिक्षक भी प्रसन्नचित महसूस करते हैं।

3.6 हमारा विद्यालय परिवार रूपारेल

दिलीप कुमार प्रजापति
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रूपारेल छापरिया

बच्चों ने जो अब तक सीखा हुआ है इसका पता शिक्षक को होना जरूरी है तभी शिक्षक इन बच्चों को आगे क्या सिखाना है यह तय कर सकेगा साथ ही यह भी जरूरी है कि शिक्षक की योजना में यह शामिल हो कि बच्चे जो भी नया सीखेंगे उसके लिए प्रयास बच्चों के अपने होंगे जब तक बच्चे इस नयेपन को चुनौती के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे तब तक बच्चों का सीखना संभव ना हो सकेगा।

विज्ञान ऐसा विषय जिसे करके सीखा जाता है

मुझे लगभग 3 वर्ष हो चुके मेरे विद्यालय में पदग्रहण करके, बच्चों के समग्र विकास के लिए मैं शुरू से ही अपने कार्य और भूमिका को लेकर उत्साहित था और अपने विद्यालय में दिन प्रतिदिन कक्षा–कक्ष शिक्षण में नित नये नवाचार करके बच्चों का शैक्षिक स्तर, ज्ञान, मानसिक स्तर वृद्धि करना मेरी पहली प्राथमिकता थी। इसी पहली प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए सबसे पहले मैंने मेरे विद्यालय परिवार के बच्चों के साथ कक्षा कक्ष शिक्षण में गतिविधि आधारित, खेलों का आयोजन करके विषयवस्तु की समझ विकसित करना, गणित–विज्ञान में बच्चों की बाल वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु एक छोटे कमरें को प्रयोगशाला के रूप में बदलने का कार्य किया जिसमें कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों को गणित–विज्ञान की पाठयपुस्तक के ज्ञान को दैनिक जीवन के से जोडकर प्रयोग कर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को शुरू किया। मैं उत्साहित था कि जैसा मैने सोचा था ठीक वैसे ही बच्चे अपने प्रयासों द्वारा विषयवस्तु की अवधारणा से परिचित हो रहे थे। ये तमाम प्रयोग करने से पहले मैंने विद्यालय परिवार के साथ विचार विमर्श करना भी जरूरी समझा था। इंसान प्रकृति के नजदीक होने पर सबसे अधिक खुश रहता है और बच्चों को भी प्रकृति के नजदीक रहने से बहुत कुछ सीखने में मदद मिल सकती है। इन्हीं विचारों के चलते मैंने विद्यालय को हरित विद्यालय एवं सुन्दर बनाने के संकल्प के साथ लगभग 200 पौधे रोपित कर विद्यालय को हरियाली ही हरियाली से आच्छादित कर दिया। जिससे बच्चों को सुन्दर वातावरण में पढ़ने–लिखने का मौका मिल सके और प्राकृतिक परिद्रश्य में बच्चे आनन्दमयी और मनोरंजक माहौल के साथ सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को जी सके साथ ही कक्षा–कक्ष शिक्षण में गणित–विज्ञान की प्रयोगों में खुले वातावरण और प्रयोगशाला में बच्चे अपनी समझ विकसित कर सकें। 3 वर्षो से कक्षा–कक्ष शिक्षण कार्य चल ही रहा था कि सन् 2020 के जनवरी माह में भारत वर्ष सहित पूरे विश्व को वैश्विक महामारी कॉविड–19 ने अपनी चपेट में ले लिया जिसके कारण पूरे भारतवर्ष में लॉकडाउनध्कर्फ्यू जैसे हालत हो गये। जिसमें शहरों, गांवों, कस्बों में सब कुछ बंद कर दिया गया। ऐसी स्थिति में विद्यालय भी बन्द होना स्वाभिविक ही था । अब मैं दो चुनौतियों के साथ खड़ा हुआ सोचने को मजबूर हो गया था। पहली तो स्वयं को बचाते हुए इस वैश्विक महामारी से सुरक्षित रखना और दूसरी अपने विद्यालय के परिवार के बच्चों का सीखना सुनिश्चित करना जिनके लिए स्कूल अब बन्द हो चुके थे। मैं विकल्प तलाशने में जुट गया। स्थितियाँ ऐसी थीं जिनके चलते मैं बच्चों से सम्पर्क तो नहीं कर सकता था क्योंकि लॉकडाउन में सब कुछ बंद था।

प्रोजेक्ट से जुड़े कार्य जिनमें बच्चे रूचि और आनन्द के साथ जुड़कर कार्य करते हुए

पहला विकल्प ऑनलाईन कक्षाओं का आयोजन करना था। मैंने अपने बच्चों का समूह बनाने के लिए उनके परिवार के सदस्यों और आस–पड़ौस के अभिभावकों के रूप में वाट्सअप ग्रुप का निर्माण ''अपने बच्चों की अनूठी शिक्षा'' के शीर्षक के साथ किया और बच्चों को रोजाना विज्ञान और गणित विडियो बनाकर भेजता था और वही विडियों मैंने ब्रज उदयपुर को ईमेल के माध्यम से भेजता था। बच्चों को वाट्सअप ग्रुप में ही सभी विषयों का गृहकार्य देना शुरू किया। बच्चों को गृहकार्य करके वापस वाट्सअप ग्रुप ही भेजना आरम्भ हुआ। मैं एक जज्बे के साथ जुड़कर मोटीवेशन के रूप में कार्य कर रहा था।

जुलाई 2020 के बाद शिक्षकों का विद्यालय में आना शुरू हुआ। जिसमें मैंने राज्य सरकार के आदेश के तहत ही बच्चों के घर–घर जाकर प्रत्येक बच्चे को होमवर्क देना और उनका हौसला बनाकर प्रेरित करते हुए उनके शैक्षणिक स्तर को बढ़ाने का कार्य कर रहा था। लगातार प्रयास करने का नतीजा यह निकला कि ऑनलाईन शिक्षण सामग्री के साथ अब ऑफलाइन सामग्री से भी बच्चे जुड़ चुके थे। मैं समुदाय में किसी निश्चित गांव की तय जगह पर बाल गीत और अन्य गतिविधि कराने का प्रयास भी साथ–साथ में कर रहा था। विद्यालय में लाइब्रेरी की पुस्तकों का प्रयोग भी इस दौरान कर रहा था। लेकिन फिर भी समय और धन अभाव में कुछ बच्चे मुझसे दूर थे। उनकी चिंता मुझे सता रही थी। जब भी समय और अवसर मिलता तो उनके अभिभावकों और सदस्यों से वार्ता कर उनका समाधान करने का प्रयास कर रहा था। राज्य सरकार के स्माइल प्रोग्राम ने बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने में इस समय में मेरा साथ दिया और मैं दृढ़ विश्वास के साथ कार्य करने लगा। इसी दौरान गांव के ही 10वीं के बच्चों की गणित की आवश्यकताओं को देखकर मैंने लगभग 4–5 माह के समय में सम्पूर्ण पाठ्यपुस्तक का पाठ्यक्रम बच्चों को करवाया। जिसकी न्यूज समाचार पत्रों में भी छपी थी। कोविड–19 की दूसरी लहर आ गई और पुनः विद्यालय बन्द हो गये। पूर्व नियोजित कार्य के अनुसार वापस से मैंने ऑनलाईन विडियो बनाकर बच्चों को भेजना और होमवर्क भेजना शुरू किया और बच्चों ने अपना होमवर्क करके उनके फोटो खींचकर भेजें। मैंने उन बच्चों के सीखने को भी अपनी प्राथमिकता के दायरे में रखा जिनके पास ऑनलाइन शिक्षण संसाधन अर्थात मोबाइल और इन्टरनेट की सुविधाएं नहीं थीं मैं नियमित रूप से उनके घर जाकर प्राथमिकता के साथ उनके लिए कार्य करता।

सितम्बर 2021 में विद्यालय पुनः खुल जाने के कारण कक्षा–कक्ष शिक्षण और भी वे बच्चे चुनौतियों का सामना कर रहे थे जो कि इस दौरान हमसे जुड़े हुए नहीं थे। अब मेरे लिए चुनौती यह थी कि उनको विद्यालय के वातावरण से जोड़ना था विविध गतिविधियों के माध्यम से यह कार्य भी मैंने साथी शिक्षकों के साथ मिलकर किया। विद्यालय में अतिरिक्त गतिविधियां और मनोरंजक खेल आधारित शिक्षण करवाने से बच्चों के शैक्षिक स्तर बनाने और सुधारना एक नींवं का पत्थर साबित हुआ। विद्यालय में और अधिक मनोरंजक और रूचिपूर्ण बनाने हेतु मैंने स्वयं के प्रयास से विद्यालय प्रोजेक्टर LED के माध्यम से मनोरंजन के साथ बालगीत, वर्णमाला, अंग्रेजी के वर्णमाला (अल्फाबेट) अंग्रेजी की कविताएं, नैतिक शिक्षा और संस्कार हेतु कहानियों और गीतों स्मार्ट क्लास के रूप में बनाकर उनके ज्ञान और शैक्षिक स्तर को बठाने का प्रयास कर रहा था। उसकी मुझे सफलता मिली। इस प्रक्रिया में मुझे मेरे परिवार विद्यालय का सहयोग काफी रहा।

3.7 सीखने के स्तर को बनाये रखना

दीपक जैन
राजकीय प्राथमिक विद्यालय देवगढ़

बच्चों के लिए विविध गतिविधियों को सीखने के रूप में शामिल करने से शिक्षक को यह मौका मिलता है कि समूह के प्रत्येक बच्चे पर ध्यान दे सके चूँकि प्रत्येक बच्चे की सीखने की जरूरतें अलग–अलग हो सकती हैं ऐसे में शिक्षक के रूप में यह सोचा जाना जरूरी हो जाता है कि बच्चे को सीखने के अनुकूल मौकाध्अवसर, माहौल सुनिश्चित कर सके ताकि सीखने में बच्चे अपने स्तर और गति के अनुसार आगे बढ़ सके।

कोरोना काल में हमेशा चिंता का विषय बना रहता था कि हम कैसे बच्चों तक पहुँच पायें एवं शिक्षा के उनके अधिकार को सुनिश्चित करते हुए सीखने–सिखाने की गतिविधियों से बच्चों को जोड़ सकें। शिक्षक के नजरिये से मेरी यह सोच रही है कि बच्चों के पास जो ज्ञान है, उन्होंने जो सीखा हुआ है उसमें थोड़ी और वृद्धि एवं विकास हो यदि बच्चा नया कुछ नहीं सीख रहा है तो कम से कम जिस स्तर पर वह है उस स्तर पर तो बना रहे, पहले से सीखी हुई चीजों को वह भूले नहीं अगर मैं ऐसा कर पाने में सफल होता हूँ तो यह मेरे लिए एक उपलब्धि होगी। इसी दौरान मेरी बात शिक्षक विजय प्रकाश जी जैन से हुई तो उन्होंने बताया कि मैं घर–घर जाकर बच्चों के लिए कुछ पोस्टर लगाकर और पुस्तकालय की कुछ पुस्तकें देकर आया हूं ताकि बच्चे अपने घर के आस–पास और घर में भी कुछ सीखते रह सकें।

मुझे शिक्षक विजय जी द्वारा किये गए प्रयास अच्छे लगे और मैंने भी बच्चों के लिए कुछ ऐसे चित्रों,शब्दों और वाक्यों और छोटी छोटी कविताओं के चार्ट, पोस्टर तैयार किये जिन्हें विद्यालय से परे बच्चों के परिवेश के आस–पास ऐसी जगहों पर लगाया जा सके ताकि बच्चे उन्हें लगातार देखते और पढ़ते रहें मतलब बच्चों के ध्यान में ये चीजें बनी रहें। साथ ही पुस्तकालय से कुछ पुस्तकों का चयन मैंने बच्चों के स्तर को ध्यान में रखते हुए किया और समुदाय में बच्चों के पहुंचना शुरु किया।

चित्र देखकर कहानी सुनना छोटे बच्चों की पसंद के कार्यों में से एक कार्य

व्यक्तिगत रूप से सीखना सनिश्चित करना भी आवश्यक है

मैंने महामारी के इस दौर को इस तरह से स्वर्णिम काल की तरह देखा जिसने मुझे समुदाय के साथ जुड़ने का अवसर दिया। वहां मैं एक–एक मकान पर 20–25 बार पहुंच पाया। वहां के परिवारों के परिवेश एवं वातावरण को समझ पाया कैसे लोग कठिन चुनौतियों के साथ अपना जीवन यापन कर पा रहे हैं। इन कठिन परिस्थितियों में बहुत कम सुविधाओं में बच्चे पढ़ने आ रहे हैं। । उन परिवारों में जाकर काम करना शुरू किया। जहाँ पर मेरे लिए घर–घर जाकर पढ़ाना मुश्किल सा काम था वहाँ के लिए मैने तय किया कि जिस ढाणी, फले या मौहल्ले बच्चों के पढ़े लिखे बड़े भाई बहिन हो उनसे बातचीत की जाये और उनका सहयोग लिया जावे। तो मेरा काम सरल हो जाएगा। मैंने यही किया तो मुझे गांव में चार बच्चों ने सहयोग किया और बच्चों को पढ़ाने में मदद भी की। दूसरी ओर समुदाय के लोगों ने अपने घर के परिसर में स्थान दिया और मेरा काम आसान हो गया हम 2 से 3 घण्टे लगभग कक्षा चलाते थे । इस तरह से मेरा समुदाय के साथ भी जुड़ाव बढ़ा।

बच्चों की शैक्षणिक गतिविधियों के आयोजन के लिए मैंने विभिन्न सामग्री जैसे – चार्ट, गत्ते के टुकड़े, पोस्टर, मोबाइल, पुस्तकालय की पुस्तकें और अन्य सम्बन्धितपुस्तकों की मदद ली ताकि इन खास चीजों और नवाचार से मेरा लक्ष्य पूरा हो सके मैं बच्चों के शैक्षणिक स्तर को बनाये हुए रख सकूँ। बच्चे चित्रकारी भी सीख रहे थे, चार्ट पर काम करने से बच्चे चार्ट की लम्बाई चौड़ाई को माप कर और हिसाब से बराबर खानों में किस प्रकार बांटा जाए इसे लिखकर अभिव्यक्त कर पा रहे थे। इससे बच्चे गणित व हिन्दी दोनों पर काम कर पा रहे थे इसके साथ ही साथ जो बड़े बच्चे छोटे बच्चों के साथ सीखने सिखाने की गतिविधियों से जुड़े हुए थे उन बड़े बच्चों को पढ़ने का तरीका आया। हालाँकि यह कोरोनाकाल खराब समय था लेकिन फिर भी निष्कर्ष के रूप में ये कहूँगा कि इस समय ने मुझे समुदाय से जुड़ने में और समुदाय के नवयुवकों से जुड़ने में बहुत मदद की, बड़े भाई–बहिनों ने अपने छोटे भाई–बहिन के साथ सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं से जुड़कर जिम्मेदारी के अहसास के साथ शिक्षा के प्रति जागरूक हुए। महामारी के दौर में सामुदायिक स्तर पर बच्चों के साथ जुड़कर लर्निंग गैप कम करने, बच्चों को मुखर रखने के साथ साथ समुदाय के साथ जो मेल जोल बढ़ा और एक बेहतर रिश्ता समुदाय के साथ स्थापित हो सका इन सबका सकारात्मक असर मुझे आज भी मेरे विद्यालय में दिखाई दे रहा है।

3.8 रचनात्मकता के अद्भुत अनुभव –

दीपमाला
राजकीय प्राथमिक विद्यालय कालीकुंड

अपने विचारों को देख पाना,उन्हें क्रमबद्ध तरीके से संजोना लिखना इन दोनों कार्य में काफी सहयोग करता है।यदि एक शिक्षक लेखन को अपने जीवन का हिस्सा बना लेता है तो इसका सीधा असर उन बच्चों पर दिखाई देगा जिन बच्चों के साथ वो शिक्षक के रूप में जुदा हुआ है निश्चित ही इस शिक्षक के बच्चे चिन्तन और मनन करने वाले मूल्यों को अपने जीवन में संजो सकेंगे।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, कालीकुंड बाँसवाड़ा जिले का एक ऐसा विद्यालय जहाँ पर शिक्षिका के रूप में जुड़कर अपना योगदान सुनिश्चित कर पा रही हूँ मैं एक शिक्षिका होने के कारण रचनात्मकता के साथ अद्भुतअनुभव के साथ बच्चों के आत्म विश्वास बनाने बच्चों को जिज्ञासु बनाने और स्वभाव से निडर बनाने में सहयोग कर सकूँ। इन्हीं विचारों को साथ लेकर मैं आगे से आगे बढ़ती चली जा रही थी।कई शिक्षक साथी मेरे साथ जुड़े और साथ ही काफी बच्चों के साथ जुड़कर मेरे जीवन के अनुभवों ने विस्तार लिया। कोविड़ 19 के रूप में महामारी के दौर ने दुनिया में तबाही मचानी जो शुरू की थी उसने चहुँओर विकराल रूप में विनाश कर मानव जीवन को अस्त व्यस्त कर दिया था। प्रभाव पूरी तरह से मेरे विद्यालय पर पड़ा विद्यालय, बच्चे और शिक्षक साथी सभी से अलग थलग सब अपने अपने घरों में कैद होने को मजबूर हो गए और इस विवशता,मजबूरी और तबाही के मंजर ने बाल्यावस्था के साथ साथ ही हर उम्र पर अपना नकारात्मक दबाव बनाया। जिसे घरों में कैद होने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा था।

सरकारी आदेश के चलते एक लम्बा समय घरों में रहकर बिताने की विवशता हर उम्र के लोगों ने झेली थी और इस विवशता के बाद जैसे ही थोड़ी छूट सबको मिल सकी सभी अपने अपने अनुसार अलग–अलग जगहों की तरफ दौड़ पड़े सबने अपने आस–पास और दूर दूर तक के क्षेत्रों में नजरें घुमाने की आतुरता के साथ घरों से बाहर निकलकर प्रकृति के विकराल रूप के अनुभवों को आतुरता और व्याकुलता के साथ साझा करने की व्यग्रता को भी झेला।

बिना शिक्षक के भाषा से रूबरू होते बच्चे

सरकारी आदेश में एक खुशी की बात तो यह थी कि हम सब शिक्षक विद्यालय आ सकते हैं लेकिन बच्चों के लिए अभी भी विद्यालय चालू नहीं हुए ऐसे में विद्यालय जाने पर मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कि किसी जिन्दा इंसान में आत्मा नहीं होना। मैं भी अपने विद्यालय पहुँची कुछ दिनों तक तो कुछ बचे हुए कामों को निपटाने में बिताये लेकिन इसके बाद क्या ??

जैसे ही अपने बचे हुए काम पूरे हुए बच्चों के बिना विद्यालय खाने को दौड़ता। यहाँ पर ठहरने का बिलकुल मन नहीं करता। बार–बार बच्चों के बारे में सोचकर व्यग्रता बढ़ जाती। क्या किया जाए और कैसे किया जाए के रूप में बड़े बड़े प्रश्न मुह बाए खड़े थे। और किसी भी तरह से खुद को रोक पाना मुश्किल हो रहा था। इसी ऊहापोह में मैंने मन बनाया कि बच्चों से मिलकर आती हूँ और समुदाय के हाल–चाल भी जान लेती हूँ और घूमते घूमते बच्चों के घरों पर पहुँच गयी। एक बार को तो सभी लोगों ने दूरी बनाते हुए और अचरज के साथ मेरी ओर देखा और सवाल भरी नजरों के साथ यह अहसास करवाया कि मैडम ऐसे मुश्किल दौर में आप यहाँ क्यों ? अगले ही पल उन्होंने मुझे आश्वस्त करते हुए बुलाकर बिठाया और बताया कि हालातों के इस नाजुक दौर में वे कितने डरे हुए हैं लेकिन आपको यहाँ देखकर अपने साथ खड़े देखकर बहुत अपनापन महसूस हो रहा है।

कहानियाँ अनुभवों को भी विस्तार देती हैं

परिवार के लोगों से हाल चाल जाने और बच्चे जो बड़ी देर से दूर सहमे–सहमे से खड़े हुए थे वे भी आश्वश्त हुए और मेरे आस–पास एक मधुर मुस्कान के साथ मंडराने लगे। थोड़ी ही देर में बच्चे सहजता के साथ मेरे सामने आ गए और खुलकर बात चीत करने लगे। यहाँ पर समुदाय के साथ जो जुड़ाव महसूस मैं कर पा रही थी उसके चलते ही मैं यह प्रस्ताव रखने का साहस जुटा पाई कि बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बिठाकर कुछ सीखने सिखाने की गतिविधियों की शुरुआत की जा सकती है। यह सवाल मुझे जितना अन्दर से डराए हुए था समुदाय के लोगों के जवाब को सुनकर मेरा डर काफूर हो गया। वे लोग तो सामने से ही यह चाहते थे कि इस विकट दौर ने तो बच्चों की दिनचर्या को ही बिगाड़ कर रख दिया और अगर कुछ समय बच्चे आपके साथ समय बिताएंगे तो कुछ अच्छा ही होगा। इसी विचार–विमर्श के साथ अगले दिन से बच्चों के समूहों के साथ सीखने सिखाने के कामों की शुरुआत की गयी।

अब सवाल मेरे लिए यह था कि बच्चों के साथ कहाँ से और क्या शुरू किया जाए। तो मैंने तय किया कि इन विकट हालातों से निपटना आज के समय की पहली जरूरत है इसलिए सबसे पहले इसके बारे में बच्चों की ठीक से समझ बनाना जरूरी है। बच्चों को ब्रेक प्रोटोकॉल के तहत थोडा दूर दूर बिठाया और कोरोना वायरस के बारे में चित्रों के माध्यम से इस महामारी के लक्षण एवं इससे बचने के उपाय के बारे में बताया बच्चों को ठीक से हाथ धोने का अभ्यास करवाया।

इन सब चीजों से परे मेरे दिमाग में अकादमिक समझ को लेकर किये जाने वाले कामों की योजनायें भी चल रही थीं। दिमाग अलग–अलग तरह से विषयवार सोच और विचार कर रहा था। कभी हिन्दी विषय, कभी गणित और कभी पर्यावरण अध्ययन के बारे में शुरुआत से सोचे जाने के ख्यालों और विचारों ने मेरे दिमाग को जकड रखा था लेकिन अंततः ये सब चीजें मुझे सुकून दे रही थीं ,मुझे आश्वश्त कर रही थीं कि सब कुछ संभव है और विषयवार बच्चों के लिए अलग–अलग योजना बनाकर उसके अनुसार सामग्री जुटाना, बनाना आदि काम सतत करते हुए मैंने बच्चों के साथ काम शुरू किया। मेरी रचनात्मकता इन सबके आधार में काम कर रही थी।

पर्यावरण अध्ययन की गतिविधि से शुरुआत करते हुए आस–पास विचरण करने वाले और घर में पाले जाने वाले जानवरों के बारे में बच्चों के समूह के साथ विस्तार से चर्चा की गयी इस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए जानवरों के नामों के अंग्रेजी नाम बच्चों को बताये और बोलना सिखाया।

ये नवाचारात्मक गतिविधियां और इनके साथ इनके लक्ष्य कि महामारी के बाद जब भी बच्चे वापस शाला में आने लगें तो ऐसा ना हो कि बच्चों के सीखने का स्तर पीछे रह जाए बच्चों की उम्र बढ़ रही है लेकिन बच्चे तो सीखे हुए हैं उसे ही भूलते जा रहे है। बहुत कुछ चीजों को साथ लेकर चलने की जरूरत थी जिसमे बच्चों की रूचि का ख्याल सर्वोपरि था। जब बच्चे अपने पढ़ाई के स्तर से पीछे न रह जाए और जब भी विद्यालय वापस शुरू हो तो वह स्वयं रूचि के साथ विद्यालय में निरन्तरता बनाएं रखे एवं शिक्षा के प्रति सजग रहे। और शिक्षक को भी लंबे समय बाद पढ़ाने में आने वाली समस्याओं का सामना न करना पड़े। साथ ही साथ मैंने यह भी करना शुरू किया कि वाट्सअप ग्रुप पर आने वाली सभी गतिविधियों को समुदाय के लोगों के साथ शेयर करना शुरू किया ताकि बच्चे इनसे जुड़कर काम करने लगें। घर–घर जाकर खेल गतिविधि रंगों, कार्ड द्वारा बच्चों में पढ़ने की ललक बरकरार रखी। फिर मैने थोड़े समय बाद पाया कि लगातार बच्चों से जुड़े रहने पर बच्चों ने स्वयं से अन्य गतिविधि करना भी सीख लिया था। बच्चों ने रुचिपूर्वक सहभागिता भी निभाई। जिन विद्यार्थियों को कम समझ आया उनको मदद करके शिक्षा विकास और सहभागिता के गुण का विकास किया।

इस पूरे समय में मुझे यह समझ में आया कि बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति बेहतर हो सकी है और तर्क संगतता के साथ सवालों के जवाब देने के प्रयास करने लगे हैं। मुझे ज्यादा कठिनाई कक्षा 3 के बच्चों के साथ काम करने में आई क्योंकि वह लगातार 2 वर्ष के बाद सीधा ही कक्षा 3में है। और जिसे पहली बार ही सभी विषयों से परिचित होना पड़ रहा है जिसको कक्षा 1के स्तर का ज्ञान दिया जाना है। इन बच्चों के लिए मैंने ऐसी योजनायें बनाई जिससे कि बच्चों की जड़ों में सीखना सुनिश्चित कर सकूँ। निश्चित रूप से यह एक चुनौतिपूर्ण दौर रहा लेकिन डटकर सामना करने का लक्ष्य मैंने भी बना लिया था तो मैं वो हासिल कर सकी जो मैंने पहले से ही ठान लिया था।

3.9 हमने कठिन समय देखा है –

धर्मिष्ठा पंडया
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, भूतिया डूंगरी

सौन्दर्य बोध, कल्पनाशीलता और संवेदनशीलता का आपस में गहरा रिश्ता है। शिक्षक बच्चों को अलग–अलग तरह के साहित्य से रूबरू करवाते हुए अवसर उपलब्ध करवा सकते हैं जिससे बच्चे गहराई से इन चीजों के साथ जुड़ सकें और बच्चों के जीवन का हिस्सा बन सके।

सीखने के माहौल से शिक्षण

मुझे पता था कि शिक्षिका बनकर मैं अपने जीवन में एक नई जिम्मेदारी के रूप में नई शुरुआत कर रही हूँ। मैं साल दर साल बच्चों के साथ समय बिताऊँगी हम सब मिलकर साथ–साथ सीखने सिखाने के काम करेंगे, हरेक बच्चे के बारे में सोचना, बच्चों के जीवन को लेकर कल्पना करना और बच्चों के जीवन के विकास के सफर में मेरी भागीदारी की कल्पना मात्र से ही मैं रोमांचित हो उठती थी हाँ, ये बच्चे ही तो होंगे जो मेरे सच्चे साथी होंगे और जीवन की राह में आगे बढ़ने को तत्पर इन बच्चों के लिए शायद मैं इनकी दुनिया में कुछ नया कर सकूंगी और इस नयेपन से बच्चे के जीवन को एक सही दिशा मिल सकेगी।

कल्पनाएँ जो मुझे एक अद्भुत उत्साह से भर देती थीं। इन्हीं कल्पनाओं के साथ मैंने मेरे भावी विद्यालय की कल्पना भी कर डाली। मेरी कल्पनाओं का मेरा विद्यालय एक सुविधाजनक ऐसा भवन जहाँ पर विधालय को परिभाषित करता एक पक्का भवन होगा जिसमें बहुत सारे कक्षा–कक्ष और इन कक्षा–कक्षों को गुंजायमान करते प्यारे–प्यारे और काल्पनिक बच्चों के चेहरे मेरी कल्पनाओं में दिखाई देने लगते और मुझे लगता कि शायद मैं इन बच्चों की दुनिया में कुछ रंग भर दूंगी। कल्पनाएँ जो रुकने का नाम ही नहीं लेती थीं और इसी कल्पना लोक में मैंने अपने सहकर्मी और साथी शिक्षकों को भी मेरे साथ पाया और यह भी पाया कि हम सब एक साथ मिलकर बच्चों के भविष्य का निर्माण कर रहे हैं, साथ मिलकर गतिविधियाँ कर रहे हैं, चर्चा दर चर्चा बच्चों के व्यक्तित्व के निर्माण की परिकल्पनाओं में विचरण करती मैं और मैंने विचार किया कि एक अनिश्चित सी दुनिया की चुनौतियों का रचनात्मक तरीकों से सामना करने में सक्षम मैं सब कुछ कर लूंगी क्योंकि उस दुनिया में मैं अकेली नहीं और भी हैं मेरे साझीदार मेरे भागीदार और मेरे मददगार।

शिक्षण के रचनात्मक तरीके

कल्पना लोक से बाहर आई मैं और उत्साह, खुशी और रोमांच के साथ मेरी पहली जॉइनिंग के लिए जुलाई 2001 भूतिया डूंगरी नवागांव के एक विद्यालय के लिए मेरा चयन हुआ था। ''भूतिया डूंगरी'' जैसा कि नाम से ही एक अजीब डरावना सा अहसास हुआ मुझे और कल्पना लोक के विपरीत धरातल पर जो मिला उसमें मेरे जोइनिंग के वक्त न तो विद्यालय भवन था और न ही बच्चे एवं न ही कोई सहकर्मी या साथी शिक्षक था। यह मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौति थी यानि सिरे से शुरुआत करती मैं यह तय नहीं कर पा रही थी कि सबसे पहले उस गांव में अपने बैठने के लिए किसी स्थान की तलाश करूँ, बच्चों की तलाश करूँ। क्या करूँ, कैसे करूँ। यानि शुरुआत कहाँ से करूँ। एकल शिक्षक के रूप में बच्चों के लिए सिरे से कार्य करना और वह भी बहुत बारीकियों के साथ कि मुझे लगने लगा ढंग से कार्य पूरा तभी संभव हो सकेगा जब प्राथमिकताएं तय करते हुए ध्यान केन्द्रित कर पाऊँगी इसलिए मैंने मेरे समय और कार्यों का बंटवारा भी उसी तरह से तय किया यानि प्राथमिकताएं तय की गईं। बच्चों के लिए एक ऐसी सुरक्षित चारदीवारी जहाँ बैठकर हम दिन की शुरुआत कर कुछ समय साथ–साथ बिता सकें और विचारों का आदान–प्रदान कर सकें इन्हीं विचारों के साथ और जगह की तलाश में और कुछ समय समुदाय में घूमते हुए, कुछ लोगों से सम्पर्क करते हुए मुझे उस गांव की उपसरपंच श्रीमती शीला देवी से मिलने का मौका मिला जिनसे मैंने निवेदन किया कि वह अपने घर का आंगन मुझे एवं मेरे बच्चों के बैठने के लिए उपलब्ध करवाए खास बात यह रही कि वे मेरे अल्पनिवेदन पर ही अपने घर के आंगन को देने के लिए तैयार हुए और आज की शाम मैं एक उपलब्धि के साथ सोचते हुए घर को लौटी कि मैंने बहुत बड़ा काम कर लिया है। अगले कुछ दिन इस आशियाने को गुलजार करने के लिए बिताये यानि एक ऊर्जा के साथ मैंने समुदाय से सम्पर्क एवं सर्वे का कार्य प्रारम्भ कर दिया। कुछ दिनों की मेहनत का एक अच्छा परिणाम सामने आ चुका था। लगभग 40 से 50 बच्चे विद्यालय से जुड़ गए थे। बहुत थोड़ी स्टेशनरी के साथ विद्यालय की शुरूआत की गई।

वर्ष 2004 में मुझे विभिन्न प्रयासों के पश्चात् विद्यालय भवन प्राप्त हुआ किन्तु 2001 से 2007 का समय मेरा समय एकल अध्यापिका के रूप में ही निकला। मेरा स्वयं का मनोबल ही था जिससे प्रेरित होकर मैं कदम दर कदम आगे बढ़ती गयी और इतने अधिक प्रायोगिक जीवन के साथ ही (जो मैंने इससे पहले कभी नहीं किये थे) मैंने अपने आप में भी काफी बदलाव पाए।

✦ मैंने समुदाय के बारे में जाना :

लेकिन पिछले दिनों में मैंने बच्चों को तो विद्यालय से जोड़ लिया साथ ही इस दौर ने मेरी समझ के दायरे को भी बढाया। मुझे यह समझ आने लगा कि बच्चों को समझने के लिए उनकी पृष्ठभूमि को भी समझना उतना ही जरूरी है। मैंने समुदाय के बारे में सीखा समुदाय सम्पर्क के दौरान मैंने पाया कि समुदाय की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति बेहद पिछड़ी हुई थी, जिसने मेरे हृदय को बहुत अधिक प्रभावित किया था और इसी वजह से तब मैंने विभिन्न भामाशाहों से मिलकर समय–समय पर गर्म कपड़े, शिक्षण समग्री, गणवेश, चप्पल वितरण, दुग्ध वितरण आदि कई कार्य किए और कहते है कि जहां चाह है वहां राह है। अतः जब भी उन बच्चों के लिए कुछ अच्छा करने को सोचती हूं ईश्वर कहीं न कहीं मेरी मदद अवश्य कर देते हैं और ईश्वर की यह कृपा आज भी मुझ पर बनी हुई है मैं इस समुदाय के साथ अपने जुड़ाव को महसूस कर पाती हूँ जो कि मुझे बच्चों से जोड़ता है।

✦ बच्चों के साथ शुरू से शुरूआती यात्रा :

बच्चों के साथ कार्य करने का यह मेरा पहला अनुभव था। बच्चों के साथ सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं में जाने से पूर्व मुझे लगता था कि बच्चे तभी शिक्षण कार्य कर पाएंगे जब उनके हृदय तक पहुचं बना पाऊंगी और इनके साथ आत्मीय संबंध बनाने का मुख्य मार्ग आपसी बातचीत ही हो सकती थी। अब बच्चों से विभिन्न संदर्भो पर बातचीत करने के पश्चात् मैं अपने उद्देश्य पर पहुंच चुकी थी मेरी सोच सही साबित हुई। चारों विषयों की एकल अध्यापिका थी और जल्द ही मैंने बच्चों के बारे में समझ बनाना शुरू किया सबसे पहले मैंने पाया कि बच्चे गणित का एवं हिन्दी का बहुत अधिक प्रयोग अपने दैनिक जीवन में कर रहे है। बस उन्हें विभिन्न विषयों से जोड़कर मुझे अपने कौशलों को प्राप्त करना था।

शिक्षक – बच्चों का वार्तालाप

✦ ''याद रखना बेहतरीन दिनों के लिए, बुरे दिनों से संघर्ष करना पड़ता है।''

<u>सीखने सिखाने के अवसर –</u> विद्यालय बड़ा हो गया तो और साथियों के साथ काम करने के मौके भी मिले समय–समय पर कुछ सहकर्मी मिले भी और चले भी गए। शाला के लिए मेरी धारणा थी कि यह वास्तविक दुनिया का एक हिस्सा ना कि मात्र ऐसी कोई जगह जहाँ निरर्थक रूप से कुछ भी किया और चल दिए और इसी क्रम में मेरा लक्ष्य मेरे वो नन्हें बच्चे थे जिन्हें एक के बाद एक ऐसे अनुभवों का महल देना जो कि पिछले सीखे हुए के आधार पर अगली और नएपन

के साथ का कदम हो सके यही कारण था जो मुझे मेरे बच्चों से जोड़ता था। मेरी शाला का वो खुशनुमा माहौल जिसके कारण बच्चे आकर्षित होकर खुद खिंचे चले आते थे और इन सब में भूमिका निभाते हुए होते थे नई नई कहानियाँ, कवितायें और हमेशा नई–नई और रोचक और जानकारियों से भरपूर बातचीत इन सबने सीखने–सिखाने के माहौल को बनाने की जड़ों में काम किया। बच्चे दिनभर जिन कंकड़ों व कंचों से खेलते थे उन्हीं के माध्यम से संख्या 1 से 9 तक की मात्रात्मक समझ पक्की की। फिर कंकड़ों की 10–10 की ढेरियां बनाकर स्थानीयमान के नियमों पर भी बच्चों के साथ कार्य किया। समय के साथ मेरा व बच्चों का रूझान गणित की ओर एवं अंग्रेजी की ओर बढ़ने लगा। प्रार्थना सभा में ही शरीर, फलों, फूलों, रंगों एवं जानवरों के अंग्रेजी एवं हिन्दी में चर्चा होने लगी। विभिन्न इबारती प्रश्न करने लगे जैसे–

1. गाय के कितने पैर होते हैं?
2. एक गाय के चार पैर है तो तीन गाय के कितने पैर होंगे?
3. पेड़ पर कितनी चिड़िया बैठी है आदि–आदि?

कार्य पत्रकों, तीली बंडल जैसे चीजों से अनेक अभ्यास के मौके प्रदान कर गणित की विभिन्न अवधारणाएं जैसे जोड़ बाकी पर बच्चों की समझ को पुख्ता करने का कार्य और कभी ना रुकने वाली प्रक्रियाओं का दौर जिसने मेरी सोच को सही साबित करने के अवसर मेरे लिए जुटाए कि बच्चों की बौद्धिक क्षमताओं का विकास करने के लिए उनके परिवेश की चीजों से बेहतर कुछ हो ही नहीं सकता और इन प्रक्रियाओं के आनंद में गोते लगाते मैं और मेरे बच्चे.....

✦ महामारी भी आगे बढ़ने से रोक ना सकी हमें –

महामारी भी आगे बढ़ने से रोक ना सकी हमें–इसी दौरान एक भंयकर दौर आया और वह था कोविड–19 का। एक ऐसा दौर जिसमें इसके संक्रमण को रोकने के लिए सरकार के समक्ष केवल लॉकडाउन लगाने के अलावा और कोई मार्ग शेष नहीं था। इस लॉकडाउन में हम सभी अपने–अपने घरों में कैद हो चुके थे। हमारा बच्चों से एवं अन्य सभी से सम्पर्क बिल्कुल टूट चुका था।

24 जून 2020 को सरकारी आदेश के तहत् विद्यालय खुल चुके थे इस लॉकडाउन का असर भी दिखने लगा था। स्थितियां कुछ हद तक सामान्य हो रही थी कुछ ढ़ील के साथ दुकान, बाजार व कार्यस्थल खुल रहे थे किन्तु यह ऐसा था जैसे बिना आत्मा के शरीर अर्थात विद्यालय खुलने का आदेश तो था किन्तु बच्चे विद्यालय में न आने देने का भी आदेश साथ में था। विद्यालय का यह माहौल मेरे लिए बेहद नीरस था, प्रारम्भ में तो कुछ विभागीय कार्य किए गए किन्तु समय बच्चों के बगैर काटने दौड़ रहा था।

गणित सीखने के रोचक तरीके

जब विद्यालय आते–जाते समय बच्चों को समूह में खेलते देखा तो तुरन्त मन में यह विचार आया कि कोरोना का भय तो मात्र हमें ही है। बच्चे तो बिल्कुल निर्भिक होकर अपना यह समय खेलकूद में व्यतीत कर रहे है। तब सोचा कि बच्चे स्कूल नहीं आ सकते, किन्तु स्कूल तो बच्चों के पास जा ही सकता है अर्थात क्यों न हम ही इन बच्चों के छोटे–छोटे समूह बनाकर सीखने–सिखाने का अभ्यास शुरू कर सकते हैं सबने मिलकर विचार किया। जिस पर सहकर्मियों ने सहमति जताई ।किन्तु कहते है न कि हर कार्य जितना सोचा जाता है उतना सरल नहीं

गणित से जुडी समस्याओं को मिलकर सुलझाते हुए

होता क्योंकि इसके लिए भी समुदाय की स्वीकृति, स्थान एवं बच्चों की सहभागिता हमारी सबसे बड़ी चुनौतियां थी।समुदाय के साथ पहले से बने मेरे रिश्ते इस समय बहुत काम आये धीरे–धीरे समुदाय से बातचीत तथा उन्हें कोविड–19 के नियमों का पालन करने की बात कह कर मना लिया गया। मौहल्लों के अनुसार 3 से 4 घर इस प्रकार ढूंढ लिए गए जिसमें बच्चों के छोटे–छोटे समूह बनाकर एक लम्बे अंतराल के बाद सीखने–सिखाने की गतिविधियों का आगाज किया ।कोरोना काल की वजह से जो लम्बा अंतराल बच्चों को मिला उसे बच्चों ने एक त्यौहार के समान जिया बच्चों के लिए माहौल बनाने में हमें ज्यादा समय नहीं लगा मैंने इन बच्चों को पहले संदर्भ को लेकर बातचीत का तरीका ढूंढा। जैसे –

1. इस कोरोना काल में आप लोगों ने क्या–क्या किया?
2. आपके मम्मी, पापा इस समय जीविकोपार्जन के लिए क्या करते है?
3. आपके घरों के आस–पास कितने लोग बाहर कमाई करके लौटे हैं?
4. आपकी मम्मी अगर सब्जी बेचने जाती है तो कौनसी–कौनसी सब्जी बेचती है?
5. सब्जी को तौलने के लिए मम्मी कौन–कौनसे बांटों का प्रयोग करती है?
6. एक किलो लौकी 20 रुपये की आती है तो 3 किलो कितने में आएगी?
7. एक मुर्गी के चार बच्चें हैं तो दो–दो के कितने समूह बनेंगे?
8. 100 रुपये लेकर बाजार जायें, 50 रुपये की शक्कर, 20 रुपये की चायपत्ती खरीदें कितने बचे और कितने खर्च किए?

इस तरह की विभिन्न बातचीतों से मैने बच्चों को शिक्षण कार्य के लिए तैयार कर लिया था। अब पढ़ने–पढ़ाने की इस प्रक्रिया में मैने विभिन्न ठोस वस्तुओं का सहारा लिया था। जैसे कंकड़, पत्थर, तीली, बंडल से (संख्या ज्ञान, स्थानीयमान, इकाई–दहाई, जोड़–बाकी) एवं मोती–माला द्वारा अंकों की मात्रात्मक पहचान, 10–10 के समूह बनाना आदि कई गणितीय अवधारणाओं को सीख रहे थे।

बच्चे चार्ट, फ्लैश कार्ड आदि द्वारा विभिन्न गतिविधियों के साथ सीख रहे थे। स्थानीय चीजों के नाम अंग्रेजी में बताना तथा छोटे–छोटे वाक्य अंग्रेजी में बनाना सीख रहे थे। गणित में छोटे–छोटे बच्चों को कविता के माध्यम से भी अंकों और संख्याओं की समझ बनाने का काम कर रहे थे। जैसे– ''अंजलि की नाक एक, नाक एक नाक एक, अंजलि की आंखे दो ,आंखें दो ,आंखें दो।''

पुस्तकालय का कोना कहीं भी बनाया जा सकता है

इस प्रकार की कई छोटी–छोटी कविताएं और कहानियों के माध्यम से गणितीय अवधारणाओं पर कार्य संभव हो पा रहा था। इसके साथ ही ठोस वस्तुओं के रूप में गिनमाला का भी प्रयोग किया जिसमें गिनमाला का एक छोर पेड़ से बांध देती और दूसरा मैं खुद पकड़ लेती। बच्चे बारी–बारी से 2, 4, 8, 3, 6 आदि संख्या को गिनकर मोती माला में से आगे बढ़ाते। इसी मोती माला के सहारे हर्षित ,अंजलि और रितिका सप्ताह के दिनों के क्रम, वर्ष के महीनों की संख्या पर भी समझ बनाने का प्रयास करते रहे। गिनमाला के रंगीन मोतियों के सहारे से पैटर्न, समूहीकरण का ज्ञान बच्चों में पक्का होता चला गया। बार–बार अभ्यास से पलक और नकुल ने बड़ी संख्या की गणना पर भी महारत हासिल कर ली। जब उन्हें 48 या 62 जैसी संख्या को गिनकर माला पर निकालने को कहा जाता है। वे तुरन्त 10–10 के समूह में मोतियों को आगे बढ़ाते हैं और सही जवाब तक पहुंच जाते है। इन मोती माला के सहारे वे अब जोड़ व घटाव भी सीख रहे हैं।

शिक्षण कार्य को अधिक रूचिकर बनाने एवं बच्चों के ठहराव को बनाए रखने के लिए मुझे कुछ अन्य तरह की योजना बनाये जाने की भी आवश्यकता थी मैंने याद किया कि विद्यालय में बच्चे कॉमिक्स और पत्रिकाओं को पढ़ने में रूचि रखते थे और पुस्तकालय की पुस्तकों का सहारा लेने की योजना बना सकी जिसे सफल बनाने में शिक्षक विजय प्रकाश जैन की एक अहम् भूमिका थी। विजय जी की सहायता से अहमदाबाद के पारिख सर की संस्था द्वारा पुस्तकालय के लिए पुस्तकें प्राप्त की। इसके लिए मेरा मानना था कि सीखने का वातावरण बनाने के लिए दिखावे वाले भवन की जरूरत नहीं होती वरन थोडी सी रचनात्मक सोच के साथ और कम खर्चे में यह कहीं भी बनाया जा सकता है।

बच्चे किताबों की सुन्दर कहानियों एवं सुन्दर चित्रों से पढ़ने में रूचि ले रहे थे तथा मेरे द्वारा पुस्तकों की कहानियों को हाव–भाव के बच्चों की कहानियां सुनाने से बच्चे बहुत अधिक आकर्षित होने लगे उन कहानियों से बच्चों की कल्पना एवं पूर्व ज्ञान का सामजंस्य स्वतः ही होने लगा और उससे जुड़े कई प्रश्नों को करने लगे तथा आपस में ही जवाब देने लगे। उनकी उत्सुकता से भरी बातचीत को सुनकर स्वयं मुझे भी बेहद आश्चर्य मिश्रित खुशी का अहसास हो रहा था। बच्चे उन कहानियों पर रोल प्ले कर रहे थे। परिवेश से जोड़कर अपने विचारों को साझा करते। सच कहूँ तो इन किताबों ने जादू का सा काम किया मुझे इन बच्चों को इस तरह से देखकर लगने लगा कि कहाँ सम्पन्न और केंद्रीयकृत पुस्तकालय जहाँ पर बच्चे तमाम नियम और प्रतिबंधों से घिरे रह जाते हैं और पढने के मूल सुख की सतह को छू भी नहीं पाते। इन सबने मुझे बच्चों को मेरे साथ जोड़े रखने और बच्चों को भाषा शिक्षण में अभिनय द्वारा अपने मौलिक विचारों को अभिव्यक्त करने में भरपूर साथ दिया।

शिक्षक के रूप में 20 वर्षों का लम्बा सफर जिसमे कई उतार–चढाव देखे लेकिन बच्चों को सिखाने के अवसर मुझे सबसे ज्यादा कोरोना काल में ही मिले है। पाठयक्रम को पूरा करने के क्रम में पहले मेरा ध्यान एक सीमित दायरे में होता था। जबकि वर्तमान में बच्चों के अभिभावकों व समुदाय के साथ और अधिक नजदीक जाकर वक्त बिताने का मौका मिल सका और समुदाय के लोगों ने भी यह स्वीकार किया कि छोटे बच्चों को सिखाना और पूरे समय कार्य से जोड़े रखना बेहद मुश्किल कार्य है। समुदाय के लोग अब सामने से कहने लगे हैं कि आप मुश्किल लगने वाले कार्य को भी बड़ी सरलता से कर लेते हैं। मेरा यह मानना है कि सीखने–सिखाने में परिवेशीय ज्ञान, ठोस वस्तुएं और जीवंत उदाहरण प्रक्रियाओं को और आसान बना देता है।

3.10 बच्चों ने अंतर करना सीखा –

निक्की सोनी
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, तोरणिया

विद्यालय से बाहर और समुदाय के बीच बच्चों की अपनी दुनिया होती है जहाँ पर बच्चों के अपने जीवन को जीने के नजरिए बन रहे होते हैं। बच्चे दोनों ही जगहों पर रहकर अनुभव बना रहे होते हैं और इन अनुभवों के आधार पर निष्कर्ष भी निकाल रहे होते हैं। विद्यालय की यह जिम्मेदारी होती है कि बच्चों को ऐसे अनुभव बनाने में मददगार साबित हों कि बच्चे जब वहां से निकलकर समुदाय में आये तब विद्यालय में लिए गए अनुभवों को वास्तविक दुनिया के हिस्से के रूप में देख सके।

कला का एक स्वरूप यह भी

बांसवाड़ा पंचायत समिति के लिमथान ग्राम पंचायत में स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय, तोरणिया जहाँ मैं शिक्षिका के रूप में जुडी हुई हूँ विद्यालय से जुड़े सभी बच्चे अनुसूचित जनजाति से हैं। यहाँ पर बच्चे ऐसे परिवारों से हैं जो दुर्गम और आंतरिक इलाकों में और बिखरे–बिखरे समूहों में रहते हैं। परिवार में आय के साधन के रूप में देखा जाए तो खेती, दैनिक मजदूरी है यहाँ पर जीविकोपार्जन के लिए पलायन करने का चलन है। कई बार पूरे–पूरे परिवार ही पलायन कर लेते हैं लेकिन कई बार परिवार को छोड़कर परिवार का मुखिया अकेले ही पलायन करते हैं। शिक्षिका के रूप में मेरी नियुक्ति 2015 में हुई थी और शुरू से ही मैं इस विद्यालय से जुडी हुई हूँ। मेरी साथी शिक्षिका विजय लक्ष्मी और मैंने मिलकर विद्यालय के विकास के लिए सभी संभव प्रयास के तहत बच्चों के लिए विविध प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करते रहते हैं। महामारी की शुरुआत में जब सभी विद्यालय बंद थे ऐसे में एक दौर ऐसा था जब शिक्षक और बच्चे सभी अपने–अपने घरों में बंद होकर रह गए लेकिन थोड़े समय के अंतराल में शिक्षकों के लिए विद्यालय चालू हुए लेकिन बच्चे अपने–अपने घरों में अभी भी बंद थे। और वापस बच्चे विद्यालयों में कब आने लगेंगे इसको लेकर असमंजस की स्थितियाँ बनी हुई थीं। बच्चों के साथ सभी प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियाँ बंद थीं। मैं और मेरी साथी शिक्षिका हम दोनों को ही बच्चों के लिए कुछ किये जाने को लेकर दिमाग में विचार चलने लगे। चूँकि ऐसे विकट समय में जब बच्चे शाला नहीं आ सकते हैं तो क्या किया जाना ठीक रहेगा ताकिकोरोना के चलते बच्चों की पढ़ाई को जो नुकसान हो रहा था उस नुकसान से बच्चों को बचाया जा सके। इस पर गहनता से चिंतन और मनन का दौर चला और अंत में हम दोनों ने मिलकर यह तय किया कि बच्चे विद्यालय नहीं आ सकते तो हम समुदाय में जाकर बच्चों के साथ मेलजोल बढ़ाना और शैक्षणिक गतिविधियों को संभव बनाने के प्रयास तो कर ही सकते हैं।

अपनी कहानी पढ़ने में बच्चे

इसी विचार के साथ मैंने मेरी साथी शिक्षिका विजय लक्ष्मी सिसोदिया के साथ बच्चों को घर–घर जाकर शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करना तय किया। चूँकि विभागीय आदेशानुसार बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण का कार्य करना था लेकिन इसमें सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि जन जातीय क्षेत्रों में समुदाय के लोगों के पास एन्ड्रॉयड फोन उपलब्ध नहीं था इसलिए ऑनलाइन पढ़ाई असंभव थी।

तब हमने बच्चों को पढ़ाने के लिए घर–घर जाकर सीखने–सिखाने की गतिविधियों का आयोजन किये जाने का फैसला किया। सबसे पहले हम दोनों समुदाय के लोगों से जाकर मिले और हाल चाल जान लेने के उपरान्त बच्चों के समूह वार शिक्षण के लिए बातचीत करते हुए जगह की जरूरत हमने जताई। जब बच्चों के साथ शैक्षणिक कार्य शुरू किया उससे पहले मैंने तय किया था कि बच्चों के साथ पारम्परिक तरीकों की बजाय कुछ नवाचार अभ्यास के साथ काम किये जायेंगे। अब बच्चों के साथ कार्य किये जाने को लेकर सामग्री की जरूरत महसूस हुई और कुछ फ्लैश कार्ड, वर्ण पहचान कार्ड और अन्य विविध प्रकार की सामग्री बनाई और जुटाई।

भाषा विकास के तहत बच्चों के साथ अलग–अलग तरह की गतिविधियों का आयोजन किया जाता था जैसे– बच्चों को किसी वस्तु का चित्र दिखाकर उसका नाम बताने को प्रेरित करना और नाम बताने के बाद उसमे से पहली ध्वनि को अलग करना, ध्वनि से नए शब्द बनाना और ध्वनि के आधार पर बताये गए वर्ण को लिखना और अंत में कार्डों की मदद से पहचान को पक्का करना और फिर लिखने का अभ्यास करना। यहाँ पर जो वस्तुएं मैं काम में लेती थी वो परिवेश से ही होती थीं। शुरुआत समझ की अगर बात करूँ तो बच्चों ने बिना मात्रा के शब्द और निरर्थक शब्द बताये लेकिन धीरे–धीरे निरर्थक से सार्थक की ओर की यात्रा मैंने बच्चों के साथ की बच्चों ने इन सबमे अंतर करना सीखा।

अंग्रेजी भाषा का विकास करने के लिए के एल्फाबेट के फ्लैश कार्ड को लेकर एक खेल के माध्मय से बच्चों को छोटी–छोटी स्पेलिंग सिखाना यह खेल कुछ इस प्रकार था –सभी बच्चों का एक गोल घेरा बनवाया गया। उस घेरे के बीचसम्बन्धित फ्लैश कार्ड फैला कर रख दिए। फिर एक–एक बच्चे को बुलाकर एक–एक अक्षर का कार्ड उठवाकर उससे बनने वाली स्पेलिंग को सभी बच्चों को बुलवाई व इसे मैंने ब्लेक बोर्ड पर लिखा। जैसे पहले बच्चे ने **B letter** का कार्ड उठाया, दूसरे बच्चे ने **A** का कार्ड उठाया और तीसरे बच्चे ने **T** का कार्ड उठाया। अब उन तीनों बच्चों को एक साथ कार्ड के साथ खड़ा कर उससे बनने वाली स्पेलिंग **BAT** को पढ़वाया। इस प्रक्रिया को करवाने से बच्चों को वर्णो की पहचान के साथ छोटे छोटे शब्दों को भी आसानी से सीख सकें। समस्या यहां आई कि बच्चे उस स्पेलिंग को बोलने में बच्चे हिचक रहे थे और साथ ही **Small Letter** को पहचान पाने की बच्चों की समझ विकसित नहीं हो सकी। 2. गणित में बच्चों की गणित मात्रात्मक समझ विकसित करना बहुत जरूरी था। जिसके लिए सरकार द्वारा उपलब्ध करवाए गए विडियो की मदद ली और साथ ही पूरी तरह से समझ का विकास करने के लिए बच्चों को मैंने मिट्टी के खिलौने बनवाए व बच्चों ने जितने खिलौने बनाए उन खिलौनों को गिनना और गिनकर उनकी संख्या अपनी कॉपी में लिखने का काम करवाया। गतिविधि को आगे बढ़ाने के क्रम में बातचीत/चर्चा के माध्यम को काम में लिया अर्थात साहिल ने कितने खिलौने बनाएं,अन्जली ने कितने व ललिता ने कितने बनाएं। इससे कक्षा 1 व 2 के बच्चों की अंकों और अंक के समान चीजों को गिनकर अलग करने की समझ बनने लगी। यह काम मैने मूर्त से अमूर्त की ओर बढ़ते क्रम में बच्चों के साथ मिलकर किया इसके बाद और आगे कैसे सीखना है इस पर ए.बी.एल. किट की मदद लेकर कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त भाषा विकास के क्रम में बच्चों के साथ तुकबंदी करना, औरपर्यावरण अध्ययन के तहत परिवेश में उपलब्ध सामग्री के द्वारा आपसी बातचीत, चर्चा के माध्यम से बच्चों की समझ का विकास किया गया।

पुस्तकालय की पुस्तकों के माध्यम से बच्चों में रचनात्मकता व कल्पनाशक्ति का विकास हुआ। चित्रात्मक फ्लैश कार्ड के माध्यम से अपनी भाषा में बच्चे कहानी को सुनाकर अभिव्यक्त करने लगे हैं ।

3.11 हम होंगे कामयाब–

नीरज कुमार पाठक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय चांदा डूंगरी

बच्चों के साथ चर्चाएँ, वार्तालाप बच्चों की बातों को सुनना और विचारों को अभिव्यक्त करने के अवसर मिल पाना बच्चों के विकास का अहम् हिस्सा है। विद्यालयों में यह बेहद जरूरी हो जाता है कि बच्चों के स्वरों को मौका मिले और बच्चे परस्पर संवाद अधिकाधिक कर सकें। भाषा के साथ ही अन्य विषय भी इस अभिव्यक्ति के मौके सुनिश्चित करते हैं।

कितना रोचक होता है चित्रों के माध्यम से सीखना

कोविड–19 महामारी के दौरान तालाबंदी के समय जब हर इंसान अपने अपने घरों में बंद था। उस वक्त का जो दृश्य देखा और महसूस किया तो मुझे मेरा विद्यालय परिवार और विद्यालय के बच्चे याद आने लगे। ऐसा विचार आने लगा कि कहीं मेरे विद्यालय के बच्चों की शिक्षा अधूरी नहीं रह जाए। मैं खुद इन बच्चों की प्राथमिक शिक्षा की नींव का निर्माण करने वाला कारीगर हूं। कहीं मेरे हाथ से नींव कमजोर नहीं रह जाए। बच्चों के लिए आये शैक्षणिक अवरोध को लेकर मैं चिंतित था। सत्र 2020, जब बोर्ड की परीक्षाएं देने के लिए बच्चे तैयार हो रहे थे उस समय बच्चों को नहीं पता था कि कोविड–19 का ये डरावना रूप शैक्षिक, सामाजिक, मानसिक रूप से उन्हें प्रताड़ित कर देगा। जो देश दुनिया की खबरों के माध्यम से हम देख रहे थे उसे जानकर हम सभी शिक्षक साथी चिंतित थे। और हमने लक्ष्य बना लिया था कहीं अधूरी नहीं रह जाए हमारे बच्चों की शिक्षा।

✦ महामारी से बचाव के तरीकों के साथ एक नई शुरूआत –

शुरूआती दौर से कहना शुरू करूँ तो पहली योजना ये थी कि बच्चों एवं समुदाय को कैसे सुरक्षित किया जाए। कैसे उनकी मास्क सैनेटाइजर और सामाजिक दूरी के साथ जीवन जीने की आदत बनाई जाए। इस हेतु हमने समुदाय के बीच में जाकर महामारी से बचने एवं लोगों को जागरूक करने के लिए कार्य किया और दैनिक जीवन जीने के तौर–तरीकों में बदलाव लाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया। इससे भी पहले मैंने स्वयं को बदलना शुरू किया जैसे–हमेशा अपने साथ मास्क रखना, बार–बार हाथों को सेनेटाइज करना, लोगों के बीच जाकर सामाजिक दूरी में रहना और खानपान में बदलाव जैसे गरम पानी का सेवन, दिन में तीन वक्त का भरपेट खाना, आदि कई और समुदाय में जाकर इस बदलाव के लिए प्रेरित करना शुरू किया। समुदाय के बीच जाकर नारा दिया ''जान है तो जहान है''। अपनी जान की पहले सुरक्षा करनी है और साथ ही बच्चों को भी सुरक्षित रखना है। समुदाय को कहा पहले स्वयं को बदलना पड़ेगा फिर अपने परिवार और समाज में लोगों को जागरूक करना होगा।

✦ हमने मिलकर योजना बनाई –

मुझे इतना आत्मविश्वास जरूर था। मेरे विद्यालय का जो गांव जहां अधिकांश पहाड़ी इलाका था यहाँ पर कुछ घरध्मकान ही सामाजिक दूरी के अनुरूप बने हुए थे यहाँ पर आज भी लोग पेड़ों की छांव में वक्त का गुजारना, प्राकृतिक औषधि का उपयोग करना आदि चीजों को ना केवल पसंद करते हैं बल्कि अपने जीवन के हिस्से के रूप में जीते हैं। इन बदलावों को साथ लेते हुए मैंने लोगों में महामारी के प्रति जागरूकता को बढ़ावा दिया। पहले तो स्वास्थ्य की रक्षा एवं सुरक्षा करना। साथ ही बच्चों की शिक्षा की चिन्ता भी थी। कर गुजरना तो बच्चों के लिए ही था पर कई विपदायें, समस्यायें और बंदिशें रोकने का प्रयास कर रही थी और मुझे भी इन बंदिशों को समझना था। और अपने जीवन में इनका सामना करना था और स्वास्थ्य को तो सुरक्षित रखना ही था और शिक्षा (बच्चों की शिक्षा का) को भी नहीं रूकने देना था कई नवाचार करने थे। इन्ही विचारों के साथ योजना बनाई और बस फिर क्या योजना को अन्तिम रूप देते हुए किताबें वे भी रंगीन किताबें और पुस्तकालयों की किताबें, कहानियों की किताबें। इस प्रकार रंग बिरगी किताबों का संकलन किया। एक और सुझाव आया कि क्यों न कुछ अलग हटकर इन शैक्षिक गतिविधियों में थोड़ा बदलाव लाया जाये। जैसे किताबों और खेल सामग्री जो संदर्भ सामग्री के रूप में थी बच्चों के बीच इस तरह से प्रस्तुत किया जाए जिससे बच्चों को ये महसूस ना हो कि कोरोना की वजह से दूरियां बढ़ गयी हैं।

✦ ऑनलाईन शिक्षा स्माईल (Social Media Interface for Learning Engagement) कार्यक्रम –

पूरी योजना में मैंने विभागीय निर्देशों को भी ध्यान में रखते हुए ऑनलाइन शिक्षा स्माईल कार्यक्रम को बच्चों के बीच प्रस्तुत किया। हालाँकि जनजातीय क्षेत्रों में इन्टरनेट और सभी लोगों के पास दकतवपक फोन नहीं होते हैं इसी बात का खास ख्याल रखते हुए मैंने अपनी योजना में अपने मोबाइल फोन से बच्चों को कार्य करवाया जाना तय किया। इस हेतु गांव के विभिन्न मौहल्लों में दस–दस बच्चों के समूह बनाये गए और 1 से 2 घण्टों के लिए शैक्षणिक गतिविधियों के आयोजन की योजना के आधार पर शुरुआत की। शुरू में मैंने पाया कि बच्चे चुपचाप से हैं बच्चों को वापस से मुखर बनाने, गतिविधियों से जोड़ने और बच्चे मानसिक तनाव से दूर हो सकेंगे इसके लिए बच्चों के साथ खेल खेले। अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के दौरान स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा के साथ ही परिवेशीय वस्तुओं को काम में लेते हुए गणितिय क्रियाओं से जोड़ पाना जैसे जोड, घटाव के बारे में, संख्या ज्ञान के बारे में, गुणन क्रियाओं के सवालों को हल करने में इनसे मुझे काफी मदद मिल सकी, बच्चे पहले से बेहतर सीख रहे थे, उनकी रूचि और जुड़ाव भी बढ़ रहा था। इसी तरह अंग्रेजी भाषा में घर–परिवार के सामान, घरों में काम आने वाली चीजों के नाम, परिवार के सदस्यों के साथ रिश्ते और गांव की विभिन्न वस्तुओं के अंग्रेजी नाम क्या होते हैं बच्चों को सिखाया गया। इन सब प्रक्रियाओं में मैं बच्चों को अपने विचार रखने के भरपूर मौके देता और बच्चों की रूचि जानकर ही गतिविधियों और कार्य का आयोजन करने के प्रयास करता।

सीखने का एक माध्यम मोबाइल भी

✦ चलता–फिरता पुस्तकालय –

बच्चों की अंग्रेजी के साथ ही हिन्दी भाषा के विकास के लिए भी मेरी योजना थी और इसी योजना के तहत मैंने कहानियों में रंगीन चित्रों, से अलग–अलग तरह की गतिविधियाँ करवाते हुए बच्चों को अभिव्यक्ति के विकास हेतु वार्तालाप/चर्चा, सुनना और सुनाना के रूप में कार्य किये। मैंने उस अवधि में पुस्तकालय का सबसे अधिक सहयोग लिया। रंगीन कहानियों और कविताओं की पुस्तकें और अंग्रेजी भाषा के लिए कविता और कहानियों की पुस्तकों को अपने साथ रखता था और इसे नाम दिया (चलता फिरता पुस्तकालय) और साथ में रंगीन फ्लैश कार्ड, और बच्चों के लिखने के लिए रंगीन चार्टआदि सामग्री बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किए।

इस प्रकार के कई नवाचारों और गतिविधियों के माध्यम से इस कोविड–19 की अवधि में आनन्दित रहने का प्रयास करते हुए बच्चों और समुदाय के बीच राजकीय कार्मिकों के रूप में अपने कर्तव्य का पालना करते हुए अपने कर्म किये और लॉकडाउन का समय व्यतीत किया। आज निष्कर्ष मेरे सामने है कि बच्चे उस समय में की गयी गतिविधियों को और इन गतिविधियों को करने के तरीकों को याद खुश होकर करते हैं कभी–कभी बच्चे कहते है कि सर किसी दिन हम फिर से उन्हीं तरीकों को काम में लेते हुए घर–घर घूमकर और पेड़ पौधों की छांव में सीखने का काम करते हैं। यानि बच्चों की यादों में उस वक्त को अच्छी यादों के रूप में कैद करवाने में मददगार रहा इसकी मुझे खुशी है।

3.12 योजना बनाकर कार्य करने के सकारात्मक परिणाम –

भूरालाल वघेला
राजकीय प्राथमिक विद्यालय मेंदिया डिण्डोर

विद्यालय के अनिवार्य अंग के रूप में सहभागितापूर्ण सीखना, भावनात्मक विकास और अनुभवों को साझा करने के लिए शामिल किये जाने की जरूरत समझी जाती है और शिक्षक और छात्रध्बच्चे दोनों के द्वारा अनुभवों को आपस में साझा करने से ही सहभागिता की सही मायने में शुरुआत होती है। योजना और पहल हमेशा ही शिक्षक को करनी होती है।

सामुदायिक स्तर पर स्थापित ग्रीनबोर्ड के साथ शिक्षक और बच्चे

महामारी का दौर, एक ऐसा चुनौतीपूर्ण दौर जिसके लिए दुनियाभर में मानसिक स्तर पर कोई पूर्व तैयारी नहीं थी होती भी कैसे क्योंकि यह तो अचानक से हमारे जीवन में आयी और इसने विध्वंश मचाने में दमभर ताकत लगाई और चहुँओर विनाश ही विनाश था। तालाबंदी के कारण जब विद्यालय बन्द थे लम्बे समय से विद्यालय बंद हो जाने के कारण शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ–साथ शैक्षणिक गतिविधियों बीच में एक लम्बा अन्तराल आ गया था और बच्चे शिक्षा से वंचित हो रहे थे अतः कोई योजना बनाकर तो कार्य करना ही था। मैंने जब समुदाय में जाकर सम्पर्क किया तो पाया चूँकि बच्चे पूरे समय घरों में ही रहते थे इसके चलते परिवारों में बच्चों को अन्य कामों जैसे बकरी चराने जाना, घर में ही अपने से छोटे भाई और बहिनों की परवरिश में मदद करना, घर के अन्य कामों में मदद करने में जोड़ दिया था।

और बच्चे पूरे–पूरे दिन घर के काम काज में व्यस्त रहते थे हम शिक्षक साथी चाहते हुए भी बच्चों की मदद नहीं कर पा रहे थे किसी भी तरह से हम सफल नहीं हो पा रहे थे क्योंकि बच्चे तो अपनी व्यस्तता के चलते समय दे ही नहीं पाते थे।

हम सब शिक्षक साथियों ने साथ बैठकर विचार मंथन किया कि ऐसे में क्या किया जा सकता है ताकि बच्चों को शिक्षित करने में शिक्षक होने के नाते कोई मदद की जा सके हमारा लक्ष्य था कि बच्चे शिक्षा की मुख्यधारा से जुड़े रह सकें तथा जो सीखने में अन्तराल आया है उसको पूरा कर सके इसके लिए जिस तरह की गतिविधियों के आयोजन की जरूरत थी उनके लिए तथा समय की कोई पाबन्दी नहीं थी जब भी बच्चे को समय मिले वह सम्बन्धित गतिविधियों के द्वारा कुछ सीखने–सिखाने का कार्य कर सके इसे 2 तरह से किया जा सकता है पहले तो बच्चों के पास जरूरी सामग्री और सीखने का माहौल बन रहा हो तो वह स्वयं करके सीख ले और दूसरा यह कि पूरे समय शिक्षक के साथ वक्त बिता सके। चर्चा के दौरान मेरे शिक्षक साथी श्री विजय प्रकाश जैन ने एक उपाय सुझाया कि अगर कुछ घरों में ग्रीन बोर्ड का निर्माण किया जा सके तो दिन के समय जब शिक्षकों का समूह समुदाय में आये तब इस बोर्ड पर बच्चों के लिए कुछ

लिख दे और शाम को या दिन के किसी भी समय जब बच्चों को समय मिले तब बच्चे उसे पढ़न, लिखना या अन्य कोई सहायक गतिविधि करनी हो उसे कर ले। यह विचार अच्छा था और सबको पसंद भी आया तथा यह भी समझ में आया कि इससे बच्चों को सिखाने में तथा हमारे साथ जुड़ने में मदद मिल सकेगी और सबने मिलकर कुछ घरों में ग्रीन बोर्ड का निर्माण करने के लिए योजना बनाई।

ग्रीन बोर्ड का निर्माण करने के लिए योजना बनी:–शिक्षक विजय प्रकाश जैन के साथ मिलकर हमने पहले योजना बनाए जाना तय किया इसमें पहला कार्य यह करना था कि हम पता लगायें कि कितने ग्रीन बोर्ड बनाये जायेंगे और उन घरों को भी चिन्हित करना होगा जिन घरों में ये बोर्ड बनेंगे। इसके साथ ही यह भी जरूरी लगा कि अकेले शिक्षकों की बजाय इस कार्य में समुदाय के नवयुवकों को भी शामिल किया जाना चाहिए, इसके बाद चिन्हित घरों और ग्रीन बोर्ड की संख्या के आधार पर जरूरी सामग्री जैसे–रंग, ब्रश और अन्य सामग्री को लेकर संभावित खर्च का बजट बनाना और साथ ही बजट की व्यवस्था करते हुए धन राशि जुटाकर ग्रीन बोर्ड बनवा देना बहुत चुनौतिपूर्ण कार्य चुना था हमने। लेकिन जिस तरह से योजना बनाकर और कामों का आपस में बंटवारा करके हम लोग तैयारी के साथ समुदाय में निकले थे, ग्रीन बोर्ड बनना तय ही था।

समुदाय में और बच्चों के बीच ग्रीन बोर्ड को लेकर काफी उत्सुकता थी। ग्रीन बोर्ड के निर्माण के बाद दिन में जब हम शिक्षक समुदाय में जाते उन बोर्ड पर कविताये, कहानियाँ, शब्द, मात्रा के शब्द, वाक्य आदि–आदि लिखकर आते जब भी बच्चों को समय मिलता बच्चे इस ग्रीन बोर्ड के पास आते थे और वे सभी वहां पर पढ़ने बैठते थे साथ ही शिक्षक द्वारा कविता, कहानी आदि जो कुछ भी लिखा हुआ होता था बच्चे उसको अपनी कॉपी में लिखकर और अपने आप या एक दूसरे की मदद से पढ़ते थे। साथ ही शिक्षक समूह ने मिलकर एक कार्य यह भी किया कि गाँव में जो वस्तुयें थी उन वस्तुओं पर वस्तु का नाम लिखकर लेबल लगा दिया जैसे हैंडपंप पर हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषा में लिखकर लगाया। इसी प्रकार से खम्भा, पेड़,चौपाल आदि अन्य अनेक जगहों पर लेबलिंग का कार्य किया। इन सबके पीछे हमारी सोच यह थी कि बच्चे जिन चीजों को पहचानते हैं उनके नाम लिखे हुए जब बार–बार देखेंगे और लिखेंगे तो अपने आप ही सीख जायेंगे इन सबके अलावा इस दुसाध्य समय में शिक्षकों और बच्चों का साथ निभाया तो वे थी कहानियों और कविताओं की चित्रों और रंगों से भरी किताबें। जिस भी शिक्षक साथी का समुदाय के जिन घरों में जाना होता अपने साथ पुस्तकालय की कुछ पुस्तकें लेकर जाते और वहां पर उन पुस्तकों को छोड़ देते बच्चों के पास जब भी समय होता था बच्चे आपस में बदलकर इन पुस्तकों को पढ़ते और आपस में एक दूसरे के साथ मिलकर समझने समझाने की प्रक्रिया कर लेते थे इस प्रकार से बच्चे अंग्रेजी व हिन्दी भाषा के साथ अपने रिश्ते मजबूत कर रहे थे।

✦ गणित शिक्षण –

गणित शिक्षण के लिए शिक्षकों ने मिलकर गाँव के सर्वे की एक योजना बनाई थी जैसे कि गाँव में पशुओं की गणना, स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों की अलग–अलग गणना करना। आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए कुछ फॉर्मेट बनाये गए ताकि इनमे आंकड़ावार प्रदर्शन किया जा सके। इसीके आधार पर बच्चों के समूह बनाकर अध्ययन किया जाना तय हुआ। हमने कुछ लड़कों और लड़कियों के मिश्रित समूह बनाये ताकि बच्चों के दिमाग से लिंग आधारित भेदभाव को निकाला जा सके क्योंकि अधिकांश बच्चों से बातचीत करते हुए यह आभास किया है कि सर्वे करने के लिए सिर्फ लड़के जाते हैं। इस प्रकार से बच्चे बिना किसी लिंगभेद के आसानी से आपस में मिलकर गणित सीखने का अभ्यास कर रहे थे।

✦ समीक्षा –

इस प्रकार के नवाचारों के माध्यम से बच्चों को सीखने सिखाने के अनुभव अच्छे रहे लगभग 60 से 80 बच्चों को इन विविध गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा से जुड़ाव बनाने के प्रयास में सफलता हासिल हो सकी। कई बार विभागीय छुट्टी पर बच्चों से मिलना नहीं हो पाता तो बच्चों के अध्ययन में गेप आ जाता था। लेकिन बच्चों का एक समूह ऐसा भी था जिन तक शिक्षक समूह इस दौर में नहीं पहुँच सका और ये बच्चे सीखने–सिखाने की इन प्रक्रियाओं से जुड़ नहीं पाये और उनका शिक्षा से अन्तराल ज्यादा हो गया।

✦ निष्कर्ष –

इस नवाचार से यह संदेश जाता है कि किसी भी परिस्थिति में बच्चों के साथ सीखने–सिखाने की गतिविधियों का आयोजन किया जा सकता है। सीखने–सिखाने के लिए विद्यालय भवन में ही अध्ययन हो यह जरूरी नहीं है क्योंकि बच्चों को सीखने की प्रक्रिया से कहीं पर भी जोड़ा जा सकता है। लेकिन विद्यालय भवन का होना इस रूप में जरूरी है ताकि वहां पर भौतिक सुख सुविधाएं काम में ली जा सके। लेकिन परिस्थिति के अनुसार हम बच्चों से जुड़े रह सकते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों से विद्यालय तथा समुदाय के बीच आपसी मेल मिलाप बढ़ता है, रिश्ते बेहतर होने के मौके मिलते हैं तथा इस तरह के नवाचारों में अभिभावकों की भागीदारी और जुड़ाव बढ़ते हैं।

✦ विशेष बात –

मैंने अधिकाँश लोगों को यह कहते हुए सुना है कि गांव के लोग विद्यालय को किसी तरह से मदद नहीं करते लेकिन इस पूरी प्रक्रिया के दौरान मेरा यह अनुभव रहा कि बच्चों के बैठने और बिछाने के लिए दरी और पीने केपानी की व्यवस्था में अभिभावकों ने हमारी मदद की। हमारे लिए भी चाय पानी की व्यवस्था की जाती थी। इस प्रकार अभिभावकों का सकारात्मक जुड़ाव विद्यालय के साथ रहा।

3.13 कुछ नहीं होने की बजाय थोड़ा होना अच्छा होता है –

रैना नागर
राजकीय प्राथमिक विद्यालय छत्रसालपुर

बच्चों की पृष्ठभूमि के बारे में शिक्षक को पता होने से वह बच्चे की सीखने में मदद कर सकता है सामजिक परिप्रेक्ष्य में जिस तरह से जीवन की घटनाएँ घटित होती हैं उसका सीधा असर बच्चे की मनःस्थिति पर पड़ता है और जब बच्चा विद्यालय आता है लेकिन अगर विभिन्न तरह की चिंताओं ने उसे घेर रखा है तो विषयाधारित शिक्षण में शिक्षक की योजना और पूर्व तैयारी के अनुरूप कार्य के परिणाम मिल सके इसमें शंका है।

शैक्षणिक सामग्री के साथ अभ्यास करते बच्चे

शिक्षा की दृष्टि से भारत में लगातार प्रयास हो रहे है कि किस प्रकार बुनियादी शिक्षा को मजबूत किया जाए। इस पर वर्षो से चिन्तन, मंथन व नीतियां बनाई जाती रही हैं और विभिन्न नवाचारों को शामिल करने के प्रयास भी किये गये हैं। मैं पिछले 25 वर्षो से प्राथमिक शिक्षा से जुड़ी हुई हूँ। मेरी रूचि का विषय गणित और अंग्रेजी रहा। मेरी स्वयं की शिक्षा महानगरीय परिवेश (कलकत्ता) में हुई। इसलिए यहां के ग्रामीण परिवेश में शिक्षा का माहौल, स्तर व असुविधाओं को स्पष्ट रूप से महसूस किया लेकिन इन सबसे इतर यहां पर ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करते–करते मैंने काफी कुछ सीखा व उनको अपने शिक्षण का हिस्सा बनाया मार्च 2020 में महामारी का एक ऐसा दौर आया जिसने पूरी शिक्षा व्यवस्था को झकझोर कर रख दिया। मेरे जीवन का पहला वीभत्स अनुभव जब पहली बार विद्यालय बच्चों के लिए पूरी तरह से बंद हो गए। लॉकडाउन का वह दौर, महामारी की भीषणता, सब कुछ मानो अनिश्चित सा। शिक्षक होने के कारण स्वाभाविक रूप से पहली चिन्ता यही थी कि ऐसे में बच्चों का क्या होगा? क्या वे इस महामारी की गंभीरता को समझ रहे होंगे, स्कूलबंदी के कारण क्या वे अपनी पढ़ाई से जुड़े रहेंगे।इन्हीं प्रश्नों के साथ दिन पर दिन चिन्तायें बढ़ती रहीं। लॉकडाउन के कारण हम स्कूल भी नहीं जा सकते थे। किसी प्रकार टेलीफोनिक वार्तालाप से कुछ अभिभावकों से बातचीत होती रही और हालचाल जानने और बच्चों को पढ़ने लिखने के लिए प्रेरित करती रहीं। 24 जुलाई 2020 का दिन जब यह विभागीय आदेश मिला कि शिक्षक अपने विद्यालय जायेंगे और वहां ऑनलाईन/ऑफलाईन मॉडल में कार्य करेंगे। ये एक प्रकार का सुअवसर था। हालांकि ये महामारी कई प्रियजनों को लील चुकी थी। एक अनजान भय भी था। लेकिन शिक्षक के रूप में बच्चों के भविष्य के साथ हो रहे इस अन्याय को नजर अंदाज भी नहीं किया जा सकता था।

सरकार द्वारा स्माइल (Social Media Interface for Learning Engagement) प्रोग्राम शुरू किया गया ऑनलाइन कार्यक्रम और ग्रामीण परिवेश जहाँ पर इसके लिए कोई महत्व नहीं क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में जहां मोबाइल बहुत सीमित लोगों के पास होते हैं।

वहां ये ऑनलाइन सब बच्चों तक पहुंचाना मुश्किल था। इसके बाद मैंने और मेरी शिक्षका साथी श्रीमती अनामिका ठाकुर ने यह तय कि इस पर कोई कार्ययोजना सोची जाए ताकि हम बच्चों को नियमित रूप से पढ़ने लिखनेके कार्य से जोडे रख सके। जिसमे लक्ष्य यह था कि पाठ्यपुस्तक के इतर हिन्दी भाषा में बुनियादी रूप से पढ़ना लिखना जारी रह सके, गणित विषय में बुनियादी संख्या ज्ञान, संक्रियाओं की समझ बनी रहे, अंग्रेजी भाषा में भी एल्फाबेट, आदि पर कार्य जारी रहे और समुदाय और बच्चों को कॉविड के प्रति समझ बनाना और इससे बचाव के तरीकों को अपनाते हुए चलना आदि सामान्य चीजों से अवगत कराया गया।

✦ चुनौतियां –

जब हम पहली बार समुदाय में गए तो पहली चुनौती सामने आई मैंने पाया कि बच्चों ने यह मानस बना लिया था कि स्कूल बंद है यानि वे स्वतंत्र है। वे स्वछन्द होकर अपने खेलों में मस्त थे और माता–पिता डरे हुए थे कि ये मैडम शहर से बीमारी ले आयेगी तो हमारे बच्चे बीमार पड़ जायेंगे। वे अपने घरों के काम बच्चों को सौंप रहे थे। बच्चे बकरियां चराने, घरेलू कार्य आदि करने में व्यस्त थे। सबसे पहले हम घर–घर जाकर अभिभावकों से मिले। उनसे बातचीत की और उनको विश्वास दिलाया कि हम कोविड के सभी नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन कुछ घण्टे उनके बच्चों को पढ़ायेगे। इसके पश्चात् हमने एरियावाइज 5 से 7 बच्चों के समूह बनाये। और ये निर्धारित किया कि किन–किन दिनों में किस एरिया में जाना है और किसे जाना है? और किस विषय पर काम करना है ताकि बच्चे जो पढ़ने लिखने से विमुख हो गए है उन्हें वापस पढ़ने लिखने से जोड़ा जा सके।

पहली दो चुनौतियां तो हमने थोड़े प्रयासों से पार कर ली। बच्चों को आकर्षित करने के लिए सबसे पहले हमने समूह में जाकर कविता, कहानी आदि बुलवानी शुरू की। बच्चों से उनके परिवार व परिवेश पर बातचीत करने लगे। परिणामस्वरुप सभी बच्चे धीरे–धीरे हमारे पास आने लगे और अंग्रेजी विषय के तहत मैने एल्फाबेट ज्ञान के लिए फ्लेश कार्ड, चार्ट्स आदि बच्चों के बीच ले जाना शुरू किया। स्वयं बनाकर सीखे। इस मंशा से क्ले, मिट्टी आदि का उपयोग करवाया। 2 लैटर और 3 लैटर शब्दों के लिए फ्लेश कार्डस काम में लिए। वाक्य बनाने के लिए आवश्यक सामग्री तैयार करके बच्चों को सिखाने का प्रयास किया। उपरोक्त सभी गतिविधियों के अभ्यास हेतु नियमित गृहकार्य देना शुरू किया जिसके परिणामस्वरूप बच्चे खेल–खेल में विभिन्न भाषायी अवधारणायें सीख रहे थे।

✦ गणित विषय में चुनौति थी –

इसी बीच गणित विषय के बारे में भी मैंने सोचना शुरू किया और बच्चों का आकलन किया। आकलन में पाया कि संख्या ज्ञान और संक्रियाओं की समझ पर काम करवाया जाना जरूरी है विशेषकर ऐसे बच्चे जिन्होंने पहली में प्रवेश लिया और विद्यालय कभी नहीं आये और जो बच्चे विद्यालय से जुड़े हुए थे।

वे भी पहले से सीखा हुआ भूल गए मैंने आस–पास अवसर खोजे। चूंकि बच्चे स्कूल में नहीं आ रहे थे तो ग्रामीण परिवेश में उपलब्ध वस्तुएं हमारे लिए सहायक बन सकते थे। हमने कंकड़, पत्थर, तिलियों आदि का उपयोग किया। बच्चे कंकड़, पत्थर, तिलियां गिनकर अपनी मात्रात्मक समझ बना रहे थे। अंक पहचान के लिए मजेदार बालगीत, फ्लेश कार्ड आदि काम में लिये गए। विभिन्न गतिविधियों से नियमित अभ्यास करवाया जाता रहा। तिली–बंडल की मदद से दहाई, सैकड़ा तक संख्या ज्ञान, स्थानीयमान ज्ञात करना सिखाया गया।इन्हीं स्थानीय परिवेश से प्राप्त सामग्री का उपयोग करके विभिन्न अवधारणाओं पर कार्य किया।

शैक्षणिक सामग्री के साथ गणित को रोचक बनाया जा सकता है

✦ समीक्षात्मक टिप्पणी –

बच्चों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के सामूहिक प्रयास से महामारी में भी शिक्षा की गाड़ी को पटरी पर चला सके। संभावनाएं अपार थी, है और रहेगी मैंने 40 बच्चों के साथ सीखने सिखाने का काम किया।

✦ निष्कर्ष –

इस काल को मैंने लर्निंग समय के रूप में माना। अभिभावकों से पहले के मुकाबले ज्यादा जुड़ाव बना सकी। समुदाय के लोगों की यह धारणा कि शिक्षक कुछ नहीं करते है, को तोड़ने में मदद मिल सकी। वे अब महसूस करते है कि शिक्षक बच्चों को सीखने सिखाने में कितना मेहनत करते हैं। मैंने कई नई तकनीकों और एप्स पर कार्य करना सीखा।

''चुनौतियां तो रहेगी पर प्रयास ही उन्हें हरा सकते है।''

3.14 बुनियादी जरूरतें और शैक्षिक स्तर का पोषण –

विजय सिंह परिहार
राजकीय प्राथमिक विद्यालय डूंगरीयापाड़ा गणाऊ

जब शिक्षक बच्चों के साथ सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं की शुरुआत करें तो विशेष ध्यान रखें कि ऐसी सामग्री की मदद से शुरू करें जिसे बच्चे पहले से जानते हों जहाँ तक संभव हो सके नई चीजें सिखाने के लिए परिचित सन्दर्भ का उपयोग करें।

डूंगरीयापाड़ा मे मेरी सेवाएं सत्र 2019–20 से प्रारम्भ हुई। इससे पूर्व पीपलखूंट ब्लॉक, जिला प्रतापगढ़ में मैंने लगभग 18–19 वर्षो के सेवाकाल को पूर्ण किया और अनुभवों के बड़े पिटारे के साथ जब डूंगरीयापाड़ा पहुंचा तो मेरे सोच और कल्पनाओं से परे एकदम अलग ही स्थितियों से अपने आप को रूबरू पाया। जैसा मैंने सोचा था एकदम उसके विपरीत परिस्थितियों को वहां पाया। ऐसे हालात में अपने आपको देखकर पहला विचार यह आया कि संघर्ष का एक दौर अभी बाकी है लेकिन मेरे विस्तृत अनुभवों ने तुरंत ही मुझे आत्मविश्वास से सराबोर कर दिया। मैंने सत्र 2008–09 में जो दौर जीया था जो कि मेरी यादों और मेरे अनुभवों में कैद था वही मानो जैसे दुबारा सामने आ गया हो। खैर अनुभव वह चाबी होती है जो हर कठिनाई भरे ताले को खोल देती है। इसी विचार, जज्बात और बड़े ही उत्साह के साथ विद्यालय को जॉइन किया और मां सरस्वती को नमन किया तत्पश्चात् डूंगरीयापाड़ा की यात्रा शुरू हुई।

यहाँ पर सफर के पहले पड़ाव पर मैंने लिखने को हथियार बनाया और लगभग एक सप्ताह तक उन सभी बातों को मैंने लिखा जिनका एक विद्यालय में होना लाजिमी तौर पर जरूरी है अर्थात कि योजना का एक प्रारूप बनाने में समय देना मेरा पहला फैसला था। मैंने अपने लेखन में उन बातों को भी स्थान दिया जो विद्यालय में पहले से ही मौजूद हैं और जो नहीं है उनको अलग वर्गीकरण करते हुए आवश्यकताओं की सूची के रूप में तैयार किया और इसके साथ ही मेरी यात्रा का पहला चरण शुरू हो चुका था। आवश्यकताओं की सूची तैयार हो चुकी थी जो कि सीधे ही बच्चों को प्रभावित कर रही थी। इन सभी बातों का बच्चों पर सीधा प्रभाव पड़ रहा था और वास्तव में भी इन सभी बातों की नितान्त आवश्यकता थी। विद्यालय में शैक्षिक स्तर नगण्य था। भौतिक परिस्थिति अनुकुल नहीं थी। साथ ही बाल अधिकारों के संबंध में सिरे से कार्य किये जाने की जरूरत थी। कुछ चुनौतियों जैसे शुद्ध जल, खेल मैदान, पर्यावरणीय जानकारी, बरसाती मुसीबतों के रूप में मुहं बाए खडी थीं।

बच्चों का शैक्षिक स्तर नगण्य सा था उसका होना मेरी समझ में भी आता था जब तक बच्चों के साथ सीखने सिखाने की प्रक्रियाएं असरदार नहीं होती, बच्चों की रूचि और जुड़ाव को सुनिश्चित नहीं किया जाता है तब तक बच्चों के सीखने के स्तर पर प्रश्न बनता ही है और इन सब में शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि होती है शिक्षक को परिपक्वता के साथ–साथ कार्यशैली भी सरोकार के साथ अपनानी होती है। शैक्षिक स्तर को ठीक किये जाने के मेरे पास कई समाधान मेरे अनुभवों के पिटारे में जमे जमाए थे उनको धीरे–धीरे योजनाबद्ध तरीके से निकालना शुरू किया तयबद्ध तरीके से विद्यालय के सभी कक्षा–कक्षों की दीवारों और छत पर रंगरोगन और विद्यालय में टूट फूट ठीक करवाने और फर्श को मजबूती दिए जाने के क्रम में कार्य करवाए गए बच्चों के लिए बैठक व्यवस्था को दुरुस्त किया गया इस तरह से उपलब्ध संसाधनों के अनुसार एक कक्षा कक्ष कक्षा 1 व 2 के बच्चों के लिए और दूसरा कक्षा–कक्ष कक्षा 3, 4, 5 के लिए दो कक्ष तैयार किए। मेरी तय कार्ययोजना को प्रारूप देती प्रिन्टरिचनेस कक्षा कक्ष की दीवारों पर दिखाई देने लगी जो कि मेरी सोच के अनुसार बच्चों को अति उत्साही बना रही थी।

बच्चों के लिए पीने के पानी के रूप में अगली चुनौती मेरे सामने थी जो कि विद्यालय के साथ बच्चों का जुड़ाव तय करने, उपस्थित बच्चों की सीखने की प्रक्रियाओं के साथ जुड़ाव बनाने और मिड डे मील जैसी व्यवस्था को सही दिशा में आगे बढ़ पाने के लिए एक बुनियादी आवश्यकता के रूप में अपनी भूमिका निभाती है।

विद्यालय की पृष्ठभूमि और इतिहास यह बताता है कि विद्यालय परिक्षेत्र में चार हेण्डपम्प फेल हो चुके हैं क्योंकि यहाँ की जमीन पथरीली है, तो बच्चों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था कैसे की जाए ? यह सवाल मुख्य रूप से था। यहाँ पर मुझे समुदाय के साथ मिलकर बातचीत करना एक उचित समाधान नजर आ रहा था क्योंकि इस तरह से चर्चा करने पर कोई समाधान मिलकर निकाले जाने की दिशा में बढ़ा जा सकता है। इसी क्रम में सभी ग्रामीण वासियों को एकत्र किया और बच्चों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था किये जाने हेतु चर्चा करते हुए ये सुझाव मांगा कि पीने के पानी की व्यवस्था के लिए हम क्या–क्या कर सकते हैं ? समुदाय से उपस्थित लोगों ने बताया कि एक बार और कोशिश करते हैं और हेण्डपम्प कि सारी सामग्री दूसरे हेण्डपम्प में डालकर पाइप को पहले से अधिक गहरे में उतारते हैं ताकि पानी तक पहुंच बन सके। चर्चा के अनुरूप सभी ने मिलकर प्रयास किया। पानी तक पहुंच बन गयी थी पर ये व्यवस्था थोड़े समय तक ही चल सकी क्योंकि गहराई अधिक होने से हैंडपंप बड़ी ही कठोरता से चल पाता था धीरे–धीरे उसे चलने की आदत बनी परन्तु अधिक दिनों तक चली नहीं और हेण्डपम्प भी खराब हो गया। पानी जो बच्चों के लिए एक मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है उसकी पूर्ति के लिए मैं कुछ नहीं कर पा रहा यह बात मुझे सताती रहती लगातार सोचने के बाद समाधान के रूप में एक निष्कर्ष पर निकला कि इसके स्वरूप में बदलाव लाये जाने की जरूरत है और हैण्डपम्प में सबमर्सिबल पम्प लगवाकर इसे सफल प्रयास बनाने की कोशिश करते है। इस दिशा में आगे बढ़ते हुए और इस कार्य की जानकारी रखने वाले को लाकर लागत का आकलन किया गया जिसके अनुसार कुल खर्च (सामग्री और मजदूरी मिलाकर) रूपये 27,800 खर्च होना तय हुआ जो कि एक बड़ी रकम थी। मैं फिर से एक बार इस सवाल के साथ खड़ा था कि इसे पूरा कैसे किया जाए ? मगर कहते हैं जहाँ चाह वहाँ राह निकल ही आती है राह निकली और समस्या में हल्कापन शुरू हुआ।`डह की बैठक बुलाई साथ ही महिला मण्डल को बुलाया और योजना साझा की गयी इस रूप में मैंने अपनी झोली फैलाई कि आर्थिक मदद के रूप में कुछ हासिल किया जा सके ताकि लक्ष्य तक पहुँचने में मदद मिल सके। समुदाय की आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं होने से मात्र 6500.00 की राशि ही एकत्र हुई और मैं बेचारा एक बार फिर से अपने लक्ष्य से दूर हो गया। अपने साथ सिरे से काम करते हुए एक बार फिर अपने आपको मजबूत किया और सभी अध्यापकों तक जो कि मेरे पी.ई.ई.ओ. क्षेत्र में थे अपनी जरूरत की बात पहुंचाई। सभी ने सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया और राशि देना शुरू किया। लक्ष्य के आस–पास पहुंचकर बाकी बची राशि मेरे परिवार द्वारा समाहित करते हुए योजनानुरूप कार्यवाही को शुरू किया और इसे पूरा होने में लगभग डेढ़ से दो माह का समय लग गया। इस डेढ़ से दो माह के समय के अन्तराल में मैने विद्यालय में बिजली के कनेक्शन की कार्यवाही एस.एम.सी. के अध्यक्ष के साथ मिलकर पूरी करवाई। पानी की व्यवस्था के लिए सारी फिटिंग विद्यालय में होने के बाद पानी धारा प्रवाह विद्यालय में शुरू हुआ। अब विद्यालय में पानी और बिजली दोनों थे। पानी की व्यवस्था हो जाने के बाद विद्यालय की चारदीवारी जो टूटी अवस्था में थी उसको दुरुस्त किया गया। रंगरोगन के अधूरे छूटे हुए कार्य को भी पूरा करवाया।

इन सब के बीच बच्चों का शैक्षिक स्तर जो कि एक महत्वपूर्ण चुनौती थी वो अपने स्थान पर पूर्ववत खडी थी अभी तक तो मूलभूत आवश्यकताओं को लेकर ही काम हो सका था। हालाँकि इससे सम्बन्धित कुछ गतिविधियाँ मैं शुरू कर चुका था।

लेकिन शैक्षिक स्तर ने भी एक सवाल के रूप में मेरे दिमाग में स्थान बना रखा था और समाधान स्तर पर चीजें दिखाई देनी शुरू हो गयी थीं लेकिन उसे अमली जामा ना पहनाया जा सका क्योंकि कोरोना महामारी अपने विकराल रूप में हमारे साथ थी धीरे–धीरे वातावरण में परिवर्तन आने लगा और परिस्थितियां बदल गई और तालाबंदी के चलते बच्चे विद्यालय से दूर हो गए। बच्चों तक पहुचं जो अब तक आसान थी वह अब कठिन हो चली थी। चारों ओर एक डरावना माहौल बन चुका था। मैं सोचने को बाध्य था कि जिन बच्चों के लिए विद्यालय की बुनियादी आवश्यकताओं के रूप में एक लम्बी पारी मैं पहले ही खेल चुका हूँ वे बच्चे ही अब विद्यालय में नहीं हैं। अगले ही पल अपने आप को समझाया कि आज नहीं तो कल बच्चे वापस तो विद्यालय में आयेंगे ही सही।

इसी बीच बरसात के मौसम की दस्तक ने चुनौती की एक और परत को खोलकर मेरे सामने पेश किया। विद्यालय की छत पुरजोर के साथ टपकते हुए मेरे सामने थी जैसे मुझे चिढ़ा रही हो कि अब क्या करोगे बताओ पर चुनौतियाँ मेरे सब्र का बांध ना तोड़ सकी। टपकती छत को रिपेयर करवाने की योजना बनाई। एक बार फिर से समुदाय को साथ जोड़ा और विस्तृत प्रार्थना पत्र तैयार किया और सबके साथ पंचायत में पहुंचकर पुरजोर तरीके से ग्रामीणों ने अपनी बात रखी इनकी बात को सुना गया और प्रार्थना स्वीकार हुई और चाइनाभोजक की स्वीकृति पूर्ण हुई। चाइनाभोजक का कार्य छत पर शुरू हुआ।

दूसरी तरफ मौहल्ला एजुकेशन को चालू किया। मौहल्ले का निर्धारण कर ग्रुप बनाकर गतिविधि शुरू हुई। अभिव्यक्ति का दौर बच्चों का शुरू हुआ और प्रिंटरीच मेटेरियल मौहल्ले तक पहुंचाया और गतिविधियों को चलायमान रखा। मैंने देखा कोविड का असर मेरे क्षेत्र में कम था जिस वजह से सभी अपना काम निर्बाध रूप से कर रहे हैं और बच्चे खुले वातावरण में प्रकृति के साथ पढ़ने का आनन्द ले रहे थे। हर रोज बाल सभा हो जाती, अभिव्यक्ति और लेखन का मौका मिल जाता जिससे उन सभी में काफी उत्साह था। इसी उत्साह को बरकरार रखने के लिए ऑनलाइनकी बजाय ऑफ लाइन संसाधनों की आवश्यकता अधिक हुई जिसे पुस्तकालय के रूप में पारेख चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा वो आवश्यकताओं की पूर्ति की गयी। यहाँ से बच्चों के बैठने हेतु दरी और विभिन्न प्रकार की रोचक पुस्तकें जिनको काम में लेकर बच्चों को मजा आ रहा था।

इसी बीच विद्यालय के खेल मैदान के लिए जो काम किया जाना बाकी था उसे भी शुरू किया। खेल मैदान जिसकी पृष्ठभूमि पहले तय कर चुका था और एक बार पुनः SMC और PTA के साथ बैठक का आयोजन किया, एक प्रस्ताव तैयार किया गया एक बार पुनः पंचायत पहुंचकर आवेदन दिया और एक बाद पुनः किस्मत ने साथ दिया और 15 लाख रूपये की धनराशि के ब्लॉक स्वीकृति का कार्य शुरू हुआ। कोविड काल में छत रिपेयर, पानी सुविधा, मैदान को खेलने योग्य बनाने का कार्य किया जा सका और बच्चों से लगातार जुड़ाव बनाये रखते हुए शैक्षिक स्तर भी संतुलित रखा और अनवरत गतिविधियों का दौर चालू रखा।

चूंकि संघर्ष की कहानी तो बड़ी है परन्तु शब्दों में थोड़ा ही पिरो पाया।

3.15 संख्या ज्ञान भी एक कला है –

शिल्पा शाह

राजकीय प्राथमिक विद्यालय सुरापाड़ा, वार्ड 9, निचला घण्टाला

शिक्षक के लिए यह जरूरी है कि बच्चे को दिए जाने वाले निर्देशों को छोटे–छोटे हिस्सों में बाँट दें और इन निर्देशों को लिख दें साथ ही बच्चे को भी प्रोत्साहित करें कि वे कार्य प्रक्रिया के दौरान बहुत सारी चीजों को एक साथ याद रखने की बजाय लिखते चलें इससे लम्बी प्रक्रियाओं वाले कार्यों को कर पाना उनके लिए आसान हो।

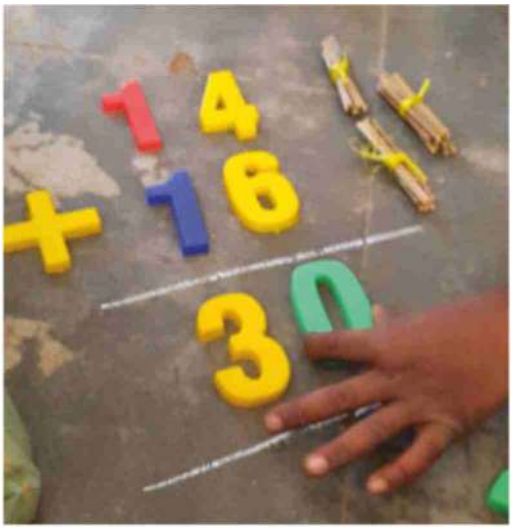

मूर्त से अमूर्त चिन्तन का विषय गणित

महामारी के रूप में जो समय चल रहा था जैसा हम सब जानते हैं उसमें संसार में बहुत कुछ बदल गया था। जिन्दगी जीने के तरीके सिरे से बदल गए लोगों के बीच शारीरिक दूरियों ने बच्चों के जीवन में एक तरह का ठहराव सा ला दिया। जीवन में जो परिवर्तन दिखाई देने लगे उससे कुछ चिंताएं उभरने लगीं खासकर आगे के जीवन को लेकर सवाल बनने लगे। एक शिक्षक होने के नाते बच्चों का सीखना तय करना मेरा परम कर्तव्य बनता है ये बात मुझे सदैव ही ज्ञात रहती है। महामारी के तालाबंदी वाले काल में मेरे भीतर का शिक्षक हमेशा मेरे दिमाग पर हावी रहता और तमाम तरह की समाधान आधारित सोच को साथ लेकर मैं अपने विद्यालय और बच्चों के लिए हर तरह की परिस्थितयों के साथ गुजरने को तैयार रहती। मेरे भीतर एक वैचारिक उथल–पुथल का दौर चल रहा था। जिसने इतना तो समझा दिया कि बच्चों की अवधारणात्मक समझ को लेकर नए सिरे से सोचना होगा। मेरी सोच के अनुरूप जैसे ही मैं बच्चों के बीच पहुँची मैंने वैसा ही बच्चों में पाया। सीखने–सिखाने की गतिविधियों और माहौल से दूर बच्चों ने जो पहले से सीखा हुआ था सब कुछ भुला दिया था चूँकि बच्चों का विद्यालय और शैक्षणिक गतिविधियों से दूरी और अलगाव जो हो गया था और इस गैप का इसका सीधा असर देखने को मिला बच्चों के सीखने के स्तर पर कि बच्चे जिस स्तर पर थे वहाँ से नीचे आ गए थे।

बच्चों के साथ गणित विषय पर काम किये जाने की जरूरत लग रही थी। मेरी सोच के अनुसार गणित विषय के लिए बच्चों की समझ का विकास करने के लिए जरूरी है पुराने सीखे हुए के आधार पर नए ज्ञान का निर्माण किया जाए, यह प्रक्रिया भी धीमी और क्रमिक होती है, कई बार भ्रांतियों, गलतियों और असंगतता का भी सामना करना होता है मेरे सामने स्थितियाँ ये थीं कि मेरे बच्चों ने गणित में जो भी सीखा हुआ था वो भूल चुके थे। स्थितियों के अनुरूप जो मेरे सामने इनमें मेरे बच्चे, गणित विषय और ये चुनौती के रूप में मेरे विचार कि बच्चों के साथ कार्य कहाँ से शुरू किया जाए ? इन्हीं सबके साथ आगे तो बढ़ना ही था। बच्चों की संख्या, विषय की प्रकृति को साथ लेकर मुझे तैयारी करने थी कि आज बच्चों की समझ के साथ मैं जिस मोड़ पर हूँ उससे आगे तो जाना होगा। मैंने बच्चों के वर्तमान स्तर को जाँचा और पाया कि बच्चों में संख्या ज्ञान की समझ को लेकर नए सिरे से कार्य करते हुए बच्चों के लिए सीखने वाला माहौल बनाये जाने की जरूरत है।

मैंने बच्चों के लिए यह काम नवाचारात्मक गतिविधि के माध्यम से करने का विचार बनाया ताकि बच्चों के लिए मजेदार हो और बच्चों में भी ये भाव ना पाए कि पहले से सीखा हुआ मुझे याद नहीं है क्योंकि शिक्षक होने के नाते मुझे लगता है बच्चों में अगर निराशा वाले भाव आते हैं तो वे आगे सीखने की गति को अवरोध करते हैं जरूरी है कि बच्चा सीखने–सिखाने की

गतिविधियों के दौरान खुशी ,उत्सुकता और जिज्ञासा के साथ रहे और इन्हीं सब विचारों के साथ मैंने कंकड, पत्थर, माचिस की तीलियां ब्लॉक आदि सामग्री जुटाई ताकि सभी स्तर के छात्र संख्याओं की समझ बना सके और शिक्षक होने के नाते एक बेहतर और सीखने का माहौल बच्चों को दे सकूँ। बच्चों को संख्या ज्ञान और इकाई, दहाई, सैकड़े की पूर्ण समझ बनाने के लिए हीं इन ठोस वस्तुओं द्वारा कार्य रूप दिया जाना तय किया। मैंने बच्चों को एकत्र कर सबसे पहले कंकड–पत्थर एकत्र कर लाने को कहा जब बच्चों ने कंकड़ जमा कर लिए तब मैंने पहले सामूहिक और फिर बारी–बारी से गिनने को कहा गया। हालाँकि मुझे पता था कि सब बच्चे गिन नहीं पाएंगे और वैसा हुआ भी कि एक स्तर के बाद बच्चे रुक गये हालाँकि सबका स्तर अलग–अलग था मेरी योजना यह थी कि जो बच्चे आगे तक गिन रहे हैं।

वे बच्चे अपने से पीछे चलने वाले बच्चों को सीखने में मदद करें यहाँ मैं (पियर लर्निंग) अवधारणा को काम में लेते हुए चल रही थी बच्चों ने मेरे निर्देशानुसार काम करना शुरू किया और धीरे–धीरे और बार–बार प्रयास करते हुए सब बच्चे एक स्तर पर आ सके। यहाँ पर मेरी भूमिका बच्चों को प्रेरित करने की थी मैंने आगे चलने वाले बच्चों को एक जिम्मेदार और साथ लेकर चलने वाले बच्चे के रूप में प्रेरित किया और जो पीछे चलने वाले बच्चे थे उनको आगे चलने वालों के साथ–साथ चलने के लिए प्रेरित किया। यहाँ पर मैंने इस बात का खास ख्याल रखा कि कक्षा में माहौल प्रतियोगी नहीं बल्कि स्वस्थ और साथ मिलकर सीखने वाला रहे इन सबके लिए मैं पहले से ही तैयार थी। और लगातार और नियमित रूप से इन सब गतिविधियों के जरिये मुझे यह उपलब्धि हासिल हुई कि इन तरीकों को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाने पर जो बच्चे सीखने में रूचि नहीं ले रहे थे वो भी रूचि लेने लगे और बच्चों को सिखाने का जो लक्ष्य मैं बना कर चल रही थी उसमें कुछ हद तक सफलता प्राप्त हुई। इस तरह से किये गए नवाचार की खास बात यह रही कि लॉक डाउन के अन्तर्गत जब घर–घर जाकर बच्चों को पढ़ाया जा रहा था तब शुरूआत में बच्चे दूर भाग रहे थें। लेकिनबाद में बच्चे हमसे जुड़ने लगे और जिन बच्चों ने संख्या की समझ बना ली थी वे आगे संक्रिया, स्थानीयमान की समझ भी बनाने लगे। निष्कर्ष के रूप में ये बताना चाहूँगी कि बच्चों के साथ स्तरानुसार अनेक प्रकार के कार्य किये जाने पर बच्चे उन गतिविधियों का हिस्सा बन पाते हैंऔर अगर हम बच्चों को आपस में सीखने के लिए माहौल बना दें तो काफी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलते हैं साथ ही जिम्मेदारी लेने के साथ बच्चे जवाबदेह भी बनते हैं।

सीखने–सिखाने की ये सभी प्रक्रियायें चूँकि तालाबंदी के दौरान समुदाय में बच्चों के साथ काम करते हुए की गई थी तो आस–पास के समुदाय को भी ये सब देखने और समझने का मौका मिल रहा था। परिणामतः समुदाय के लोगों के जो विचार आये वे इस प्रकार थे आप तो खेल–खेल में हीं बच्चों को कितना कुछ सिखा देते हो इस रूप में समुदाय के लोगों से काफी सकारात्मकता मिल सकी और बच्चों की भी सोच बनी कि हम गतिविधियों की सहायता से विषय संबंधित सभी समस्याओं का हल निकाल सकते है। इस पूरी प्रक्रिया में करीब 30 से 35 बच्चों को सिखाने में मदद मिल सकी इस वक्त मैंने एक खास बात पर ध्यान दिया कि इन प्रक्रियाओं से गुजरते हुए बच्चे आस–पास की दुनियादारी से दूर पूरी तरह से संलग्न होकर कार्य कर रहे थे।

बौद्धिक क्षमता का विकास भी करता है गणित विषय

3.16 अवसर देती चुनौतियाँ –

हिना पुरोहित
राजकीय प्राथमिक विद्यालय सालरापड़ा

शिक्षक की यह सोच होती है कि बच्चे ''सही'' सिद्धांतों को आत्मसात करें। यह तब और भी अधिक आसान हो सकता है जब शिक्षक और बच्चों के बीच परस्पर होने वाले संवाद विश्वास, स्नेह के माहौल के साथ–साथ नियमित और खुलेपन के साथ हों। बच्चों को ऐसे चुनौतीपूर्ण अवसर मुहैया करवाए जाएँ जिनको वे स्वविवेक के साथ सामना कर सकें और यह समझ सकें कि असंभव नहीं लेकिन कठिन जरूर है।

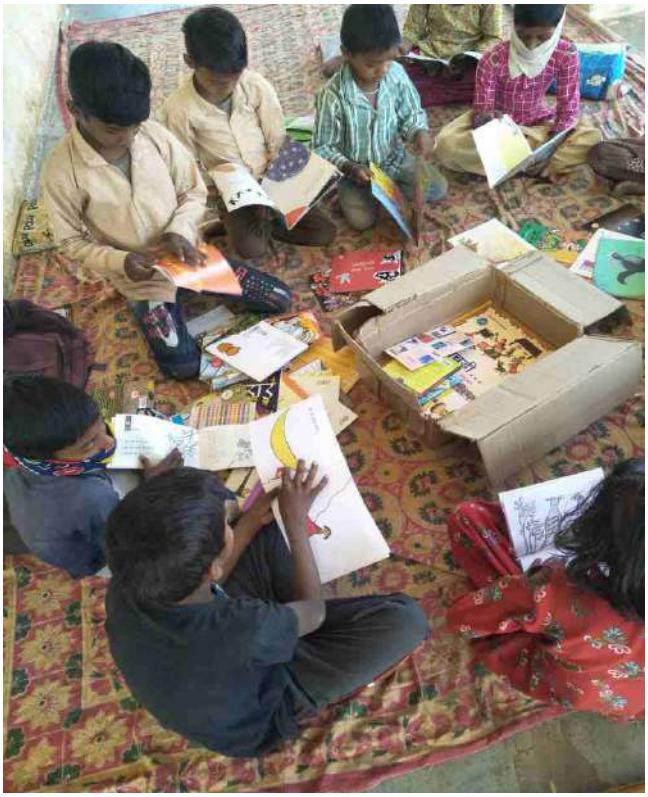

अपने हमउम्र साथियों के साथ मिलकर भाषा का विकास

बांसवाड़ा से 18 कि.मी. की दूरी पर स्थित मेरा राजकीय प्राथमिक विद्यालय, सालरापाड़ा, देवगढ़ पंचायत में स्थित है। यहां भील जनजाति के लोग निवास करते हैं और इनमें शिक्षा के प्रति रूझान की कमी है। ऐसे में और अधिक समस्या तब आई जब कोविड महामारी के कारण विद्यालय मे बच्चों की छुट्टियां हो गई। बच्चों का शिक्षण पूरी तरह से बंद हो गया। मन में हमेशा विचार रहता था कि ऐसा क्या किया जाए कि बच्चों का सीखना–सिखाना चलता रहे और बच्चे शिक्षा से जुड़े रहें।

बच्चों के पास समुदाय में जाकर सीखने–सिखाने की गतिविधियाँ करने के अलावा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। इसके लिए शाला स्तर पर सब शिक्षकों ने मिलकर बातचीत की जिसमे संभावित चुनौतियाँ भी निकलकर आई और यह करना ठीक भी रहा क्योंकि जब पहले से चुनौतियों का अनुमान होता है तो योजना और तैयारी में मदद मिल जाती है। हमे पता था कि महामारी को लेकर समुदाय में डर होगा और इस डर के चलते समुदाय से जुड़ने के लिए कार्य करना होगा। यह हुआ भी सही जैसे ही समुदाय के बीच पहुंचे लोगों के डर को दूर किये जाने को लेकर कार्य किया गया। लोगों की समझ को विस्तार देते हुए महामारी क्या है, इससे कैसे बचा जा सकता है, स्वास्थ्य का ध्यान क्यों और कैसे रखा जाना है आदि पर विस्तारपूर्वक चर्चाएँ की गईं।

बच्चों के घर दूर–दूर होने के कारण छोटे–छोटे समूह बनाकर कार्य किया गया। जिससे समय कम लगे और अधिक छात्रों तक पहुंच बन सकेऔर इसलिए ही शिक्षण कार्य में समुदाय का सहयोग लेना,छोटे बच्चों के शिक्षण में बड़े बच्चों या उनके माता–पिता का सहयोग लिया जाना जैसी महत्वपूर्ण योजनायें बनी और सफलता के साथ लागू भी हो सकीं। शाला स्तर पर चर्चा करते समय हम लोग सोच पा रहे थे कि बच्चे लम्बे समय से शैक्षणिक गतिविधियों से दूर हैं ऐसे में कैसे माहौल बनाकर बच्चों का सीखना–सिखाना व शिक्षण कार्य दुबारा शुरू हो सकेगा और बच्चों का जुड़ाव सुनिश्चित करते हुए तथा उनमें रूचि जागृत करना संभव हो सकेगा लेकिन जिस तरह से हमने योजना बनाकर और तैयारी के साथ समुदाय स्तर पर कार्य की शुरुआत की थी उम्मीद से परे सफलता भी शोर मचाने लगी थी।

✦ समुदाय के साथ मिलकर सीखना तय किया गया –

समुदाय में जाना शुरू करने से पहले ही यह योजना बना ली थी कि सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं में गाँव के बड़े बच्चे जो कक्षा 8–10 के विधार्थी हैं इनकी मदद लूंगी। जुलाई 2020 सबसे पहले समुदाय में जाना शुरू किया और समुदाय के लोगों के साथ मिलकर बातचीत की गयी। यहाँ पर सबसे पहले योजनानुसार बच्चों का चयन किया गया और इन बच्चों के साथ मिलकर कार्य करना शुरू किया। मैंने पहले से ही कुछ कहानियों और कविताओं, शब्दों, चित्रों आदि का चयन किया हुआ था इस अनुरूप इन बच्चों के साथ मिलकर कुछ चार्ट तैयार किये गए और मौहल्लों में जाकर बच्चों के घरों में इन चार्ट और पोस्टरों को लगाया। ऐसा मैंने इसलिए किया क्योंकि मेरा मानना है कि बच्चे के आस–पास लिखा हुआ बार–बार अगर बच्चा देखता है तो धीरे–धीरे इस लिखे हुए से बच्चे की दोस्ती हो जाती है बच्चा इनको पहचानने लगता है। इसके साथ ही जिन बच्चों के साथ मुझे कार्य करना था उन बच्चों के बड़े भाई बहनों ने उनको पढ़ाना शुरू किया। इस तरह समुदाय में कई ऐसे बच्चे तैयार हो गए जो छोटे बच्चों को सिखाने का कार्य करने लगे।

✦ पुस्तकालय की पुस्तकों से मिली मदद –

इसके साथ ही मेरी समझ ने ऐसा कार्य किया जिसमे मैंने पुस्तकालय की पुस्तकों की भी मदद ली | बच्चों को रंगीन चित्रों की पुस्तकें काफी आकर्षित करती हैं अतः मैंने बच्चों के लिए कुछ सरल और शुरुआती स्तर की पुस्तकों का चयन किया और इन पुस्तकों को समुदाय में घर–घर जाकर बच्चों को दिया मेरा लक्ष्य यहाँ पर बच्चों को सिखाना नहीं था बल्कि पुस्तकों से बच्चों की दोस्ती करवाना था। चूँकि पढना–लिखना सिखाने के लिए यह पहली जरूरत होती है और मैं अपनी योजना में सफल हो सकी पुस्तकालय की पुस्तकों से मुझे बहुत मदद मिली। बच्चों को कहानियां पढ़ने, चित्र देखने में मजा आने लगा। धीरे–धीरे बच्चों में पढ़ने की आदतों का विकास होने लगा। हमने हर मौहल्ले में एक–एक छोटा पुस्तकालय बना रखा था। इन छोटे पुस्तकालयों पर कुछ किताबों के साथ एक कॉपी और एक पेन भी रखा था ताकि समुदाय के जिस भी बच्चे को जो किताब भी पढने के लिए चाहिए वो अपना नाम और किताब जो वो लेकर जा रहा है के बारे में जानकारी इस कोपी में लिख दे और इसे अपने साथ ले जाए। इसमें उन बच्चों के लिए भी मैंने विशेष ध्यान रखा था जिन बच्चों को पढ़ना नहीं आता था। इन बच्चों को इनके बड़े भाई या बहिन कहानी पढ़कर सुनाते और कहानी सुन लेने के बाद वे इस कहानी से सम्बन्धित चित्र बनाते, कहानी सुन लेने के बाद ये बच्चे इस किताब को उलट पलट कर जी भर कर देखते ताकि सुनी हुई कहानी को पुनः स्मरण कर सके और सुने हुए शब्दों को देखकर उनसे दोस्ती कर सकें और अगले दिन जब मैं उनके घर जाती तो सुनी हुई कहानियों को मुझे सुनाते थे और मुझसे कहानी सुनते भी थे।

✦ बच्चों को मौलिक लेखन के लिए मिली प्रेरणा –

मेरी योजना के अगले चरण की तरफ मैंने बच्चों को रंग–बिरंगी डायरियाँ वितरित की इस अपेक्षा के साथ कि हमेशा सुबह से लेकर शाम तक के समय में आप जो कार्य करते हैं या कार्य करते हुए जो कुछ भी महसूस करते हैं उन अनुभवों को इस डायरी में लिख लें औरअगले दिन मेरे साथ साझा कर सकते हैं।

रंग–बिरंगी डायरियों में लिखने का बच्चों को बड़ा मजा आने लगा। बच्चे जो कुछ भी या जैसा भी लिखते मैं उनकी प्रशंसा करती और उन्हें लिखते रहने को लेकर प्रेरित करती साथ ही जब बच्चे अपने लेखन को मेरे साथ साझा करते तो मैं उन्हें कुछ सुधार के सुझाव भी देती जिन्हें वे अपनी अगली डायरी लेखन के समय ध्यान रखते हुए लिखते। धीरे–धीरे बच्चों के मौलिक लेखन में सुधार होने लगा और इस प्रक्रिया में बच्चों ने भरपूर आनंद उठाया।

✦ गणित शिक्षण भी है जरूरी –

भाषा शिक्षण से आगे गणित शिक्षण की योजना और तैयारी भी मैंने पूरी तरह से कर रखी थी अतः इसे भी अमली जामा पहनाया जाना जरूरी था। इसके लिए बच्चों के छोटे–छोटे समूह बनाकर रोज पढ़ाने का कार्य शुरू हुआ। छोटे बच्चों में कंकड़ों, तिलियों आदि की सहायता से गिनने की शुरूआत की गई। गिनने से संख्या ज्ञान की ओर बढ़ा गया और धीरे–धीरे इनके दैनिक जीवन के उदाहरणों से गणित को जोड़ते हुए दैनिक जीवन में लेन–देन जैसे कार्य जिसमें पैसों का हिसाब होता है, जिसमें जोड–बाकी होती है सम्बन्धित कार्यों की तरफ आगे बढ़ने लगे। बच्चों को मोतीमाला, तीलियों के बण्डल से इकाई–दहाई आदि से उनमें संख्या ज्ञान व जोड़ व बाकी से सम्बन्धित समझ बनाने का प्रयास किया गया।

शिक्षा विभाग द्वारा बच्चों के लिए कार्यपुस्तिकाओं का भी वितरण किया गया तथा उन पर भी कार्य किया गया। जो अभ्यास करवाने हेतु बहुत मददगार साबित हुई। इन छोटे समूहों में फोन से छोटी–छोटी कविताएं, कहानियों आदि के विडियो भी बच्चों को दिखाये जिन्हें देखना बच्चे बहुत पसंद करते थे कुछ ही समय पश्चात जब स्माइल कार्यक्रम शुरू हुआ इसमें भी विषय से संबंधित छोटे–छोटे विडियो विभाग द्वारा आने लगे। इन विडियो को भी बच्चों को अपने फोन से ही दिखाया जाने लगा। इन सब कार्यो में चुनौतियां भी आई परन्तु फिर भी कार्य होता गया। शुरूआत में जब बच्चों से दूरियां लग रही थी वो इन तमाम गतिविधियों के माध्यम से से कम हो गई तथा नए–नए प्रयोगों के साथ शिक्षण कार्य भी सतत चलता रहा।

शिक्षक और बच्चे मिलकर चिन्तन करते हुए

✦ इन सभी कार्यो से मैंने भी सीखा –

- मुझे लगता था कि बच्चे केवल कक्षा–कक्ष में ही सीखते है, जबकि उन्हें अवसर और माहौल उपलब्ध करवाए जाएँ तो बच्चे कक्षा कक्ष की चारदीवारी के बाहर भी बहुत अच्छी तरह से सीखते हैं।
- बच्चों को पाठ्यपुस्तकों से इतर अन्य कई प्रकार की सामग्री तथा तरीकों से भी सिखाया जा सकता है।
- यदि समुदाय से बात की जाए या उनका सहयोग लिया जाए तो बच्चों को सिखाने में अधिक मदद मिलेगी।
- बच्चों को अवसर व परिस्थितियां दी जाए तो वे स्वयं करके भी सीखते हैं।
- चुनौतियां तो हमेशा आती रहती है परन्तु उनका समाधान ही नये अवसर व तरीके देता है।

3.17 एकाकीपन को विराम –

श्री हेमांग दवे
राजकीय प्राथमिक विद्यालय हाटखेड़ा

प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता पर्यावरण अध्ययन के दौरान बच्चों में एक ऐसे पहलू का विकास करते हैं जिसमे बच्चे सामाजिक तथ्यों के बारे में उत्सुकता महसूस करें जिसे परिवार की एक इकाई से शुरू करते हुए वृहद विस्तार दिए जाने की भूमिका में शिक्षक को कार्य करना होता है।

ठोस चीजों से गणित शिक्षण

कोविड–19 व लॉकडाउनके दौरान जब बच्चे अपने–अपने घरों में थे लेकिन एक समय के बाद शिक्षक विद्यालयों में थे बच्चों को स्वयं को अभिव्यक्त करने के अवसर नहीं थे तथा शैक्षणिक गतिविधियों से पूरी तरह से दूर हो गए थे। लेकिन मेरी यह सोच थी कि इसका असर मेरे विद्यालय के आदर्श, स्वस्थ एवं सपनों के अनुरूप विद्यालय बनाने की रूकावट के रूप में सामने ना आये अतः सामुदायिक रूप से शिक्षण प्रक्रिया अपनाने हेतु विचार और प्रेरणा मिली और कुछ घरों में बच्चों के लिए यथेष्ठ सामग्री उपलब्ध न होने से शिक्षा से दूर रह जाने की चुनौती आने की सम्भावना के कारण सामग्री उपलब्ध करवाने का विचार मन में आया। जैसा कि हम जानते ही हैं कि बच्चों के चार मूलभूत अधिकारों में सहभागिता का अधिकार शामिल है। मेरा मानना है कि सहभागिता के अधिकार के सही स्वरुप को अगर देखा जाए तो बच्चों को बचपन से ही छोटे–छोटे निर्णय लिए जाने के अवसर मिलें और शिक्षकों के लिए इन अवसरों को विद्यालयों में हर स्तर पर उपलब्ध करवाना जरूरी है। बच्चों को शिक्षण एवं विद्यालय के संबंध में निर्णय लेने का अवसर मिले इस बात का ध्यान मैंने लॉकडाउन के दौरान जब विद्यालय बंद थे तब भी रखा चूंकि विद्यालय बच्चों का ही है अतः उसे आकर्षक बनाने में उनकी भूमिका और उनके निर्णय को महत्व देना जिससे बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ावा मिल सके और उन्हें अभिव्यक्ति के अवसर मिल सके यह मेरा मूल लक्ष्य था। महामारी के रूप में दुसाध्य समय में मेरी गतिवधियों का आयोजन भी मेरे लक्ष्य के इर्द गिर्द ही था।

✦ निर्णय लेने के अवसर देता सहभागिता का अधिकार –

लॉकडाउन के दौरान जब हम शिक्षक साथी समुदाय स्तर पर बच्चों के घरों पर शैक्षणिक गतिविधियों के आयोजन के लिए जाते थे इस दौरान मैंने बच्चों से जानना चाहा कि तालाबंदी के बाद जब वापस सुचारू रूप से विद्यालय चालू होंगे और सभी बच्चे विद्यालय आने लगेंगे तब आप अपने विद्यालय को किस रूप में देखना पसंद करेंगे? सवाल के जवाब में बच्चों ने अपने–अपने विचार रखते हुए कहा कि विद्यालय को आकर्षक रूप देने की जरुरत है और इसी प्रक्रिया में विद्यालय की दीवारों पर रंग रोगन किया जाए साथ ही कक्षा–कक्ष की दीवारों को रंगीन चित्रों से सजाया जाए।

बच्चों की रूचि को अधिक विस्तार से समझने और कार्यरूप में शामिल करने के लिए उनकी रूचि के जानवरों या कार्टून पात्रों के रूप में एक सूची बनाई गयी जिसमें छोटा भीम, मोगली, अलग–अलग जानवरों के रोचक चित्र, सूर्य एवं तारामण्डल, गणितीय आकृतियों जैसी विविध आकृतियों के नाम मुख्य रूप से सूची में उभरकर आये इस प्रकार बच्चों की रूचि के अनुरूप एक साझी सूची बच्चों के साथ मिलकर तैयार हो सकी जिसमे बच्चों के निर्णय और सहभागिता का खास ख्याल रखा गया इतना ही नहीं जब विद्यालय में रंग–रोगन और मरम्मत के कार्य की शुरुआत हुई तो बच्चों के सुझाये अनुरूप कक्षा कक्षों, विद्यालय की बाहरी दीवारों पर रंगरोगन किया गया।

✦ मिलकर कार्य करने से फुलवारी/बाल वाटिका का निर्माण हुआ –

इसी दौरान विद्यालय में फुलवारी निर्माण के लिए भी योजना बनाई गयी। तय योजना के अनुसार स्थानीय समुदाय के सहयोग से कार्य किये गए। समुदाय के कुछ लोगों ने मिलकर गड्ढों को खोदने का काम किया, कुछ लोगों ने इनकी बाउन्ड्री हेतु स्थानीय भट्टा से मोटर साइकिल द्वारा ईंटे लाने का कार्य किया। यहाँ पर भी बच्चों के सहभागिता के अधिकार को ध्यान में रखकर कार्य करने के क्रम में बच्चों की पंसद के फूल पत्तियों वाले पौधों को लगाया गया। कई पौधे तो स्वयं बच्चों ने ही उपलब्ध करवाए थे साथ ही तारबंदी के लिए तार भी समुदाय के सहयोग से उपलब्ध करवाया गया और समुदाय के लोगों और बच्चों के साथ मिलकर इनकी तारबंदी भी की गयी। इसी प्रकार से बांस की झोपड़ी से 50 से अधिक पौधारोपण कार्य करवाया गया।

✦ कमजोर आर्थिक स्थिति वाले बच्चों को पहचाना –

महामारी के दौर में जब समुदाय में निरंतर वक्त बिताने का मौका मिल रहा था तभी समुदाय के लोगों की माली हालात के बारे में भी समझने के अवसर मिल रहे थे। समुदाय के बीच में समय बिताकर इनके आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर स्थिति को जाना और समझा। घर–घर भ्रमण के दौरान ऐसे लोगों से भी मुलाकात हो सकी जिन बच्चों के परिवारों में माता अथवा पिता की मृत्यु हो चुकी थी जो एकल माता या एकल पिता की भूमिका में रहकर बच्चों का पालन पोषण करते हैं और आर्थिक रूप से कमजोरी के शिकार हैं। यहाँ पर मैंने मेरे एक मित्र के साथ जुड़कर कुछ स्टेशनरी और अन्य शैक्षणिक सामग्री जैसे–स्कूल बैग, स्कूल ड्रेस आदि सामग्री 14 से अधिक परिवारों में वितरित करवाई ताकि पुनः स्कूल खुलने पर वे शिक्षा एवं विकास के मूल अधिकार से वंचित न हो जाए।

✦ शैक्षणिक स्तर को सहयोग देती पुस्तकालय की पुस्तकें –

महामारी और तालाबंदी के समय जब बच्चों के साथ सीखने–सिखाने की गतिविधियों का आयोजन करने की योजना बना रहे थे तब पुस्तकालय की पुस्तकों को मैंने सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं के सहयोगी के रूप में चुना। सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं के दौरान कई बार ऐसे मौके आते हैं, बड़े बच्चे तो अपने आप भी कार्य कर लेते हैं लेकिन चूँकि छोटे बच्चे ज्यादा समय तक अपने आप ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते और तुरंत ही उन्हें शिक्षक के सहयोग की जरूरत लगती है।

ऐसे में पुस्तकालय की पुस्तकें दोनों ही तरह के समूह के बच्चों को मदद कर सकता है और शिक्षक भी एक समूह को स्वयं पढने के लिए ये पुस्तकें देकर दूसरे समूह के साथ जुड़कर कार्य कर सकता है। इसी रणनीति को केंद्र में रखकर बच्चों को घर–घर जाकर रोचक चित्रों वाली बाल पुस्तकों, पुस्तिकाओं, चंपक आदि को पढने के लिए उपलब्ध करवाया। साथ ही बच्चों को अपने आप घर पर उपलब्ध स्थानीय सामग्री जैसे बोतल के ढक्कन आदि से मोतीमाला के निर्माण हेतु भी प्रेरित किया। कुछ स्थानीय सामग्री से संदर्भ सामग्री निर्माण करना, सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं को बेहतर करने के लिए चार्ट और कार्डों का निर्माण करना और इनकी मदद से सीखना सुनिश्चित किया गया और साथ ही इन गतिविधियों से कोविड काल में बच्चों का एकाकीपन दूर हुआ। उन्हें शिक्षा एवं स्वयं के विकास के अवसर भी प्राप्त हुए।

✦ समीक्षात्मक टिप्पणी –

असीम नवाचारों से बच्चों के आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी हुई एवं शिक्षा के साथ जो दूरी बनी थी उसे थोड़ा कम किया जा सका। लेकिन इन गतिविधियों में समुदाय को और अधिक जोड़ा जा सकता था और इन प्रयासों में 81 बच्चों को जुड़कर कार्य करने का मौका मिला सका।

✦ निष्कर्ष –

कोविड काल में भी बच्चों के मूल अधिकारों को केन्द्र में रखकर काफी कार्य करने के अवसर थे। हालांकि कई चुनौतियां थी परन्तु प्रयास एवं नवाचार से चुनौतियों को अवसर में बदला जा सका बाल अधिकारों की सोच के साथ काम किया जा सका, समुदाय का विद्यालय से जुड़ाव बढ़ा और साथ ही समुदाय के लोग बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक हुए हैं बच्चों की क्रियाशीलता, उनके विचार, प्रक्रिया को जानने के अधिक अवसर मिले।

3.18 सूत्रधार की भूमिका निभाता शिक्षक –

राजमती जैन
राजकीय प्राथमिक विद्यालय खाखेला, ठीकरिया

भाषा का विकास करते समय बच्चे भाषा के बारे में समझ बना रहे होते हैं लेकिन इसके परे एक बड़ा कार्य हो रहा होता है चूँकि भाषा अन्य विषयों को पढ़कर समझने के लिए आधार का कार्य करती है। इस प्रकार भाषा दोहरी जिम्मेदारियों के रूप में बच्चों की मदद कर रही होती है।

उपलब्ध संसाधन सीखने के आधार

सीखने के अवसर हर जगह मौजूद हैं। छोटी–छोटी गतिविधियाँ करने से सम्पूर्ण ज्ञान हासिल नहीं हो सकता लेकिन छोटी–छोटी गतिविधियों को करने से छोटे–छोटे और नए–नए अनुभव बनते हैं और ये अनुभव जब पहले से बने अनुभवों के साथ जुड़ते हैं तब बच्चा अपने आप ही कुछ नयी अवधारणायें बनाता है जो कि उसके नए ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा बन सकते हैं। शिक्षक इन सबमें मुख्य भूमिका में होता है जो पहल और अपनी नई सोच के माध्यम से इस प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है और ये गतिविधियों का प्रारूप ही होता है जो हर बार यह परिभाषित करने की मांग करती है कि शिक्षक की क्या भूमिका है और विद्यालय की क्या गतिविधि है ? मेरी समझ के अनुसार सीखना शिक्षक और बच्चे दोनों ही के लिए मजेदार हो सकता है अगर यह अनुभव आधारित हो। इन गतिविधियों में शिक्षकों की भूमिका सूचना के हस्तांतरण की नहीं है, बल्कि एक सहभागी, सीखने की प्रक्रिया में एक सूत्रधार और संसाधनों को जुटाने में सहयोग करने की भूमिका होनी जरूरी है।

मेरा विद्यालय एक ग्रामीण क्षेत्र में है। महामारी का एक पीड़ादायी समय जिसने पूरी मानव जाति को एक अलग तरह से अनुभव और सीख दी। एक सामन्य तरह से चल रहे जीवन को नए सिरे से हर किसी को देखे जाने के लिए विवश कर दिया इस दौर ने। सवाल सबके पास थे और जवाब किसी के पास नहीं थे। महामारी के दौर ने बच्चों और शिक्षकों को एक ढर्रे पर चल रहे जीवन से अलग सोचे जाने के लिए भी मौका दिया। शिक्षकों ने नए–नए प्रयोग बच्चों के साथ किये और बच्चों ने अवलोकन करने, छानबीन करना, अन्वेषण करना आदि कई अलग तरह से जुड़ाव बनाया हालाँकि एक बड़ी संख्या में ऐसे बच्चे भी थे जो पूरी तरह से सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं से वंचित ही रह गए। हम शिक्षकों ने समुदाय के साथ मिलकर काफी नए–नए प्रयोग किये बच्चों का जुड़ाव बढ़ाने और बनाने के भरसक प्रयास किये हालाँकि बहुत कुछ और भी किया जा सकता था।

✦ कंकडों के माध्यम से –

मैंने बच्चों के साथ मिलकर कुछ कंकड़ एकत्रित किये और इन्हें अलग–अलग रंगों से रंग लिया जैसे–रेड, ब्लू, ब्लेक आदि। इन कंकडों के माध्यम से बच्चों को कई तरह की गतिविधियाँ करवाई गईं। जैसे–रंगों की पहचान हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओँ में, कंकडों के माध्यम से बच्चों को गिनना सिखाया और साथ ही मिलाना और घटाना के शुरुआती अवधारणा पर कार्य किया जा सका बाद में बच्चों ने इन कंकडों को लिखित रूप से कार्य किये जाने के दौरान भी सीखने का हिस्सा बनाया। इन्ही कंकडों के माध्यम से वर्ण सिखाने का कार्य भी बच्चों के साथ किया गया। चूँकि ये गतिविधियाँ रोजमर्रा से अलग तरह की होती थी तो इनको करने में बच्चों को आनंद आया और बच्चे पूरी तरह से जुड़कर काम करने लगे थे।

✦ बच्चों ने भाषा का विकास किया –

बिना शिक्षक के भी सीखने को प्रेरित

मैने शुरू में बच्चों के लिए अ से ज्ञ तक के वर्णों के कार्ड बनाये और इनको सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाया। कंकडों के माध्यम से खेल–खेल में बच्चों को वर्ण सिखाये।बच्चों को कहानी सुनना और सुनाना बहुत पसंद आता है और इसीको मैंने अपनी कार्य योजना का हिस्सा बनाया। मैंने पुस्तकालय से कुछ हिन्दी और अंग्रेजी की कहानियों की पुस्तकों को चुना और इनके माध्यम से बच्चों को चित्र दिखाकर बातचीत करना और पढने के लिए प्रेरित किया। बच्चों को अच्छा लगता और उन्हें पढ़ने में भी आनन्द आता। हाव–भाव के साथ बच्चों के साथ मिलकर छोटी–छोटी कवितायें गाने का कार्य किया जाता। बच्चों को मोबाइल पर विडियो दिखाकर भी भाषा विकास सम्बन्धित गतिविधियाँ की गईं। बच्चों को मोबाइल से दो अक्षरों वाले शब्द बोलना सिखाया जिससे बच्चे दो वर्ण वाले शब्द सीख सके और इस तरह धीरे–धीरे किताब पढ़ना सीख गए। लाइब्रेरी की पुस्तकों को 4–5 के बच्चों के समूह में पढ़ाया गया। जिससे जो बच्चे जल्दी सीखते हैं वे बच्चे कम या धीरे सीखने वाले बच्चों की मदद कर सकें इस तरह से मिलकर सीखना–सिखाना तय किया जा सकता है।

कहानियाँ सुनने और सुनाने से भी आगे इन कहानियों पर छोटे–छोटे नाटक (**Role Play**) भी तैयार करवाए जैसे किसी एक बच्चे ने शेर बनकर और किसी दूसरे बच्चे ने चूहे की भूमिका में आकर कहानी के आधार पर अभिनय किया बच्चों को बहुत अच्छा लगा साथ ही बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति को भी बेहतर किया जा सका और बच्चों का आत्म विश्वास उनकी आँखों में झलक रहा था। शिक्षक होने के नाते मुझे भी काम करने में खुशी, आनंद और संतुष्टि के मिले जुले भाव महसूस हो रहे थे।

✦ पर्यावरण के साथ जीवन का आनंद –

बच्चों को कक्षा–कक्ष में पुस्तक से पढ़ाना, फिर प्रश्नोत्तर करना। इस प्रक्रिया में बच्चे सीख क्या रहे हैं इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल हो जाता है। इस समय मैंने बच्चों को पर्यावरण के बीच में ले जाकर पर्यावरण अध्ययन करने की योजना बनाई। हमारे विद्यालय परिसर में चारों तरफ पेड़ हैं और इन्हीं पेड़ों के इर्द गिर्द बच्चों के लिए पर्यावरण अध्ययन की कक्षा का आयोजन किया गया। बच्चो को अलग–अलग फूल, पत्तियों की जानकारी फूलों और पत्तियों के साथ जाकर दी गई बच्चों ने आपस में चर्चा और बातचीत के माध्यम से एक दूसरे को सिखाया। बच्चों ने अलग–अलग तरह की पत्तियों को एकत्र करके कोलाज भी बनाया और बच्चों को उनके बारे में जानकारी देना। लकड़ी का महत्व और पेड़ों से मिलने वाले लाभ के बारे में खुलकर चर्चाएँ की गईं। चर्चा के दौरान यह ध्यान रखा गया कि सभी बच्चों को अपने विचार साझा करने के मौके मिल सकें। इन सभी गतिविधियों के दौरान मुझे शिक्षिका होने के नाते यह सीखने को मिला कि कक्षा कक्ष में जो पुस्तकों के माध्यम से जानकारियाँ बाँटने का काम किया जाता रहा है इन जानकारियों को बच्चे कुछ समय बाद भूल जाते थे। किन्तु जब गतिविधियों के द्वारा किया जाता है तो बच्चे भूलते नहीं है बल्कि ये अनुभव उनके जीवन का हिस्सा बन जाते हैं।

3.19 समुदाय का सहयोग –

रचना शर्मा
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, गराडियापाड़ा, झरी

गणित शिक्षण के माध्यम से बच्चों में तर्कसंगतता का विकास, अमूर्त में चिंतन करना सीखना आदि चीजें होती हैं। बच्चा विश्लेषण करना सीखता है जो कि बच्चों के भावी जीवन के दैनिक क्रिया कलापों के लिए महत्वपूर्ण हो सकेगा।

शिक्षक के साथ स्केल से मापना सीखते हुए बच्चे

मेरा विद्यालय गाराडियापाड़ा जहाँ पर मेरे साथ 3 शिक्षक भी हैं इस तरह से हम 4 लोग मिलकर इस विद्यालय से जुड़े हुए हैं विद्यालय जो कि 1991 से अस्तित्व में है और इस तरह से कई उतार–चढाव के दौर मेरे विद्यालय ने झेले हैं। वर्तमान में महामारी का अकल्पनीय दौर जिसका सामना विद्यालय के 139 बच्चों और 4 शिक्षकों ने मिलकर किया है। महामारी के दौरान जैसे ही विद्यालय में तालाबंदी हुई बच्चों और शिक्षकों का विद्यालय आना बंद हो गया था बड़ा ही विचित्र और अनिश्चितता वाला दौर था। मानसिक पीडा इस स्तर पर कि कल्पना भी मुश्किल थी कि बच्चे सहजता के साथ अपने–अपने घरों में होंगे। एक लम्बा समय घरों पर बिताने के बाद जब हम शिक्षकों ने विद्यालय में आना शुरू किया तो थोड़ी उम्मीद बनी लेकिन सिर्फ शिक्षकों के होने से क्या होता है क्या कर लेगा अकेला शिक्षक जब बच्चे ही विद्यालय में नहीं होंगे। चारों शिक्षकों ने बैठकर इस अनिश्चितकालीन दौर को लेकर चर्चा और विचार–विमर्श किया। चर्चा के दौरान ही हम लोग समाधान की तरफ आगे बढ़े जिसमें यह निकलकर आया कि बच्चे विद्यालय में नहीं हैं तो हम शिक्षकों को समुदाय में चलना चाहिए वरना हम शिक्षकों का शिक्षक होना व्यर्थ है जब संकट कालीन परिस्थितियों में हम सब बच्चे और शिक्षक साथ नहीं तो क्या औचित्य रह जाता है। आगे की योजना बनाए जाने के क्रम में हम चारों शिक्षकों ने मिलकर समुदाय को 3 हिस्सों में बांटकर कवर करना तय किया और तीनों जगहों पर 1–1 ने जाना तय किया और 1 शिक्षक के लिए यह विचार बनाया कि 1 शिक्षक को तो विद्यालय में ही रूककर अन्य व्यवस्थात्मक कार्यों को पूरा किया जाना चाहिये।

✦ गणित शिक्षण –

शुरू से ही मैं नवाचारात्मक प्रक्रियाओं के साथ सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को करना, नए–नए प्रयोग करना पसंद करती रही हूँ। गणित शिक्षण को लेकर मैं मानती रही हूँ कि यह एक ऐसा विषय है जो आमतौर पर बच्चे पढना पसंद नहीं करते लेकिन मेरे अनुसार यह विषय बच्चों को आनन्द दे सकता है विषय की प्रकृति को समझते हुए कार्य किये जाने की जरूरत है और जब प्रकृति के अनुरूप इस विषय के साथ कार्य किये जायेंगे तो स्वतः ही आनन्द प्रदान करेगा इस विषय की सबसे अच्छी बात है कि इसे रट नहीं सकते समझकर आगे बढ़ा जाता है, दूसरी बात अमूर्त चिंतन करना सिखाता है लेकिन सीखने की प्रक्रियायें मूर्त से अमूर्त की तरफ बढ़ती हों तभी यह आसानी से मदद करता है वरना बच्चे के लिए पीड़ादायी हो जाता है, तीसरा इसे जांचने सही गलत का फैसला व्यक्ति खुद कर सकता है किसी पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है और चौथा यह कि क्रमबद्ध तरीके से आगे बढ़ना होता है उदाहरण के लिए–पहले संख्या ज्ञान, फिर जोड़ना फिर घटाना/बाकी आदि। भाग की प्रक्रिया सीखने के लिए जरूरी है कि पहले संख्या ज्ञान और घटानाध्बाकी सीखे हुए हों इसी तरह से गुणा की प्रक्रिया सीखने के लिए

जरूरी है कि संख्या ज्ञान के साथ साथ जोड़ना पहले से आता हो। इन सब बातों का ध्यान रखते हुए सीखने सिखाने के नवाचारी तरीके होने की जरूरत है। महामारी के समय में मैंने बच्चों को समुदाय स्तर पर सीखने की गतिविधियों के बारे में योजना बनाई तब गणित शिक्षण में इन सब चीजों को ध्यान में रखते हुए योजना बनाई। विद्यालय स्तर पर भी गतिविधि आधारित शिक्षण करवाती हूँ और इन्हीं तरीकों को समुदाय स्तर पर शिक्षण के दौरान भी नियमित रखा। मैंने पहले से ही अपने विद्यालय में छोटे–छोटे 400 कंकड़ रंगकर रखे हुए हैं इन कंकडों को सीखने–सिखाने की सामग्री के रूप में मैंने काम में लिया सभी बच्चों को कहती हूं अपने अपने घर पर एक थैली में 100 पत्थर रंग कर रखो और रोज रात को गिनकर सोना है। यह गतिविधियां रोज करनी है। घर पर इसे बच्चे जोड़, घटाव आसानी से सिख गये।और साथ ही लकड़ी की तिलिया, पत्तियों, जो संसाधन उनके गांव में आसानी से उपलब्ध हो सके उनसे मैं गतिविधियां कराने का कार्य करती हूं। बच्चे भी रूचि के साथ जुड़कर आनंद पूर्वक कार्य करते हैं। मेरा अनुभव यह रहा कि इससे बच्चों का संख्या ज्ञान बहुत अच्छा हो गया है जो कि गणित का आधार है और सबसे जरूरी है। गणित में अगर बच्चों का संख्या ज्ञान तीसरी तक हो जाता है तो वह चौथी, पांचवी में गणित में अच्छा प्रदर्शन करने लगता है। मेरे स्कूल में बच्चों स्तर के कक्षा और उम्र के अनुसार है।

✦ विद्यालय स्तर पर पुस्तकालय –

बच्चों के लिए एक पुस्तकालय लम्बे समय से विद्यालय में बना रखा है और इस पुस्तकालय में रंगीन चित्रों वाली, कहानियाँ कविताओं की पुस्तकें हैं जिन्हें बच्चे काम में भी लेते हैं। विद्यालय में जो पुस्तकालय है इस पुस्तकालय से वे बच्चे भी जुड़ते हैं जो पहले विद्यालय में पढ़ते थे और अभी हमारे विद्यालय में नहीं पढ़ रहे हैं। सभी बच्चों को पुस्तकालय की पुस्तकें पढ़ने की आदत बनी है। महामारी के दौरान भी जब मैं समुदाय स्तर पर बच्चों के साथ सीखने–सिखाने की गतिविधियों का आयोजन करती थी अपने साथ पुस्तकालय से कहानी, कविता आदि की पुस्तकें भी लेकर जाती थी इन पुस्तकों को बच्चे सहजता, रूचि और तन्मयता के साथ काम में लेते थे और एक लम्बे अंतराल के बाद जो बच्चों ने सीखने–सिखाने की प्रक्रियाएं शुरू की थीं उस गैप को कम करने में इन पुस्तकों से मदद मिल सकी।

✦ पर्यावरण अध्ययन के दौरान –

नवाचारात्मक गतिविधि में अपने स्कूल में फलदार पौधे लगाकर एक बाल्टी से पानी डालकर बड़े किये हैं। समुदाय स्तर पर सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं के दौरान गांव वालों के साथ मिलकर फलों के पौधे लगवाए और प्रक्रिया में बच्चे भी साथ थे इस तरह से बच्चे पर्यावरण अध्ययन में पर्यावरण के साथ रहकर प्रकृति की चीजों को अवलोकन के द्वारा और स्वयं करके सीख रहे थे। आज गांव में अधिकतर घरों में बच्चों ने फल वाले पौधे लगा रखे हैं।

समुदाय के साथ मिलकर कार्य करना –

✦ बच्चों के साथ मिलकर विद्यालय में फलदार पेड़ों के छोटे–छोटे पौधे लगाना और उनकी वृद्धि में सहायक हर संभव प्रयास करना परिणाम स्वरूप कुछ फलदार पेड़ विद्यालय परिसर का हिस्सा बन सके। समुदाय के साथ विद्यालय के रिश्ते शुरू से ही अच्छे रहे हैं समुदाय को विद्यालय में आना और हर तरह की गतिविधियों में भागीदारी निभाने के मौके विद्यालय देता रहा है इस वजह से महामारी के समय समुदाय के साथ मिलकर योजनायें बनाने और कार्य करने में ज्यादा दिक्कतें नहीं आई।

3.20 मेरा विद्यालय मेरा परिवार

किशोर कलाल
राजकीय प्राथमिक विद्यालय वाड़ीकुआ, राजीव नगर

मुश्किल समय में एक साथ होने से समुदाय के साथ विद्यालय और शिक्षकों के बेहतर और मजबूत रिश्तों को और मजबूती मिल सकी है। महामारी जैसे विकट दौर में शिक्षकों ने धैर्य और समाधानआधारित कार्यों को बल देते हुए समुदाय और बच्चों के जीवन में कुछ बेहतर समायोजन के सफल प्रयास करने की कोशिश की है।

मेरा विद्यालय मेरे गाँव से महज 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है यहाँ की स्थानीय भाषा एवं बच्चों के रहन–सहन के तौर तरीकों से मैं भलीभांति परिचित हूँ। विद्यालय में मेरी नियुक्ति मार्च 2015 में हुई थी और एक लम्बे अर्से से बच्चों और समुदाय के साथ बिता चुके वक्त के चलते सबके साथ अच्छे रिश्ते बन गए हैं और विद्यालय में अध्ययन अध्यापन की प्रक्रिया अच्छे से चल रही थी तभी Covid-19 महामारी ने अपना आतंक मचाना शुरू किया जिससे आम जीवन पूर्ण रूप से अस्त–व्यस्त हो गया। पूरे देश में तालाबंदी हो गई जिससे समुदाय में कमाई और आमदनी के सारे स्रोत बन्द हो गए समुदाय में बच्चों का जीवन भी घरों तक सिमट कर रह गया क्योंकि सभी विद्यालय बंद हो गये।और हमे भी घर पर रहते हुए ही बच्चों से जुड़ने के माध्यमों को तलाशना था।

स्वप्रेरित शिक्षक द्वारा बच्चों के लिए मास्क बनाना

मेरा समय मेरे परिवार के साथ बीतने लगा हर प्रकार की सुविधाएँ और इतनी सारी व्यवस्थाएं होने के बाद भी जब हमारे जीवन में कई तरह की कठिनाइयाँ आ रही हैं तो हमारे विद्यालय रूपी उस दूसरे परिवार के साथ क्या चल रहा होगा जिनके पास ऐसी कोई व्यवस्थाएं नहीं है जो हमारे पास हैं तो अब उनका जीवन यापन किस तरह से हो रहा होगा। जब इस तरह की बात सोचते थे तो मन कांप उठता था। चूँकि विद्यालय और घर पास–पास ही थे तोबच्चों तक पहुंचने एवं उन्हें जो सुविधाएं दे सके वह उपलब्ध करवाने का प्रयास किया एवं कुछ संस्थाओं से भी इस विषय में बात की गई। सबसे पहला प्रयास तो यह था कि बच्चों को इस बिमारी से बचाया कैसे जा सकता है इसके लिए सोचा गया और बच्चो की सुरक्षा को लेकर काम किया गया।

✦ महामारी से बचाव एक मुहीम –

समुदाय के साथ कार्य किये जाने के तहत पहली जरूरत थी कि बच्चों और समुदाय के लोगों को इस महामारी के बारे में अधिक से अधिक जागरूक करना ताकि अपने साथ–साथ लोग दूसरे लोगों के लिए भी सोचें। इसी क्रम में मैंने अपने घर में उपलब्ध कपड़ों की सहायता से मास्क बनाने शुरू किए गये ताकि बच्चों तक पहुंचाए जा सकें और जब मास्क बनकर तैयार हो गए तब मैंने समुदाय में मास्क वितरित किये और खासकर इस बात का ध्यान रखा कि बच्चों को मास्क अवश्य मिल सके लगभग 2000 से भी अधिक मास्क बनाकर विद्यालय के बच्चो को व समुदाय के लोगो को वितरित किये। अगले चरण के रूप में मैंने Covid-19 की रोकथाम और बचाव के लिए कुछ सामग्री निकालकर इससे सम्बन्धित चार्ट Print करवाए और इन सभी चार्टों को गाँव में अलग अलग जगहों की दीवारों पर व विद्यालय की दीवारो पर चिपकाए।

इतना भर ही नहीं इसके बाद मैंने विद्यालय में आने वाले बच्चों के घरों पर सम्पर्क किया और सभी अभिभावको व बच्चों को बवअपक से बचाव के नियमो से अवगत करवाया गया एवं सभी बच्चो और बड़ों को कैसे सुरक्षा मिल सकती है। इस पर बातचीत की मेरा हर संभव प्रयास यही था कि Covid-19 के संक्रमण को रोका जा सके और यदि यह संक्रमण समुदाय में पहुँच भी जाए तो लोगों के पास इतनी जागरूकता हो कि अपने आप को बचा सकें। इस दौरान जब बच्चो ओर अभिभावकों से मिलना हुआ तो जानने को मिला की कुछ अभिभावक ऐसे भी है जिनकी आमदनी पूर्ण रूप से बन्द हो गई है और वह अपने बच्चो को दिन के एक समय का भोजन भी पर्याप्त मात्रा में नहीं खिला पा रहे थे ऐसे परिवारों के लिए स्वयं के स्तर पर व्यवस्थाएँ बनाकर राशन उपलब्ध करवाने के प्रयास किये। इसके साथ ही केंद्र व राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से अभिभावकों को अवगत करवाया गया ताकि उन्हें राशन सम्बन्धित सुविधाएं उपलब्ध हो सके। इस समय हम तीन शिक्षक साथियों द्वारा 40 से 50 बच्चों व 10 से 15 परिवारों को शिक्षा व राशन सामग्री से लाभान्वित किया जा सका। इस विकट समय में जब समुदाय के साथ और समुदाय के लिए जुड़े तो उन्हें लगा कि हमारे शिक्षक हमे अपना परिवार समझते है एवं इस तरह की महामारी के समय भी वह हमसे नियमित रूप से जुड़े हुए है एवं हमारे बच्चो की शिक्षा के साथ–साथ अन्य चीजों को लेकर भी चिंतित हैं और मदद कर रहे हैं।

मिट्टी के खिलौने बनाते हुए बच्चे

✦ सीखने–सिखाने की प्रक्रियाएं –

इन सबके साथ ही शिक्षा से वंचित हो रहे बच्चों को शिक्षा से कैसे जोड़ा जाए इस पर भी दिमाग में योजनायें चल रही थीं।तब विद्यालय के साथी शिक्षकों से इस विषय पर चर्चा की गई और सभी शिक्षकों ने मिलकर एक कार्ययोजना का प्रारूप बनाया। सबसे पहले इलाकेवार गांव के बच्चों नामों की एक सूचि तैयार की गयी। गांव के कुछ क्षेत्रों का चयन किया गया जो साफ सुथरे हो व बच्चों के बैठने की पर्याप्त व्यवस्था हो । साथी शिक्षको ने मिलकर 4 क्षेत्र निर्धारित किये गये जो निम्नानुसार थे।

(1) माताजी का मंदिर परिसर (2) विद्यालय परिसर (3) तालाब फला के पास का पहाड़ी क्षेत्र (4) तालाब की पालइन सभी क्षेत्रों के बच्चों के अनुरूप सभी शिक्षक साथियो ने मिलकर एक समय चक्र बनाया और सभी बच्चों तक पहुंचने व पुनः शिक्षा से जोड़ने का प्रयास शुरू किया गया। इस तरह बच्चे पुनः शिक्षा से जुड़ने लगे, साथ ही शिक्षा विभाग की ओर से भी बहुत सारे नये नये कार्यक्रम शुरू किये गये जिसकी मदद से बच्चों तक शिक्षा को पहुंचाने में बहुत अधिक मदद मिलने लगी। इस तरह हम बच्चों को उनके शिक्षा के अधिकार से जोड़ने में सफल हुए। इस तरह जब बच्चों से covid के दौरान मिलना हुआ तो लगा कि हम बच्चों को शिक्षा के अधिकार से जोड़ पाने में सफल हुए ओर उन्हें नियमित रूप से शिक्षा दे पाये । जब विद्यालय पुनः शुरू और बच्चे जब विद्यालय में पुनः पहुंचे तो देखने को मिला की अभी भी कुछ बच्चे ऐसे थे जिन तक हम बिल्कुल पहुंच नहीं पाये थे,तब लगा कि हम अपना कुछ समय और दे पाते तो इन सभी बच्चो तक भी पहुंच सकते थे लेकिन हमारे सामने भी बहुत सारी समस्या एवं कुछ अतिरिक्त कार्य थे जिस वजह से हम उन बच्चो तक नहीं पहुँच पाये।

3.21 गणित की कक्षा में मेरा सीखना सिखाना –

श्री भूपेन्द्र सोनी
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मुसारपाड़ा, घाटोल

बच्चे कक्षा दर कक्षा आगे तो बढ़ते चले जाते हैं लेकिन अपने स्तर के अनुसार सीखना नहीं हो पाता है लेकिन अगर शिक्षक अपने समूह के सभी बच्चों को ध्यान में रखते हुए योजना बनाकर कार्य करे तो सभी बच्चों पर प्रयाप्त ध्यान दे सकेगा और बच्चों का उनके स्तर का अनुसार सीखना सुनिश्चित हो सकेगा।

विविध तरीकों से गणित का सीखना

बाँसवाडा जिले के घाटोल ब्लाक के मुंगाना गाँव में सगोली हनुमान मंदिर के पास स्थित है राजकीय प्राथमिक विद्यालय मसारपाडा मेरा विद्यालय बाँसवाडा से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर है यहाँ एक मसारो का पाडा है इस कारण इसका नाम मसारपाडा है। यह प्रकृति की गोद में बसा हुआ है और लगभग 250 से 300 की आबादी वाला यह पाडा खेती पर निर्भर है समुदाय के कुछ लोग बाहर भी मजदूरी करते हैं यहाँ शिक्षा का स्तर काफी कम है वर्तमान में मेरे विद्यालय में 70 बालक बालिका नामांकित है इनके साथ लगभग 15 से 20 बच्चे जो बिलकुल छोटे है वे अपने भाई बहन के साथ मेरे विद्यालय में आते है क्योंकि आस पास कोई आंगनवाडी नहीं है लगभग इतनी ही आबादी वाला एक और पाडा नवाटापरा भी मेरे स्कूल में आता है दोनो बस्तियों के बालक मेरे विद्यालय से जुड़े हुए हैं।

यहाँ पर मेरे साथ 2 शिक्षिकायें कार्यरत हैं। मेरी साथी शिक्षिकाओं में श्रीमती कांता कटारा बच्चों के साथ हिंदी भाषा शिक्षण और श्रीमती बिंदु द्विवेदी पर्यावरण अध्ययन विषय से सम्बन्धित शैक्षणिक कार्य बालकों के साथ करती हैं। मैं स्वयं बच्चों के साथ अंग्रेजी भाषा और गणित विषय को लेकर कार्य करता हूँ विषयवार शिक्षण कार्य करने के लिए मैं हमेशा ही बच्चों को क्या और कैसे सिखाया जाना है इसके लिए पूर्व योजना बनाकर और योजना के अनुसार तैयारी के लिए पर्याप्त समय देता हूँ क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि किसी भी कार्य को करने से पहले उसके लिए कार्य योजना और उसके अनुरूप तैयारी पर पूरी तरह से समय दिये जाने से कार्य बेहतर तरीके से सम्पन्न हो पाता है। वर्ष 2005 में जब इस विद्यालय में आया तब मैने देखा यहाँ विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं का अभाव है सर्वशिक्षा में श्रीमान धर्मेन्द्र जी से मिल कर एक कक्षा कक्ष का निर्माण करवाया इसके अलावा भी श्रीमान धर्मेन्द्र जी का बहुत सहयोग मिला।

वर्ष 2012 में लहर कार्यक्रम में मुझे कुछ अलग करने का जूनून सवार हो गया। मैंने अपने कार्यकाल के दौरान यह अनुभव किया है कि बच्चे किसी भी क्षेत्र के हों उनकी प्रवृति जिज्ञासु होती है और साथ ही बच्चे बहुत बातूनी भी होते हैं। सबसे पहले मैंने बच्चों के साथ सहज रिश्ते बनाये जाने के क्रम में कार्य शुरू किया ताकि बच्चे सहजता के साथ और बिना डरे अपनी बात मेरे साथ खुलकर साझा कर सके। मैंने शिक्षक विद्यार्थी के अंतर को कम करना शुरू किया अब बच्चे मुझसे बातचीत करने में संकोच नहीं करते थे इस तरह से मैंने पहले चरण की सफलता हासिल की। बच्चों के साथ सीखने–सिखाने को लेकर कुछ नया करना चाहता था क्योंकि मुझे लग रहा था कि पारम्परिक तरीकों से बच्चों का सीखना नहीं हो पाता बच्चे कक्षा दर कक्षा आगे बढ़ते चले जाते हैं लेकिन वास्तव में अवधारणाओं की समझ का विकास नहीं हो पाता। इसी क्रम में पिछले दिनों में मैंने 2 निजी विद्यालयों जीनियस स्कूल चिडियावासा और न्यू अक्स्फोर्ट स्कूल मोदी का अवलोकन किया।

सबसे पहले मैंने बच्चों के साथ फर्श पर गोल घेरे में बैठकर कार्य करना तय किया। इस प्रकार से बच्चों के साथ बैठकर रोजमर्रा के जीवन से जुड़ी चर्चाओं के साथ दिन की शुरुआत करने से कार्य करने की अच्छी शुरुआत हो जाती है और बच्चों की समस्याओं को सुनकर आसानी से समाधान निकाल पाना संभव हो जाता है। धीरे–धीरे बच्चों की आम दिनचर्या से जुडी समस्याओं से परे गणितीय समस्याओं की ओर हमने रुख किया। ये सभी कार्य पहले बनी योजनाओं के तहत कर रहा था। बच्चों के साथ कार्य करने के मेरे अनुभव में मैं ये अनुभव जोड़ सका कि पहली कक्षा का बच्चा भी गणित खूब जानता है और यह अनुभव मुझे तब मिल सका जब मैंने गणित की पुस्तकों को अलग रखते हुए गणित की समस्याओं पर बच्चों से बातचीत की। जैसे– जोड़ की अवधारणा पर कार्य किये जाने के लिए जो वार्तालाप किया वो इस प्रकार है –

मैंने बच्चों से पूछा कि तमारे बावसी में दुकान हे कोण कोण दुकान जाय मेने इ वता दो 1 नाराल कतला नु आवे मरे एक नाराल जुवे मु 15 रूपया आलू तो मने लावी आलो बच्चो ने कहा नाराल तो पासी रुपया में आवे यानि 25 रु में मेने पुछा 15 और 25 में हेला किया हे बच्चो ने कहा 25 मेने कहा 25नु एक हे तो बे नाराल ना कतला रुपया थाय बच्चों ने आसानी से बता दिया 50.इस तरह बातचीत के जरिए धीरे धीरे मैं उनको पुस्तक की ओर ले गया मुझे इसका अच्छा परिणाम मिला मैंने बच्चों को गणित विषय में अवधारणाओं की समझ के साथ सीखते हुए और आगे बढ़ते हुए देखा। निजी विद्यालयों के अवलोकन के दौरान मैंने देखा था कि शिक्षक बच्चों के साथ प्रोजेक्टर के माध्यम से सीखने–सिखाने की गतिविधियाँ कर रहे थे जिसे मैं अपनी कक्षा के बच्चों के लिए भी करना चाहता था लेकिन बिजली कनेक्शन के अभाव में यह संभव नहीं था। एक दिन समाचार पत्र में मैंने ऐसे मोबाइल का विज्ञापन देखा जिसके माध्यम से प्रोजेक्टर को कनेक्ट किया जा सकता है अगले ही मैंने इस मोबाइल को बाजार से खरीद लिया और और सुभाष जी जिनके विद्यालय में मैं अवलोकन के लिए गया था से समस्त शैक्षणिक सामग्री को एक पेनड्राइव पर ले लिया। अब मेरे लिए बच्चों के साथ प्रोजेक्टर के माध्यम से शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन कर पाना आसान हो गया था।

अब सप्ताह में एक दिन मैं बच्चों को उस प्रोजेक्टर के माध्यम से कहानियाँ, बाल कवितायें अंग्रेजी और हिन्दी में संज्ञा,सर्वनाम जैसी अवधारणों को लेकर कार्य करना शुरू किया, गणित विषय की इकाई दहाई सैकड़े की अवधारणा को समझने के लिए भी यह कमाल का माध्यम साबित हो सका था। प्रोजेक्टर के माध्यम से कार्य करने में बच्चों का जुड़ाव बना रहता, बच्चों को आनंद भी आता और चूँकि गतिविधि आधारित शिक्षण था अतः बच्चों की अवधारणाओं की समझ का विकास भी बेहतर तरीके से संभव हो पा रहा था। मौइने और मेरे साथी शिक्षकों ने यह देखा कि बच्चे बहुत ही तेज गति के साथ सीख रहे थे।

मेरा उद्देश्य था कक्षा पहली में जो बच्चा है वो विषय की मूलभूत जानकारी उसी सत्र में पूरी करे इस हेतु मैंने लहर कार्यक्रम को समझा और उसी के अनुसार कांता मैडम और मैंने कक्षा पहली के साथ कार्य करना शुरू किया

अब मेरे और साथी शिक्षकों के सामने यह सवाल नहीं था कि बच्चों को कैसे सिखाएं बल्कि अब ये सोचने वाली बात थी कि हम उनको और क्या क्या सिखायें जब हम कक्षा में जाकर उनसे बात करते तो लगता ये बहुत कुछ जानते हैं, कभी–कभी ऐसा भी लगता कि ये हमें सिखा रहे हैं।

इसी बीच सरकार द्वारा चलित लहर कार्यक्रम बंद कर दिया गया पर इस दौरान मैंने यह तो सीख लिया था कि प्रत्येक बच्चा महत्वपूर्ण होता है। जिसे लेकर मैं शिक्षकों के समूहों के साथ मिलता जुलता रहता था और चर्चाएँ होती रहती थीं।

अलग–अलग तरह से कैसे बच्चों का कम संसाधनों के साथ सीखना तय किया जाए, भाषा विकास, गणितीय समझ को विस्तार दिए जाने के लिए आस–पास की क्षेत्रीय और परिवेश की चीजों के साथ किस प्रकार बच्चों की अवधारणा को लेकर समझ का विकास किया जा सकता है, इस रूप में शिक्षक विजय प्रकाश जैन के साथ मुलाकात ने शिक्षा से जुडी चीजों को अत्यधिक विस्तार और गहराई भी दी।

ठोस चीजों के साथ बच्चों को गणित शिक्षण की शुरुआत की गयी शिक्षण कार्य के दौरान परिवेशीय भाषा को विशेष रूप से शामिल करना शुरू किया गया। मैंने यह सीखा कि किसी भी विषय की समझ बनाए से पहले बच्चों के साथ उस विषय को लेकर खुलकर बातचीत और विचार–विमर्श किये जाने जरूरी है, विषय से सम्बन्धित बच्चे का क्या स्तर है और इस पूर्वज्ञान के आधार पर क्या नया सिखाया जा सकता है इस पर शिक्षक द्वारा कार्य करने से बच्चों के ज्ञान और समझ को विस्तार दे पाना आसान हो जाता है।

इस पूरी प्रक्रिया के तहत मैंने यह पाया कि अब बच्चे मुझे से घबराते नहीं थे में एक तरह से उनका दोस्त बन गया वो मुझे से खुलकर अपनी भाषा में बातचीत करने लगे हैं मैं उनसे खूब बाते करता हूँ, कक्षा–कक्ष की बैठक व्यवस्था ने इसमें बड़ी भूमिका निभाई है क्योंकि मैं और बच्चे नीचे फर्श पर गोल घेरा बनाकर बैठते हैं।

पिछले दिनों एक बड़ी समस्या का सामना कक्षा 1 और 2 के बच्चों के साथ कर रहे थे कक्षा पहली और दूसरी कक्षा के बच्चो का बस्ता इनको दिया गया काम नोट बुक से गायब इनको दी गई किताब बकरी खा जाती और ये फिर विद्यालय से गायब हो जाते। उनको लगता कि किताब जिसे वो सोपड़ी कहते हैं फटी होगी तो माडसाब कूटे इस कारन वो स्कूल नहीं आते फिर उनको बुला कर लाने में काफी समय खराब हो जाता उसका भी मैंने हल इस प्रकार से निकाला– बच्चो के लिए मैंने एक जैसी कपडे की थेलिया ली और पहली और दूसरी के बच्चो का बस्ता हमने स्कूल में रखवाना चालू कर दिया साथ ही उनकी नोट बुक और सभी सामग्री स्कूल से दे दी गई और हमें पहली और दूसरी के बच्चो को बैग लेस कर दिया। अब बच्चे बराबर स्कूल आने लगे बस्ता कोपी सोपड़ी फटने की समस्या खत्म हो गई इस काम में मुझे अभिभावको के गुस्से का सामना करना पड़ा उनको समझाना पड़ा कि आपके बच्चो का बस्ता और किताबे सब हैं पर वो स्कूल में हैं उनको बुला कर दिखाना पड़ा तब जा कर वो संतुष्ट हुए।

सभी बस्ते एक जैसे होने के कारण बच्चों को अपने बस्ते को पहचानकर लेना मुश्किल हो गया था जिससे निपटने के लिए सभी बच्चों के बस्तों पर उनके फोटो लगा दिए। इस प्रकार मुश्किलों का सामना करते हुए इस दौर से बाहर आ सके।

3.22 समुदाय और विद्यालय के प्रगाढ़ सम्बन्ध और बच्चों का सीखना –

श्री मंजुला तनेजा
राजकीय प्राथमिक विद्यालय सूरजी पाड़ा

समुदाय और विद्यालय जब मिलकर एक दिशा में कार्य कर रहे होते हैं तब बच्चों के प्रत्येक आयाम के विकास को लेकर कार्य हो सकता है।

मेरा गाँव जहाँ मैं शिक्षिका के रूप में जुडी हुई हूँ, पूर्णतः आदिवासी क्षेत्र में है। समुदाय और विद्यालय का जुड़ाव काफी गहन है इस गहन जुड़ाव को देखकर लगता ही नहीं है कि हम अलग हैं ऐसा लगता है जैसे एक ही परिवार के सदस्य हैं। समुदाय के लोग विद्यालय और बच्चों की शिक्षा को लेकर सकारात्मक सोच रखते हैं। यहाँ पर समुदाय में किसी भी सदस्य की समस्या उसकी अकेले की नहीं होती वरन उस समस्या के समाधान के लिए पूरा समुदाय और विद्यालय से सदस्य मिलकर निकाल रहे होते हैं अर्थात गांव वालों की अपनी समस्या हो या विद्यालय किसी समस्या में हो तो समुदाय और विद्यालय मिलकर आपस में बहुत ही अच्छी तरह से सुलझा लेते हैं गांव के लोगों का हम पर बहुत विश्वास है।

महामारी के दौरान जब समुदाय में लगातार जाना और लोगों से मिलना होता था और काफी लम्बे समय वहाँ रहकर वक्त गुजारने का मौका मिला तब समुदाय के साथ रिश्ते और भी गहरे हो सके। समुदाय के लोग इस दौरान बच्चों की शिक्षा को लेकर काफी चिंतित दिखाई देते थे और साथ ही हम शिक्षकों के साथ अपनी चिंताओं को साझा कर लिया करते थे।

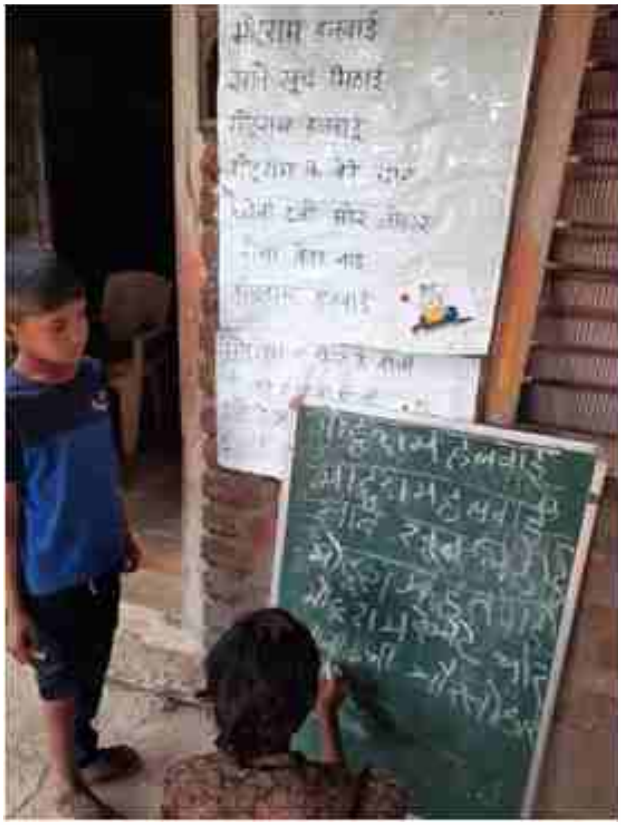

कविताओं के चार्ट भाषा सीखने के माध्यम के रूप

✦ पुस्तकालय की योजना बनी –

महामारी के दौर में बच्चों के साथ मिल्क सीखने–सिखाने के कार्यों की योजना के तहत ही यह योजना निकलकर आई। हमने योजना बनाई कि किस तरह से हम बच्चों को पढ़ाई से जोड़ें हमने एक लाइब्रेरी का आयोजन करवाया। चूँकि हमारा गाँव दो फलां में बंटा हुआ है हमने दोनों फलां के बच्चों के लिए कुछ पुस्तकों का चयन किया गया।

अब दोनों ही जगहों पर कहानियों की इन पुस्तकों में से कुछ पुस्तकें रस्सी पर लटका दी और बच्चों को बदल बदलकर इन पुस्तकों को पढ़ने या इनमें से चित्र देखने का कार्य करने के लिए प्रेरित किया। बच्चों को बड़ा आनंद आने लगा वे इन किताबों के पास आते देखते और और पढ़ने लगे जो पढ़ना जानते थे वह कुछ किताबों को घर पर भी लेकर जाने लगे छोटे बच्चे किताबों के चित्रों को देखते और आनंद लेते हैं तो धीरे–धीरे बच्चों का पढ़ाई की तरफ रुझान होने लगा।

✦ पोस्टर और चित्रों के द्वारा भाषा की लिखित लिपि के साथ पहचान –

योजना के अगले पड़ाव में चलते हुए छोटे–छोटे अक्षरों, कहानियों और गिनती के कुछ पोस्टर्स बनाए गए। इसके पीछे सोच यह रही कि इनको बच्चों के घरों के आस–पास चिपका देने से बच्चे इनके पास से आते जाते इन्हें देखेंगे और देखने से इन पर बने चित्रों और लिखे हुए इनके नामों का आपस में सम्बन्ध स्थापित कर सकेंगे और धीरे–धीरे इन तस्वीरों के नाम की छवि इनके दिमाग में बन सकेगी और इस तरह से इन शब्दों से बच्चों की दोस्ती हो सकेगी।

इसमें यह भी शामिल था कि ऐसे बच्चे जो नहीं पढ़ना जानते वे परिवार के बड़े सदस्यों के सहयोग से पहचान करने लगेंगे। इस रणनीति के तहत बच्चे शब्दों को पहचानने लगे और जब पढ़ने लगे तो समुदाय के लोगों को भी विश्वास इस तरह से बढ़ने लगा कि हमारे बच्चे पढ़ने की तरह धीरे–धीरे बढ़ रहे हैं।

पोस्टर शैक्षणिक गतिविधियों का एक तरीका

✦ वर्कशीट पर कार्य करते हुए भाषा का विकास किया गया –

योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ते हुए बच्चों के स्तर के अनुसार कुछ अलग–अलग तरह के कार्य–पत्रक बनाये गए और बच्चों के साथ इन कार्यपत्रकों को साझा किया गया अब बच्चे बहुत खुश थे क्योंकि विद्यालय ना जाते हुए भी लिखने और पढने का कार्य करने का मौका जो इनको मिल रहा था।

समुदाय के लोग भी इस बात से संतुष्ट थे कि बच्चे घर पर रहते हुए भी काफी कुछ सीख रहे हैं और शिक्षक साथी मिलकर बच्चों को सिखाने के लिए हर संभव प्रयास करते है।

3.23 महामारी के रूप में कोविड–19 और शिक्षण के अनुभव

विजय प्रकाश जैन
राजकीय प्राथमिक विद्यालय मेंदिया डिण्डोर

कोरोना के अनिश्चितकाल में अवसरों को भुनाते हुए बच्चों के साथ किये गये सकारात्मक कार्यों से बच्चों के साथ–साथ शिक्षकों को भी यह सिखाया कि कक्षा–कक्ष का बँधा–बँधाया ढर्रा बच्चों को पढना–लिखना (अक्षर ज्ञान) तो सिखा सकता है लेकिन बच्चों के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया में जाना है तो उनके साथ कुछ अलग तरीकों को अपनाना होगा तभी हम चिंतन, मनन करने वाले लोकतांत्रिक समाज के नागरिक के रूप में बच्चे का निर्माण कर सकेंगे ।

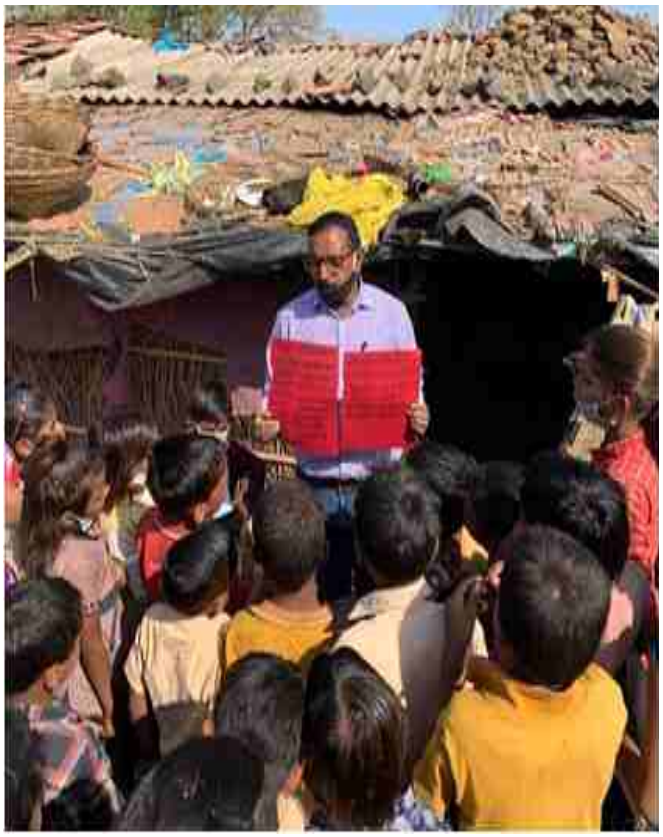

कार्ड और चित्रों के माध्यम से सीखने में सभी बच्चों का अपने आप जुड़ाव सुनिश्चित हो जाता है

कोविड़–19 के भयावह दौर में जब आर्थिक, सामाजिकऔर पारिवारिक स्थितियाँ प्रभावित हो गई थीं। ऐसे में यदि सब से ज्यादा प्रभावित हुए थे तो वे थे बच्चे । किलकारी मारता हुआ बचपन घरों में कैद होकर रह गया था, एक अनजाने भय ने बच्चों के सपनों को प्रभावित कर दिया था। बच्चों की शिक्षा का ताना–बाना बिखर गया था।स्कूल बंद हो गयेऔरऔपचारिक रूप से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया छिन्न–भिन्न हो गई थी।

19 मार्च 2020 जब स्कूल बंद हुए तो लगा कि बस कुछेक दिनों में स्थितियाँ ठीक हो जायेंगीऔर हम पुनः स्कूल जाने लगेंगे। शुरूआती सात दिन के लॉकड़ाउन को बच्चों, अभिभावकों और शिक्षकों ने सामान्य छुट्टियों के रूप में लिया और सोचा सात दिन बाद पुनः स्कूल खुल जायेंगे। लेकिन असामान्य रूप से स्थितियाँ भयावह होती गईं, लॉकडाउन बढ़ता चला गया स्कूल कब खुलेंगे यह अनिश्चितता बनी रही।धीरे–धीरे बच्चे, शिक्षक और अभिभावकों की चिंता स्वाभाविक रूप से बढ़ने लगी। एक शिक्षक के रूप में मैं भी चिंतित था, चाहकर भी बच्चों के पास नहीं जा पा रहा था। प्रवासी मजदूरों के सर्वे के रूप में पी.ई.ई.ओ. स्कूल में ड्यूटी कर रहा था, लेकिन बच्चों के पास जाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था कारण यही था कि कोरोना से गाँव अभी सुरक्षित थे कहीं हम शहरों से जाने वाले लोग उन्हें संक्रमित नहीं कर दें लेकिन बच्चों से फोन से संपर्क करने का प्रयास अवश्य जारी था। रोजाना चार–पाँच बच्चों से उनके अभिभावकों से फोन कर बात करने का प्रयास करता लेकिन दो या तीन से ही बात हो पाती, किसी का फोन नहीं लगता, किसी की बैटरी डिस्चार्ज हो गई होती यानि कम बच्चों या अभिभावकों से ही बात हो पाई, इसी दौरान बच्चों को एक पत्र लिखकर एक ग्रामीण जिनके पास एन्ड्रोईड मोबाईल था उन्हें भेजा गया। इस प्रकार बच्चों से जुड़े रहने का प्रयास किया यह कितना कारगर रहा यह तो पता नहीं लेकिनअभिभावकों से बात करने पर गाँव में कोरोना की स्थिति का पता चल जाता थाऔर यह भी पता चलता था कि वे अपने बच्चों की पढ़ाई के प्रति कितने चिंतित हैं।

इसी दौरान 27 जून 2020 को शिक्षकों के लिए विद्यालय खुले और शिक्षकों ने विद्यालय जाना प्रारंभ किया बच्चे विद्यालय के बाहरआकर खड़े होते, अभिभावक भी पूछते सर बच्चों की पढ़ाई कबसे शुरू हो सकेगी। हम लोग समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें और कैसे करें। वैचारिक मंथन की प्रक्रिया चालू थी और दिमाग में अलग–अलग तरह के विचार इस श्रृंखला में आते और चले जाते लेकिन कोई भी विचार धरातल पर बेहतरी के लिए नहीं जम रहा था।

✦ विचारों की श्रृंखला के बीच से निकलकर आया एक अनोखा विचार, पुस्तकालय का विचार –

तभी एक विचार कौंधा कि क्यों ना स्कूल में पुस्तकालय की पुस्तकों को बच्चों को बाँटा जाये, विचार को अपने शिक्षक साथी श्री भूरालाल जी के साथ साझा किया।मन में अनेक शंकायें थीं बच्चे किताबों को पढेंगे या नहीं, कहीं फाड़ तो नहीं देंगे । लेकिन फिर सोचा एक बार किताबें बाँटकर देखते हैं।

चूँकि विद्यालय कक्षा एक से आठ तक का है इसलिये पुस्तकालय से बच्चों की स्तर की किताबों को छाँटा गया तो लगभग 50 पुस्तकें ऐसी निकली जिन पर बच्चों के साथ काम किया जा सकता है।गाँव में बच्चों को पुस्तकें बाँटने निकले, ध्यान यह रखा कि बच्चों को उनकी पसंद के अनुसार किताबें दें। जब पुस्तकें बाँटकर आ रहे थे तो देखा कि एक बच्ची सुनीता मोटर साईकिल पर बैठकर किताब पढ़ रही थी, हरीश, कल्पना, अनिल, वंदना घरों की छतों पर तो विनय, वासु,गिन्दू मकान की चारदीवारी पर बैठकर किताबें पढ़ रहे थे।एक प्रक्रिया निरंतर दस–बारह दिन तक चली एक पुस्तक बच्चें के पास लगभग दो दिन तक रहती।उसके बाद उसे बदल दिया जाता यदि बच्चा उससे पहले उसे बदलने का आग्रह करता तो उसे दूसरी पुस्तक दे दी जाती।

कहानी सुनना सुनाना और सघन वार्तालाप

एक दिन एक बालिका सोनिया को फटी पुस्तक दी गई तो अगले दिन उसने उसे चिपकाकर दे दिया। एक दिन हरीश के पापा ने कहा कि ''सर हरीश रात को हमें कहानी सुनाता है" तो लगा हमारा काम सही दिशा की ओर जा रहा है। एक दिन चार वर्ष के विनोद की मम्मी ने विनोद के लिये किताब माँगी तो उनसे कहा यह तो बहुत छोटा है अभी पढना नहीं जानता है किताब लेकर क्या करोगी तो जबाबआया"सर फोटो देखेगा और किताब के हाथ लगायेगा तभी तो पढना शुरू करेगा।

मुझे लगा ''एक अशिक्षित अभिभावक ने मुझे सिखा दिया कि साधन होगा तभी तो हम साध्य की ओर बढेंगे''।

✦ कविताओं, कहानियों के द्वारा भाषा का विकास किया –

इसी बीच एक कामऔर शुरू किया गया, कविता, कहानियों के लगभग 100 चार्ट बनाकर बच्चों के घरों में लगाये गये साथ ही बच्चों को खाली चार्ट दिये गयेऔर उनसे कहा गया कि वे दूसरे घरों में जो चार्ट लगाये गये है उन कविताओं को लिखकर अपने घरों में लगायें। इस तरह घरों को प्रिंटरिच बनाया गया यहाँ बच्चे इन कविताओं को पढ़ते और अपने छोटे भाई–बहनों को पढाते।

✦ समुदाय के साथ वक्त बिताना भी सुहाया –

धीरे–धीरे स्थितियाँ ठीक होने लगी थीं।सोचा कुछ घरों पर जाकर बच्चों के साथ पढ़ाई–लिखाई की गतिविधियाँ करवाई जायें इसी क्रम में गाँव में पाँच–छह स्थानों पर दस–दस बच्चों के समूह बनाकर कक्षायें लगाने का कार्य प्रारंभ किया। यहाँ काम थोड़ा कठिन था, समूह में सभी कक्षाओं के बच्चे होते थे। सारे बच्चों को एक जैसी और अलग–अलग गतिविधियाँ कैसे कराई जायें इसकी योजना बनाई जाती थीऔर एक स्थान पर एक घंटे का समय देते थे इस तरह रोजाना चार स्थानों पर कक्षायें लगाने का कार्य किया जाता था। बच्चों को रंग–बिरंगी कापियाँ दी गई और उनके साथ मौलिक लेखन, पठन, गणितिय संख्याओं और संक्रियाओं को कंकड़–पत्थर, तीलियों आदि के माध्यम से सिखाने का काम किया जाता था।अभिभावक इस सारे काम से बहुत प्रसन्न थे, हमारे आने से पूर्व बच्चे दरी बिछाकर सारी तैयारी कर देते थे।

✦ पूरे गाँव को सीखने–सिखने की प्रक्रिया में सहायक के रूप में शामिल किया गया–

इसी दौरान एक दिन जब बच्चों से पूछा कि क्या उन्हें पता है कि गाँव में कितने आदमी, पशु हैं। इस पर बच्चों के साथ गाँव में सर्वे की योजना बनी, लेकिन कोरोना के कारण बच्चे गाँव में घूम भी नहीं सकते थे तो तय हुआ कि बच्चों के समूह बनाये जायें और एक समूह केवल तीन घरों का ही सर्वे कार्य करेगा, स्वयं का घर एवं उसके अगल और बगल के घर।तीन दिनों में बच्चों ने सर्वे का कार्य पूरा कर दिया तत्पश्चात सर्वे का विश्लेषण किया गया।

धीरे–धीरे कोरोना का प्रभाव कम होने लगा एक दिन एक अभिभावक ने कहा सरआप पूरे गाँव में पाँच–छह स्थानों पर पढ़ाने जाते हो इससे आपको कई जगह जाना पड़ता है इसके स्थान पर मैने नया घर बनाया है वह खाली है आप वहाँबच्चों को पढ़ा लिया करें। यह बच्चों के साथ काम करने का पारितोषिक था। तब से अभिभावक द्वारा बताये गए नए घर पर बच्चों के साथ काम करना शुरू किया।

✦ अन्य संस्थाओं ने भी सहयोग के रूप में अपने हाथ आगे बढाए –

एक संस्था द्वारा बच्चों को पुस्तकालय की पुस्तकें दी गई । इन पुस्तकों को वहाँ लटका दिया । इन पुस्तकों ने हमारे सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को पंख दे दिये। बच्चों के साथ रोजाना एक घंटा इन पुस्तकों पर काम किया जाता।छोटे बच्चों के साथ चित्रों पर चर्चा होती, बड़े बच्चे पुस्तकों की कहानियों को पढ़ते इन पर बात करते। गणित में तीलियों, कंकडों से गिनना, संक्रिया आदि गतिविधियों को करते।लीटर से पानी को नापना, तराजू से तोलना, वेटमषीन से वजन तोलना आदि गतिविधियों

को करते । इसी दौरान मकान मालिक मगन भाई को मकान का वास्तु करना था तो तीन–चार दिन के लिये कक्षायें बंद करने को कहा। इस पर एक अन्य अभिभावक विकास भाई ने हमें अपने घरमें कक्षा लगाने की स्वीकृति दी।वहाँ पर हमने बहुत सारे काम किये–

1. उपस्थिति का चार्ट बनाया गया यहाँ बच्चे स्वयं प्रतिदिन अपनी उपस्थिति दर्ज करते।
2. पुस्तकालय की पुस्तकों के प्रति रूचि जागृत करते हेतु उनके फोल्डर बनाये गये जिसमें वे अपने द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों का विवरण दर्ज करते।
3. बच्चों को रंगीन ड़ायरियाँ दी गईं जिनमें वे अपनी रोजाना की दिनचर्या लिखते इससे उनमें मौलिक लेखन का कौषल विकसित हुआ।
4. पूरे गाँव को प्रिंटरिच बनाया गया, इसमें बच्चों के साथ मिलकर गाँव की हर वस्तु पर उसका हिन्दी, अंग्रेजी एवं वागड़ी में नाम लिखा गया साथ ही प्रत्येक घर पर सारे सदस्यों के नाम हिन्दी एवंअंग्रेजी में लिखे गये।
5. गाँव के सर्वे का कार्य करवाया गया इसमें प्रत्येक परिवार के सदस्यों, जानवरों एवं वाहनों के बारे में बच्चों ने जानकारी एकत्रित की जिसका बाद में विश्लेष्ण भी किया गया।
6. बच्चों से जेंडर, स्वच्छता जैसे मुद्दों पर परिवेश के अनुसार संवाद किया और उनकी चिंतन एवं अभिव्यक्ति कौशल पर काम किया गया।
7. विषयगत शिक्षण पर बच्चों के साथ छोटे एवं बडे समूहों में दैनिक आवश्यकतानुसार काम किया गया इसमें पीयर लर्निंग पर भी काम हुआ।

इस प्रकार बच्चों के साथ निरंतर विषयों के अलावा भी काम हुआ। प्रतिदिन 2 से 2.30 घंटे यह काम किया जाता इसमें लगभग 30–40 बच्चे हमारे साथ जुडे। अभिभावकों का सहयोग भी रहा। पढना–लिखना सीखने की इस प्रक्रिया में कक्षा–कक्षीय और विषयवार ढर्रा गत प्रक्रिया को तोडकर काम करने के तरीकों ने बच्चों को विभिन्न तरीकों से प्रभावित किया–

पर्यावरण अध्ययन में करके सीखना

1) बच्चों को ऊब पैदा नहीं होती क्योंकि उन्हें पाठ्यक्रम के अनुरूप लेकिन अलग–अलग बाल केन्द्रित और रोचक गतिविधियों के माध्यम से सीखने के अवसर उपलब्ध हो रहे थे।

2) कक्षाओं से इतर बच्चों के एक ही समूह में अलग–अलग उम्र और शैक्षणिक स्तर के बच्चे एक साथ बैठकर अपनी रूचि के अनुसार सीख पा रहे थे।

3) शिक्षक और बच्चों की बैठक व्यवस्था समान थी यानि सभी बच्चे और शिक्षक मिलकर फर्श पर गोला बनाकर बैठते और अपने कार्यों को आगे बढाते थे जिसका बड़ा असर यह देखने को मिला कि बच्चों और शिक्षकों के रिश्ते में सहजता आयी।

4) इन सबसे अलग शिक्षक की भूमिका थी जिसमें शिक्षक के पास दिन भर किये जाने वाले कार्यों की कार्य योजना होती थी लेकिन जब शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर दिन की शुरुआत करते थे तो इस कार्ययोजना को लेकर बच्चों के साथ चर्चा करते, किस कार्य को किस तरह से करना है इसे बच्चे और शिक्षक मिलकर तय करते सभी बच्चों को अपना–अपना मत रखने की पूरी स्वतंत्रता होती और इस तरह से शिक्षक द्वारा बच्चों पर थोपा गया कार्य नहीं होता वरन बच्चों की रूचि का अनुसार कार्यों को तय किया जाता था। प्रतिदिन का कार्यक्रम तय किया जाता था इससे बच्चों का पूर्ण सहयोग मिलता था।

3.24 सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को मिली गति –

प्रदीप सिंह राठौर

सकारात्मक सोच हमेशा अवसर दिखाती है। महामारी के दौर में जब सभी लोग अपने–अपने घरों में थे, शिक्षक बच्चों के घरों तक पहुँच रहे थे। नए–नए माध्यमों के साथ बच्चों के सीखने–सिखाने के कार्य प्रगति कर रहे थे। हर दिन शिक्षक कुछ नए अनुभवों के साथ होते थे।

कोरोना संकट के समय इस विश्व व्यापी आपदा का प्रभाव भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व की प्रत्येक गतिविधि पर व्यापक रूप से पड़ा और हर क्षेत्र में इसके हानिकारक से हानिकारक परिणाम देखने को मिले।

सीखने के दौरान बच्चों का आपसी रिश्ता

यदि हम लॉकडाउन की चर्चा करें तो लम्बी अवधि के लिए समस्त प्रकार की गतिविधियाँ पूरी तरह से बंद करनी पडीं और इसका बहुत ही बुरा असर हमारी शिक्षा व्यवस्था पर भी पड़ा शैक्षिक संस्थानों में सभी प्रकार की सामान्य रूप से चलने वाली शैक्षणिक प्रक्रियाओं को दीर्घकाल के लिए बंद करना पड़ा जिसके कारण नियमित रूप से पढने वाले विद्यार्थियों के पूरे के पूरे सत्र प्रभावित हो गए नियमित शिक्षण के अभाव में मूल्यांकन कार्य को भी रोकना पड़ा।

भारत में इसके विकल्प के रूप में ऑनलाइन माध्यम से शिक्षण सुविधा विद्यार्थियों तक पहुँचाने की तकनीक पर कार्य शुरू हुआ जिससे एक सीमा तक शिक्षण सामग्री बच्चों तक मोबाइल, टी वी, रेडियो इन्टरनेट के माध्यम से पहुंचाई जाने लगी और मूल्यांकन भी होने लगे।

शिक्षकों ने भी इस तकनीक को काम में लेते हुए स्वयं भी अपने छात्रों के कक्षा स्तर के अनुरूप शिक्षण सामग्री का निर्माण करना प्रारंभ किया और विभिन्न माध्यमों द्वारा, अपने विद्यार्थियों तक सामग्री पहुँचाना सुनिश्चित किया।

RSCERT उदयपुर द्वारा शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण सामग्री निर्माण कर प्रस्तुत करने के मंच प्रदान किये गए। जिसमे विभिन्न कक्षाओं की विषयगत सामग्री नियमित रूप से शिक्षा दर्शन के माध्यम से एवं मोबाइल के द्वारा पूरे राज्य भर के विद्यार्थियों तक पहुँच हो सकी और शिक्षक, अभिभावक व विद्यार्थियों ने इस कार्य में पूरी सक्रियता से सहभागिता निभाई। इस सन्दर्भ में राजकीय, उच्च माध्यमिक विद्यालय बांसवाडा भी विविध प्रकार की गतिविधियों नवाचारी तकनीकों एवं प्रभावी कंटेंट व शिक्षकों के लिए बुनियादी साक्षरता पर सरल शिक्षण सामग्री पर बहुत प्रभावी कार्य किया गया। कोरोना संकट में जब पूर्ण रूप से लॉकडाउन रहा उस अवधि में श्री प्रदीप सिंह राठौड़ RSCERT के शिक्षा दर्शन चौनल के लिए ''कठपुतली द्वारा कहानी प्रदर्शन'' प्राथमिक शिक्षा के लिए किया। कक्षा 5 की हिन्दी भाषा की पुस्तक से कहानी ''मेहनत की कमाई'' को घर पर ही 39 मिनिट के विडियो के रूप में यू ट्यूब चौनल के लिए बनाया इसे यू ट्यूब पर देखा जा सकता है।

कोरोना संकट का दौरान ही शिक्षकों द्वारा ''आओ घर से सीखें'' कार्यक्रम के तहत घरेलु सामान से शिक्षण सामग्री का निर्माण किया एवं ऑनलाइन और जूम मीटिंग के माध्यम से अन्य शिक्षकों को शिक्षण सामग्री निर्माण करने का प्रशिक्षण दिया।

आओ घर से सीखें 02 के अंतर्गत विद्यार्थियों को घर पर ही साप्ताहिक सम्पर्क द्वारा शिक्षण कार्य/मूल्यांकन सुचारू रखना था तो उन्होंने एक और नवाचार करते हुए PEEO क्षेत्र के 12 गांवों में शिक्षण केंद्र स्थापित किये, जहाँ पर श्याम पट्ट एवं ग्रह कार्य संग्रहण पेटिका स्थापित की गयी जिससे साप्ताहिक सम्पर्क के समय शिक्षक द्वारा दिए गए ग्रह कार्य को अपनी सुविधा से संग्रहण पेटिका में डाल दें इस नवाचार का दूरदर्शन पर भी प्रसारण हुआ व तत्कालीन शिक्षा निदेशक सौरभ स्वामी द्वारा इसकी प्रशंसा भी की गयी।

प्रयास • द्वितीय चरण में फलदार और छायादार जैसे गुलमोहर, अमरूद, शीशम रोपेंगे

शिक्षक ने 5 दिन में बाइक से 190 पौधे शहर से 32 किमी दूर स्कूल पहुंचाए, तैयार की बगिया

शिक्षक के प्रयासों से हरियाली

शिक्षक पहल | स्मार्ट क्लास रूम भी उपलब्ध | राजस्थान पत्रिका 12 जनवरी 2022

रूपारेला में प्रोजेक्टर से हो रही लाल की पढ़ाई

पत्रिका सोशल प्राइड

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बांसवाड़ा/ ठीकरिया. जनजाति क्षेत्र बांसवाड़ा के ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक नवाचारों में विस्तार की दिशा में कदम बढ़ रहे हैं। शिक्षकों की पहल से विद्यालयों में प्रोजेक्टर से पढ़ाई के साथ ही स्मार्ट क्लास रूम विद्यार्थियों को उपलब्ध हो रहे हैं। ऐसा ही एक मामला जिला मुख्यालय से 32 किलोमीटर स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रूपारेल पीईईओ ठाकरिया में सामने आया है।

राउप्रावि रूपारेला में प्रोजेक्टर के माध्यम से अध्ययन करते हुए विद्यार्थी।

यहां एक उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक दिलीप कुमार प्रजापति ने सरकारी स्कूल के क्लासरूम को स्मार्ट क्लास में बदल दिया। वह भी बिना किसी सरकारी मदद के। इसका पूरा खर्च उन्होंने अपने वेतन से वहन किया। उनका मकसद बच्चों को बेहतर शिक्षा देना है और इसी के लिए उन्होंने यह कदम उठाया है।

ऐसे की पहल

शिक्षक प्रजापति को यह स्मार्ट क्लास शुरू करने का ख्याल तब आया जब उन्होंने महसूस किया कि बच्चों को पढ़ाई के दौरान कुछ समझने में परेशानी आती है। इसलिए प्रोजेक्टर से पढ़ाना शुरू किया। उसका नतीजा हुआ कि बच्चे अब बहुत आनंद से स्कूल पहुंचकर पढ़ाई कर रहे हैं। स्मार्ट क्लास के जरिये पढ़ाई करने में भी काफी मदद मिलने लगी। शिक्षक ने बताया कि स्कूल को हाईटेक कर बच्चों को बेहतर शिक्षा देने के लिए पूरी तरह समर्पण के साथ काम किया जा रहा है। उनकी ख्वाहिश है कि देश का हर बच्चा आधुनिक तकनीक के माध्यम से भी शिक्षा प्राप्त करे।

शिक्षक का विद्यार्थी हित में प्रयास बाँसवाड़ा पत्रिका 07/06/2021

कोरोना काल में भी कराया नियमित अध्ययन

पत्रिका सोशल प्राइड

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बांसवाड़ा. कोरोना संक्रमण काल में विद्यालय बंद होने के बाद भी माध्यमिक स्तर की परीक्षा और विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए एक शिक्षक ने नियमित बच्चों को अध्ययन कराकर पाठ्यक्रम पूरा कराया।

बच्चों को पढ़ाते शिक्षक प्रजापति।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, रूपारेल में पदस्थापित शिक्षक दिलीप प्रजापति ने कोरोना महामारी में भी अपने गांव के और आसपास के इलाकों के दसवीं कक्षा के बच्चों को नियमित अध्ययन कराया। दसवीं बोर्ड की परीक्षा के लिए गणित का संपूर्ण पाठ्यक्रम जनवरी से अप्रैल के बीच विकट परिस्थितियों में पूर्ण कराया। इसके लिए उन्होंने प्रतिदिन विद्यालय समय के बाद दो घंटे बच्चों को गणित के सवालों को हल करवाया और अभ्यास करवाया। उन्होंने बताया कि स्वविवेक से प्रत्येक विद्यार्थी तक जाकर उसे भविष्य की परीक्षाओं के लिए मानसिक रूप से तैयार करने का दायित्व शिक्षक का होता है और उन्होंने इसे निभाया। सभी बच्चों का पाठ्यक्रम पूरा कर व्यक्तिगत स्तर पर परीक्षा भी करवाई।

सोनिया डिण्डोर

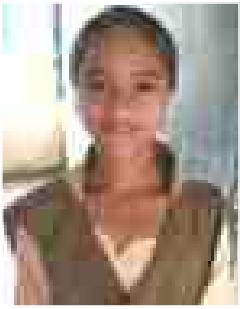

लॉकडाउन के समय हमारे घर पर ही स्कूल लगती थी सबने मिलकर 15 अगस्त भी मेरे घर पर ही मनाया। गाँव में घूम–घूमकर हर घर पर सात लगाया खूब सारी कहानियों की किताबें पढीं, कवितायँ बोली गाँव के सामानों पर उनके नाम लिखे जैसे हैंडपंप पर हैंडपंप का।

बनू डिण्डोर

कोरोना के समय सर हमें हमारे घर पर ही पढ़ाने आये अपने साथ लाइब्रेरी की पुस्तकें लाते थे हमने कहानियाँ व कवितायें पढीं। सर अपने साथ अलग–अलग तरह के चार्ट भी बना कर लाते थे जिनसे हमने पढना सीखा। हम सब बच्चे और सर मिलकर क्रिकेट, कंचे आदि कई तरह के खेल भी खेलते थे। घर पर रखकर भी हम पढना लिखना सीख सके जिसमें बहुत मजा आया।

वासु

कोरोना के समय पुस्तकों से हम घर पर ही पढ़ते थे सर के साथ मिलकर गाँव में अलग–अलग जगहों पर बोर्ड बनाये। घर–घर जाकर अलग–अलग तरह के सर्वे किये और मास्क बनाकर गाँव में लोगों को समझाया भी था कि मास्क लगाना क्यों जरूरी है और कोरोना के बारे में भी समझा और समझाया था।

लोकेश

गणित को खेल–खेल में सीखा, गाने गाये तीलियों और कंकडों से गिन–गिनकर गिनना सीखा, जोड़ और घटाना सीखा। डोरी बाँधकर उसमे लगे मोतियों को गिना। कंकडों को गिनने से पहले अलग–अलग रंगों से रंगने का कार्य किया था और अलग–अलग रंगों में रेंज कंकडों को गिनना भी सीखा था। सर के साथ अलग–अलग बच्चों के घर गए कहानियों और कविताओं के बने हुए चार्ट गाँवों में अलग–अलग जगहों पर लगाये और पढ़े भी थे।

वीरेन्द्र डिण्डोर

कोरोना काल में मैडम हमारे घर पर ही हमे पढ़ाने के लिए आती थीं और गणित में जोड़, बाकी, गुणा और भाग करना सिखाते थे हमको अलग–अलग तरीकों से गणित पढ़ते थे जैसे कभी कंकडों से कभी तीलियों के बंडल बनाकर हमने मोती माला की मदद से गिनना भी सीखा था। इस दौर में मैडम हमको अलग–अलग और नई नई कहानियाँ भी सुनाते थे और पुस्तकालय की रंग बिरंगी पुस्तकों की मदद से पढने में बहुत मजा आता था।

राहुल

कोरोना काल में गणित विषय को गतिविधियों के साथ जैसे तीली के बंडल ,मोती–माला आदि से सीखा पहले गणित पढना अच्छा नहीं लगता था मगर खेल और गतिविधियों से पढने के बाद से गणित में ठीक से समझ में आने लगा व पढने का मन भी करता है। मैडम ने हमारे घर पर ही काला बोर्ड लगा दिया था मैडम के पढ़ाकर जाने के बाद भी हम इस बोर्ड पर लिख–लिखकर पढ़ते थे। इस दौरान बहुत सारी और कहानियाँ सुनी, पढ़ी और अपने–अपने पोर्टफोलियो भी बनाये थे।

अंजलि

कोरोनाकाल में विद्यालय से दोनों अध्यापिकाएँ हमारे घर पढ़ाने आती थीं। अलग–अलग तरह की कहानियाँ हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में सुनना बहुत अच्छा लगता था। कई कहानियों पर हम बच्चों ने मिलकर नाटक तैयार किये और गाँव में अलग–अलग जगहों पर प्रस्तुती भी दी गयी जिनको देखकर हमारे परिवार के लोग भी खुश होते थे। मैडम के साथ इस दौरान कई सारी कवितायेँ भी हाव–भाव के साथ सीख लीं। मैडम जब अंग्रेजी में 2–3 अल्फाबेट से बनने वाले अंग्रेजी भाषा के शब्द सिखाती थीं तो कार्ड से सिखाती थीं वो मैंने ठीक से सीख लिया और मुझे आज भी याद है। इसके अलावा अलग–अलग टॉपिक पर चर्चा करना, खेल खेलना सभी कार्यों में अच्छा लगता था।

विशाल

कोरोना के समय जब सर हम बच्चों को घर पर पढ़ाने आते थे तो और हम सब मिलकर बहुत सारे खेल खेलते थे तब मुझे बहुत अच्छा लगता था।

मेहुल

सर ने हमारे घरों के आस–पास बहुत सारे और अलग–अलग तरह के चार्ट लगाये और हम इन चार्टों की मदद से तब भी पढ़ते थे जब सर गाँव में नहीं होते थे। अलग–अलग तरह की कहानियाँ सुनी और सुनाई और कहानियों के साथ–साथ चित्र बनाने का कार्य भी किया था। उस समय ये सभी कार्य करके मुझे बहुत अच्छा लगता था।

05 निष्कर्ष एवं अनुशंषायें –

शिक्षक साथियों द्वारा योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ते हुए जिन नए–नए कार्यों को किया गया है उनसे बच्चों का सीखना और प्रगति भी सुनिश्चित हो सकी है और यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इन प्रक्रियाओं को कोई भी शिक्षक किसी भी समय अपनी शैक्षणिक योजना का हिस्सा बना सकता है। प्रस्तुत संकलन में शिक्षकों के द्वारा किये गए नवाचारों के परिणामस्वरूप निम्न निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं –

✦ पुस्तकालय –

- पुस्तकालय के माध्यम से सीखने का माहौल बनाया जा सकता है जिससे बच्चों का सीखना आनंदकर होता है, लिखना–पढना सीखना आसान और रुचिकर बनता है, सीखा हुआ बच्चों के अनुभवों में शामिल हो जाता है। जब बात बच्चों को सिखाने की आती है तो अपेक्षा शिक्षक से की जाती है कि वह सीखने का माहौल उपलब्ध करवाए। शिक्षक इस तरह का माहौल उपलब्ध करवा सके इसके लिए उसे भी निरंतर और नया सीखना जरूरी है तभी वो सजगता और जीवन्तता के साथ बच्चों के लिए एक सीखने वाला माहौल बना सकेगा इसलिए पुस्तकालय इस रूप में भी जरूरी हो जाता है कि शिक्षक के लिए एक पर्याप्त मात्रा में शैक्षणिक सामग्री या शिक्षक पुस्तकालय उपलब्ध हो सके जहाँ पर शिक्षक शैक्षणिक सामग्री का उपयोग करते हुए स्वयं अपनी भी क्षमतावर्धन कर सके और सामूहिक रूप से शिक्षक मंच बनाकर वैचारिक विमर्श करते हुए एक दूसरे शिक्षक साथी के साथ ज्ञान और समझ का आदान प्रदान कर सके।
- भाषा अन्य विषयों को सीखने के माध्यम के रूप में हैय भाषा को सीखना और समझना सबसे आवश्यक है जिसे अलग–अलग व रोचक तरीकों से सीखा जा सकता है, मातृभाषा इसमें सहायक सिद्ध हो सकती है।

✦ समुदाय के साथ मिलकर –

- समुदाय के साथ मिलकर विद्यालय जब बच्चों के सीखने–सिखाने की गतिविधियों का आयोजन करता है तो बेहतर रिश्तों के साथ सामंजस्य स्थापित हो सकता है और बच्चों के सर्वांगीण विकास की अहम् आवश्यकता है। शिक्षकों द्वारा किये गए प्रयासों के तहत समुदाय में लोग इस पशोपेश की स्थिति में थे कि बच्चों की शिक्षा को लेकर क्या होगा अर्थात इसे एक तरह की मानसिक पीड़ा या मनोवैज्ञानिक दबाव की स्थिति कहा जा सकता है, शिक्षक इस दौर को अलग तरह से ही झेल रहे थे, शिक्षकों द्वारा किये गए प्रयासों के तहत समुदाय, परिवार और माता–पिता के साथ मिलकर लगातार बातचीत, सहयोग से सीधा और सकारात्मक असर बच्चों के सीखने पर देखा गया है बच्चों के साथ सीखने–सिखाने की होने वाली प्रक्रियाएं उनके घरों या घरों के आस–पास के स्थानों पर हो रही थीं जो कि उनकी सकारात्मक सोच को बढ़ा रहे थे।
- शिक्षा का व्यापक उद्धेश्य व्यक्ति के चिंतनशील व्यक्तित्व विकास के साथ शारीरिक, मानसिकध्बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को संबल देना, प्रस्तुत संकलन को अगर इस नजरिए से देखें तो शिक्षकों द्वारा अपनाई गयी प्रक्रियाएँ बच्चों के हर आयाम का विकास करने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

- सभी विषयों की अपनी प्रकृति होती है शिक्षक के लिए यह जरूरी है कि विषय की प्रकृति के अनुरूप बच्चों के साथ शिक्षण कार्य तय करे और उसी अनुसार कार्य निष्पादित भी किये जाएँ।
- शिक्षक बच्चों के सर्वांगीण विकास के क्रम में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति सोचे समझे तरीके से कार्य की योजनायें बनाना और योजनानुरूप तैयारी करने के कार्यों में अपना समय और ऊर्जा अधिक दे सके जिसके परिणाम निश्चित ही बेहतर होते हैं।

महामारी के दौर में जनजातिय क्षेत्र जैसे दुर्गम क्षेत्र में शिक्षकों द्वारा किये गए नवाचार जो इस सोच को विस्तार देते हुए प्रतीत होते हैं कि जो कार्य, जो अभ्यास महामारी जैसे अकल्पनीय और कठिन दौर में बच्चों के विचार, भावनाओं और क्षमताओं को बनाये रखने की संभावनाओं से भरे और सकारात्मक परिणाम देते हुए हो सकते हैं ताकि बच्चों के समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सके तो इन प्रयासों को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाकर अगर शिक्षक अपने शिक्षण अभ्यासों के तहत शामिल करेंगे तो निश्चित ही बेहतर परिणाम मिल सकेंगे। सिर्फ आवश्यकता है तो– शिक्षकों के समर्पण, धैर्य, समानुभूति, निर्णय लेने के संतुलित तरीकों को बनाने की और इससे भी कहीं अधिक इंसान के रूप में सामाजिक और मानवीय प्रयासों के तहत सामाजिक जिम्मेदारी के निर्वहन की। ऐसे ही प्रयास जब जनजातिय क्षेत्र में होते हुए समुदाय के लोगों ने देखे तो इन लोगों को भी महसूस हुआ कि विरले प्रयास जो कि शिक्षक बच्चों के लिए कर रहे हैं इन्हें अगर शब्दों में पिरोने का प्रयास हो सके तो इसकी सार्थकता अत्यधिक हो सकेगी। आने वाले समय के लिए शिक्षक समूह को एक विरासत देता हुआ यह संकलन बहुत कुछ कहते हुए भी बहुत कुछ और भी कह सकता है। जनजातिय क्षेत्र के समुदाय की अंतःप्रेरणा से प्रेरित और साक्षी के रूप में यह संकलन बच्चों के विकास में शिक्षा जगत के लिए एक बेहतर दस्तावेज के रूप में हो सकेगा।

''हम पंछी एक डाल के'' (नवाचार के प्रयास में शामिल शिक्षक समूह)

VAAGDHARA

मुख्य कार्यालय :

गांव व पोस्ट कुपड़ा, जिला बांसवाड़ा, राजस्थान (भारत)

फोन : 9414082643, ई-मेल : vaagdhara@gmail.com

वेबसाईट : www.vaagdhara.org

समन्वय कार्यालय :

प्लॉट नं. 37, शिव शक्ति नगर, गौतम मार्ग, किंग्स रोड़ के पास,

निर्माण नगर, जयपुर, राजस्थान - 302018

फोन : 9829823424

https://www.facebook.com/VAAGDHARA.NGO

https://twitter.com/Vaagdhara

https://www.linkedin.com/in/vaagdhara-non-profit-organization-6063851bb/

https://www.instagram.com/vaagdhara/